सपनों की रानी

[मौलिक सामाजिक उपन्यास]

लेखक
कमल शुक्ल

प्रकाशक
सरस साहित्य सदन
८८२, गली बेरीवाली
बाजार सीताराम
दिल्ली-६

प्रकाशक
सरस साहित्य सदन,
८८२, गली बेरीवाली,
बाजार सीताराम,
दिल्ली-६

प्रथम संस्करण : १९७०

मूल्य : पाँच रुपये पचास पैसे

मुद्रक
वीर कम्पोजिंग एजेन्सी,
द्वारा वेंगार्ड प्रेस, दिल्ली-६

"ऐं! आशा बिस्तर पर नहीं है! भला इस समय कहाँ गई होगी ?"

सोते-सोते सहसा दिनेश की आँख खुल गई और आशा को बिस्तर पर न देख,उसके मुँह से उपरोक्त शब्द निकल गये। वह चौंक कर उठ बैठा। उस ने मेज पर रक्खी टाइमपीस पर दृष्टि डाली। वह बारह बजा रही थी।

दिनेश ने कुछ देर तक आशा की प्रतीक्षा की। फिर पलंग से उठ कर खड़ा हो गया। खिड़की के पास आ, उस ने बाहर की ओर झाँका। कोठी के लान मे घना अंधेरा व्याप्त हो रहा था। सन्नाटा साँय-साँय कर रहा था। मेनरोड पर बिजली के पोलों का हलका पीला प्रकाश फैल रहा था।

अचानक दिनेश चौंक गया। वह आश्चर्य-चकित हो, उस सफेद वस्तु को देखने लगा, जो अंधकार को चीरती हुई तेजी से कोठी के प्रवेश-द्वार से निकल कर पोर्टिको को पार कर रही थी। उस ने दृष्टि गड़ाई, तो उसे वह एक स्त्री प्रतीत हुई।

दिनेश के मन में किसी ने अस्पष्ट स्वर में कहा—"यह आशा के सिवा कोई और नहीं हो सकती।"

दिनेश को अधिक नही सोचना पड़ा। उस के कदम अपने आप आगे बढ़ गये।

वह जब सीढ़ियाँ उतर कर पोर्टिको में आया, तो उसे सामने से एक टैक्सी स्टार्ट हो कर जाती हुई दिखलाई दी। गैरिज से कार निकालने का समय नही था। वह तेजी से सड़क पर आया और एक स्कूटर को हाथ दे कर रोका।

"कहाँ चलना है, साहब ?"

दिनेश जल्दी से उस पर सवार हुआ और व्यस्त स्वर में बोला—"वह जो सामने टैक्सी जा रही है, उस का पीछा करो। जल्दी, प्लीज—।"

स्कूटर ने तेजी से टैक्सी का पीछा किया। कुछ ही देर में मूनलाइट क्लब के सामने जा कर टैक्सी रुक गई। तभी उस से कुछ ही पीछे स्कूटर रुका।

दिनेश ने टैक्सी से उतर कर क्लब के भीतर जाती हुई आशा को वहाँ काफी रोशनी होने के कारण भली भाँति पहचान लिया। उस ने दस रुपये का एक नोट स्कूटर-चालक को दिया और बोला—"कुछ देर मेरा इन्तजार करो। शीघ्र ही मुझे वापस भी चलना है।"

स्कूटर-चालक ने हाँ-द्योतक सिर हिलाया। दिनेश ने क्लब में प्रवेश किया। उस ने आशा को एक केबिन में घुसते देखा। वह भी उस के बगल वाले केबिन मे जा पहुँचा।

बैरे को आर्डर दे, उस ने बीच के पार्टीशन के पास जा कर उस ओर झाँकने की कोशिश की; लेकिन सफल नहीं हो पाया। उस के कानों में आशा का स्वर गूँजा—"मैं रहम की भीख

मांगती हूँ, बहन ! मेरा घर न उजाड़ो। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूँगी।"

दिनेश की समझ में नही आया कि आशा ऐसा क्यों कह रही है । तभी उस ने सुना, कोई अपरिचित स्त्री-कंठ कह रहा था—"आशा! अगर तुम्हे इतना ही अपने घर का खयाल था, तो ये तीन हजार रुपये क्यो लाई हो,जबकि मेरी माँग पाँच हजार रुपये की थी। काजल की कोठरी मे जाकर कोई भी बिना दामन मे दाग लगाये नही लौटता। फिर तुम ने तो ऐसा काम किया है कि सभी तुम पर थूकेंगे। मुझे पूरे पाँच हजार रुपये चाहिए, वर्ना कल सुबह मेरी जबान खुल जायेगी। समझ गईं, मिसेज दिनेश ?"

उत्तर मे दिनेश को आशा की सिसकियाँ सुनाई दी, साथ ही भर्राया हुआ स्वर—"ईश्वर मुझे मौत भी नही देता ! मैं मर जाना चाहती हूँ। मेरे पास और नकद रुपये नही हैं।"

"तो ये लाकेट ही उतार कर दे दीजिए मुझे ! आप को भला क्या कमी है। आप तो लखपति की बीवी हैं।"

उत्तर में दिनेश को फिर कुछ नही सुनने को मिला। उस का जी चाहा कि वह उस केबिन में पहुँच जाए और उस स्त्री को खूब जलील करे, जो आशा को ब्लेकमेल कर रही थी; लेकिन अवसर के औचित्य का ध्यान रख कर वह केबिन से बाहर निकल आया। बैरा अभी वापस नही लौटा था।

दिनेश जब कोठी पहुँचा तो सीधा जा कर बिस्तर पर लेट गया। वह आशा के विषय में सोचने लगा।

करीब बीस मिनट बाद आशा ने कमरे मे प्रवेश किया।

दिनेश ने उसे देखते ही नेत्र मूंद लिये और सोने का उपक्रम करने लगा।

आशा विस्तर पर आ कर लेट गई। दिनेश ने पलकों की कोर से देखा, लाकेट आशा के गले में था।

× × × ×

दिनेश के पिता की मृत्यु कई वर्ष पहले हो चुकी थी। कोठी में उस की माँ राधा के अलावा कई नौकर-नौकरानियाँ थे।

पति की मृत्यु के बाद राधा का सारा ध्यान दिनेश पर केन्द्रित हो गया था। वह शादी के लिए उसे बहुत जोर देती, लेकिन वह दिन-रात अपने कपड़े के कारोबार में व्यस्त रहता।

अचानक एक दिन राधा चौंक गई, जब दिनेश अपने साथ एक अनिंद्य सुन्दरी युवती को घर लाया। उस ने आ कर राधा के चरण-स्पर्श किये। यह आशा थी। राधा ने दोनों का ब्याह करना मंजूर कर लिया; हालांकि राधा गरीब थी और बेसहारा।

राधा ने पुत्र की खुशी के लिए धन-दौलत और कुल की ओर ध्यान नहीं दिया। उस के लिए यही बड़ी खुशी की बात थी कि दिनेश ब्याह के लिए राजी हो गया।

राधा को पुत्रवधू ने उसे कभी शिकायत का मौका नहीं दिया!

आज राधा बहुत प्रसन्न थी। उठते ही उसने शीतल जल से स्नान किया और फिर पहुँच गई अपने राधाकृष्ण के

कमरे में।

यह राधाकृष्ण की अनन्य उपासिका थी। वह नित्य प्रातः राधाकृष्ण की मूर्तियों को स्नान कराती; फिर रामायण का पाठ करती।

तभी आशा ने पूजा के कमरे में प्रवेश किया। वह स्नान करके आयी थी। उस के खुले बालों से जल की बूंदें टपक रही थी। वह राधा के पास जा कर बैठ गई और आँखें मूंद ली। तभी उस के कानों मे राधा का स्वर पड़ा। वह कह रही थी—"ले बहू! प्रसाद ले।"

आशा ने प्रसाद का लड्डू हाथ मे ले लिया। फिर माँ के पैर छू, कमरे से बाहर आ गई और दिनेश के पास चल दी।

दिनेश अभी तक सो रहा था। आशा ने उस के मुँह पर पानी छिड़क दिया। वह हड़बड़ा कर उठ बैठा और आशा की ओर देखने लगा, जो समीप ही खड़ी, मन्द-मन्द मुस्करा रही थी।

दिनेश को फौरन रात की घटना याद आ गई। तभी आशा बोली—"उठिये! आप तो अभी तक लेटे है। माँजी प्रसाद ले कर आ रही है। मैं—।"

अभी आशा की बात पूरी भी नही हो पाई थी कि राधा ने कमरे मे प्रवेश किया। उस के एक हाथ मे लड्डुओ की थाली था। उसने वह मेज पर रख दी। फिर दिनेश के बालो पर हाथ फेरती हुई बोली—"बेटा इतनी देर से नही उठा करते। इस से तन्दुरुस्ती खराब होती है। मैं तेरे लिए प्रसाद लाई हूँ।"

दिनेश उठ कर बाथरूम की ओर चल दिया। तभी कमरे में चम्पा ने प्रवेश किया। वह आते ही राधा से बोली—"मालकिन

पुरोहितजी आये है। मैं ने उन्हें नीचे ड्राइंगरूम में बैठा दिया है।"

"अच्छा, मैं आ रही हूँ, तू चल।"

चम्पा बाहर निकल गई। वह जब सीढ़ियाँ उतर रही थी, तभी नीचे से घर का नौकर भोला ऊपर आ रहा था। उस ने जब चम्पा को देखा, तो हाथ बढ़ा कर उस की राह रोकता हुआ बोला—"अरी चम्पा! आज तू बहुत खुश है। क्या तेरा ब्याह कहीं पक्का हो गया?"

चम्पा अत्यन्त स्थूलकाय श्यामवर्णा युवती थी। ब्याह उस की सब से बड़ी कमजोरी थी। कुरूप होने के कारण कोई भी उससे ब्याह करने के लिए राजी नहीं होता था। वह अपनी माँ की अकेली पुत्री थी। पिछले वर्ष माँ का देहान्त हो जाने से नौकरों के एक कमरे में अकेली रहती थी। भोला अक्सर उसे ब्याह की बात को ले कर चिढ़ाया करता।

चम्पा ने भोला की ओर एक बार गुस्से से देखा; फिर उसके कन्धे पर हाथ पटकती हुई बोली—"क्यों रे भोला! आज फिर तू ने मुझे छेड़ा। अगर मेरे ब्याह का तुझे इतना ही खयाल है, तो तू ही क्यों नहीं मेरे साथ शादी कर लेता है? मैं बहुत सुन्दर हूँ। अभी तू ने मुझे सिंगार किये हुए नहीं देखा है, नहीं तो—।"

भोला जोर से हँस पड़ा और बोला—"तो तेरा मतलब है कि मैं तेरा सिंगार देख कर मोह जाऊंगा। तू तो साक्षात् सूर्पनखा लगती है।"

चम्पा चौंक गई। कुछ देर सोचने के बाद बोली—"ये सूर्पनखा कौन है भला! तू ने मेरी उस से बराबरी की है।

बहुत ही सुन्दर औरत होगी वह। बता दे, वह कौन है ?"

"चम्पा ! सूपंनखा का मतलब तू माँजी से पूछ लेना। मुझे जाने दे। मैं—।"

"नहीं भोला ! तू अपने नाम की तरह भोला नहीं है। बता दे ना ?"

चम्पा ने भोला के दोनों कन्धे पकड़ कर जोर से हिला दिये। वह दर्द से चीखता हुआ बोला—"छोड़ दे चम्पा ! मेरा कन्धा छोड़ दे।"

"नहीं, पहले बता, यह सूपंनखा कौन है ?"

तभी ऊपर से राधा की आवाज सुनाई दी। वह दोनों के पास आ, चम्पा की पीठ पर धौल जमाती हुई बोली—"क्यों री चम्पा, तू फिर भोला को परेशान कर रही है ?"

चम्पा ने भोला को छोड़ दिया। छूटते ही भोला बोला—"माँजी ! यह चम्पा मुझे अक्सर परेशान किया करती है।"

राधा भोला की पूरी बात सुने बिना जीना उतर गई। वह पुरोहितजी के पास जा कर राधाकृष्ण का जन्मदिन मनाने के विषय में बात करने लगी।

कुछ देर बाद जब पुरोहितजी कोठी से जाने लगे, तो बाहर उन्हें चम्पा मिली। वह उन्हें देखते ही पैर छूने को लपकी। पुरोहित जी "अरे, अरे !" कहते हुए पीछे हटे। वे कह रहे थे—"मुझे छूना मत, चम्पा ! नहीं—।"

पुरोहित जी कहते ही रह गये और चम्पा पुरोहित जी के चरणों को पकड़ कर लेट गई। फिर अपना सिर उन पर रखती हुई बोली—"मैं दण्डवत करती हूँ, पंडित जी ! मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मेरा ब्याह जल्दी हो जाए। मैं—।"

"अरे ! मेरे पैर तो छोड़ । तूने मुझे छू ही लिया । अब मुझे घर जा कर स्नान करना पड़ेगा ।"

चम्पा उठ कर खड़ी हो गई और अपने बड़े-बड़े दाँत बाहर कर के हँसती हुई कहने लगी—"पंडित जी ! आप के पैर छू कर मुझे तो पुन्य मिल गया ! आप को क्या तकलीफ है? गरमी के दिन हैं। आराम से जा कर ठंडे पानी से नहाना । हाँ, मेरी बात का जवाब तो दीजिए । मेरे लिए कोई लड़का देखा या नहीं ?"

पुरोहितजी जब भी कोठी आते, चम्पा उन्हें परेशान कर देती । वे मन-ही-मन उसे कोसते हुए बोले—"मैंने एक लड़का देखा है। वह—।"

"अरे वाह ! अगर तुम मेरा ब्याह करवा दो,पुरोहित जी ! तो मैं रोज तुम्हारी पूजा करूं।"

पुरोहितजी उसे सान्त्वना देते हुए वहाँ से चले गये। चम्पा भी आशा को नाश्ते के लिए बुलाने चल दी।

दस बजे दिनेश आफिस चला गया। राधा भोजन कर के बिस्तर पर लेटी थी । उस के पास आशा भी थी। चम्पा ने वहाँ प्रवेश किया। वह जा कर राधा के पैर दाबने लगी।

आशा ने एक बार उस की ओर देखा। फिर राधा से बोली—"माँजी ! चम्पा का आप ब्याह क्यों नहीं कर देती ?"

राधा मुस्करा। लगी। फिर धीरे से कहने लगी—"बहू ! मैं तो जाने कब से इस कोशिश में हूँ, लेकिन—।"

राधा कुछ सोचने लगी । तभी चम्पा ने पैर दाबने छोड़ दिये और सिर नीचा करके शर्माते हुए बोली—"माँजी ! आप अब चिन्ता न करिये । दो लड़के मेरी नजर में हैं।

मैं—।"

चम्पा की यह बात सुन, आशा जोर से हँस पड़ी और बोली—"तू अपनी शादी की बातें खुद करती है। तुझे शर्म नहीं लगती ?"

राधा भी हँस रही थी। चम्पा ने एक बार आशा की ओर देखा। फिर धीरे से बोली—"बहूरानी ! शर्म तो बहुत आती है, लेकिन क्या उस के कारण मैं ब्याह के लिए कोशिश न करूँ ! इतने साल तो इसी भरोसे पर बीत गये कि माँजी मुझे कहीं ब्याह ही देंगी।"

'चुप रह चम्पा ! तू बहुत बेशर्म है।"

राधा ने खीझ कर कहा। चम्पा फिर पैर दाबने लगी।

कुछ देर बाद चम्पा के हाथ फिर रुक गये। वह कुछ सोचती हुई धीरे से बोली—"माँजी ! यह सूर्पनखा कौन है ?"

"सूर्पनखा !"

राधा चौंक गई।

"हाँ, सूर्पनखा।"

"माँजी, यह रामायण वाली सूर्पनखा की बात कर रही है।"

आशा ने राधा को याद दिलाया। तभी चम्पा जल्दी-जल्दी कहने लगी—"क्यों बहूरानी ! कौन थी सूर्पनखा ? क्या वह बहुत सुन्दर थी ?"

अब राधा उठ कर बैठ गई और बोली—"तेरा सूर्पणखा से क्या सम्बन्ध है? चल कोई बात नहीं, ले सुन ! रामायण में लक्ष्मण और राम सीता के साथ जब वन गये तो वहाँ

एक भयानक राक्षसी राम से ब्याह करने को उतारू हो गई और—।"

चम्पा के चेहरे का रंग उड़ गया। वह बीच में ही बोल उठी—"तो क्या सूपनखा सुन्दर नहीं थी ?"

"तू सुन्दर की कहती है, वह तो काली, भयानक राक्षसी थी। उस के बड़े-बड़े दाँत थे और—।"

राधा की बात अधूरी रह रह गई। चम्पा उठ कर खड़ी हो गई। उस की आँखें आवेश से लाल हो गईं और नथुने फड़कने लगे। राधा और माधा उस की गति-विधि समझ नहीं पायी और वह कमरे से बाहर निकल गई।

चम्पा ने कई जगह देखा। उसे भोला कहीं नहीं मिला, तो वह रसोईघर में पहुँची। वहाँ भोला धुले बर्तन अलमारी में सजा रहा था। चम्पा को देखते ही उसने बाहर जाने की कोशिश की, लेकिन दरवाजे पर वह चट्टान बनी खड़ी थी। भोला ने उस से कहा—"मुझे बाहर जाने दे,चम्पा। भाभी ने बुलाया है।"

"हाँ-हाँ। जाने क्यों नहीं दूँगी! अरे चन्डाल! तू मुझे सूपंनखा कह रहा था। मैं तेरी एक-एक हड्डी तोड़ दूँगी।"

भोला ने भागने की बहुत कोशिश की, लेकिन चम्पा ने बाँयें हाथ से उस की गरदन पकड़ ली और घसीटती हुई भीतर ले गयी। फिर दूसरे हाथ में बेलन ले, उस से भोला की पीठ पर प्रहार करने लगी।

भोला दर्द से चीखने लगा। चम्पा ने उसे जमीन पर गिरा दिया और उस के गालों पर थप्पड़ लगाती हुई बोली—

"कमीने ! तू मुझे राक्षसी समझता है। मैं भी तेरा पीछा नहीं छोड़ूंगी। अरे नीच ! मैं तुझे जिन्दा नहीं छोड़ूंगी।"

भोला की चीख-पुकार सुन कर अन्य नौकर-नौकरानियों के अतिरिक्त आशा भी राधा के साथ वहां आ पहुँची।

वहां का दृश्य देख कर सब दंग रह गये। दूसरे नौकरों ने उन्हें छुड़ाया। भोला दर्द से कराह रहा था। उसके शरीर के कई हिस्सों से खून बह रहा था और दो नौकरानियां चम्पा को पकड़े खड़ी थी। वह छूटने की कोशिश करती हुई भोला को बुरा-भला कहे जा रही थी।

× × × ×

दिनेश का आज आफिस में मन नहीं लग रहा था। उस ने रिस्टवाच पर एक दृष्टि डाली। फिर कुर्सी से उठ कर खड़ा हो गया। लंच का टाइम हो रहा था। वह आफिस से बाहर आ कर कार स्टार्ट करने लगा।

घर पहुँचते ही दिनेश को ड्राइंगरूम में चम्पा मिली। उसने बताया कि बहूरानी अपने कमरे में किसी स्त्री के साथ बैठी बातें कर रही हैं।

दिनेश अपने कमरे में पहुँचा। उसके बगल में ही आशा का कमरा था। वह आराम कुर्सी पर लेट गया। उसने अपनी आँखें मूंद ली। तभी उस ने वही अपरिचित स्त्री-कण्ठ सुना, जिस के पास रात को आशा गई थी।

दिनेश उठ कर खड़ा हो गया। उस ने बीच के दरवाजे में थोड़ी सी झिरी कर के देखा।

आशा पलंग पर बैठी थी और उस के पास हो खड़ी थी एक अपरिचित युवती। उस के हाथ में बैग था। वह कह रही थी—"आशा! मुझ से दुश्मनी कर के तुम कभी सुखी नहीं रह सकती। मैं—।"

आशा ने निरीह हो, उस के दोनों हाथ पकड़ लिये और बोली—"बहन, मेरी इज्जत का कुछ तो खयाल करो! कहीं कोई सुन न ले। धीरे बोलो।"

"क्यों धीरे बोलूं! गुनाह तुम ने किया है। तुम धीरे बोलो! मैं तो चिल्ला-चिल्ला कर कहूंगी कि—।"

आशा ने उस युवती के मुंह पर हाथ रख दिया और आँसू बहाती हुई भीत स्वर में बोली—"नहीं बहन! चुप रहो। तुम जो कुछ भी मांगोगी। मैं देने को तैयार हूं।"

"तो फिर लाओ पाँच हजार रुपये। मैं गरीब हूं और जरूरतमन्द! तुम रईस घर की बहू हो। तुम्हारे लिए इतने रुपयों का कोई महत्व नहीं है। लाओ, देर न करो। मुझे जल्दी है।"

आशा गिड़गिड़ा कर कह रही थी—"मैं कहाँ से लाऊं रुपये? मैं चोरी नहीं कर सकती। मेरे पास रुपये नहीं हैं। और यह लाकेट मैं तुम को नहीं दे सकती। मैं—"

"तो मैं तुम से लाकेट नहीं माँगती! मेरे लिये तो अभी पाँच हजार ही बहुत हैं। तुम मुझे बेवकूफ बना रही हो! तिजोरी में देखो तो जा कर! बहुत रकम होगी! तुम बड़े घर की बहू हो। जल्दी से सब अधिकार अपने हाथ में करो। बोलो, क्या कहती हो मेरे लिए?"

आशा उठ कर खड़ी हो गई । उस ने कहा—"मैं सेफ से रुपये नहीं ला सकती । मुझे गलत काम करने में बहुत डर लगता है । मैं—।"

"अब तो डर लगेगा ही । पहले क्यों नहीं डरी थी, जब—।"

आशा ने उस युवती के मुंह पर पुनः हाथ रख दिया । फिर गले से लाकेट उतार कर बोली—"इसे मैं पांच हजार रुपये दे कर वापस ले लूंगी ।"

उस युवती ने जल्दी से लाकेट ले, बैग में रखा, फिर बोली—"कब?"

"कल रात को नौ बजे मैं होटल सम्राट में तुम्हारा इन्तजार करूंगी ।"

अब उस युवती ने जाने का आयोजन किया ।

दिनेश ने उस की सूरत भली भांति पहचान ली और वह कपड़े पहनने लगा । वह उस अपरिचिता के विषय में जानना चाहता था कि वह कौन है । उस ने आशा को किस चक्कर में डाल रखा है ।

दिनेश जब पोर्टिको में पहुंचा, तो उस ने उस युवती को एक टैक्सी में बैठे देखा । वह फौरन कार की अगली खिड़की खोल, ड्राइविंग सीट पर बैठ गया और गाड़ी स्टार्ट कर दी । वह उस टैक्सी का पीछा करने लगा, जिस में वह अपरिचिता थी ।

जिस समय दिनेश जा रहा था आशा खिड़की से खड़ी उसे देख रही थी । उस का दिल धक्-धक् कर रहा था कि शायद दिनेश ने हमारी बातें सुन ली।

दिनेश की कोठी छावनी क्षेत्र में थी। अब उस की कार खड़ी थी 'खय्याम होटल' के सामने। वह युवती अभी-अभी टैक्सी का बिल चुका कर भीतर गई थी।

दिनेश ने होटल के हाल में प्रवेश किया। दिन का तीसरा पहर था। सड़कों पर धूप इतनी तेज थी कि उस से बचने के लिए लोगों की एक भारी भीड़ हाल में थी। सभी के सामने शीतल पेय थे। यह स्थान वातानुकूलित था। आर्केस्ट्रा के मन्द स्वर गूंज रहे थे।

दिनेश ने एक बार हर तरफ निगाह फेरी। उसे वह युवती कहीं नजर नहीं आयी। वह आगे बढ़ा और हाल के बीचों-बीच एक मेज पर वह उसे अकेली बैठी दिखलायी दी। वह तेजी से उस ओर बढ़ा। उस ने देखा कि उस युवती का बैग मेजपर रखता था और वह देख रही थी एक कोने में।

दिनेश ने उस का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और बोला—"सुनिये, क्या मैं यहां बैठ सकता हूँ ?"

युवती ने सिर उठा कर दिनेश की ओर देखा। फौरन उस का चेहरा सफेद पड़ गया। लेकिन उस ने जल्दी ही अपनी स्थिति पर काबू पाया और जल्दी-जल्दी कहने लगी—"बैठिये-बैठिये। भला मुझे क्या एतराज हो सकता है।"

दिनेश उस के सामने बैठ गया और मुस्कराते हुए बोला—"शायद मैंने आप को पहले भी कहीं देखा है। आप—।"

युवती फौरन दिनेश की बात काट कर बोली—"लेकिन मैंने तो आप को पहले कभी और कहीं नहीं देखा। आप को गलतफहमी हुई। होगी कोई मेरे ही जैसी शक्ल की लड़की।"

"हां, यह हो सकता है।"

दिनेश ने यह कह कर बैरे को मार्टे स्क्वाश लाने को कहा। इस के बाद उस ने मेज पर रखा उस युवती का पर्स उठा लिया और उसे दोनों हाथों में ले गौर-पूर्वक देखता हुआ बोला—"यह पर्स कुछ अजीब किस्म का है। कहां से खरीदा है आप ने इसे? यह बहुत खूबसूरत है। मुझे भी उपहार देने के लिए खरीदना है। आप—।"

दिनेश ने यह कहते-कहते पर्स की चेन खोल दी। उस ने उसके भीतर हाथ डालने के लिए दृष्टि डाली ही थी, तब तक वह युवती उठ कर खड़ी हो गई और जबरदस्ती दिनेश के हाथों से पर्स लेती हुई कर्कश स्वर में बोली—"कैसे आदमी हैं आप? आप तो जरा भी संकोच नहीं करते। आप को किसी पराई लड़की का पर्स इस तरह नहीं खोलना चाहिए। इस में मेरी प्राइवेट चीजें है। रह गई प्रेजेन्ट देने की बात, तो उस के लिए आप को बाजार में एक-से-एक अच्छे पर्स मिल जायेंगे।"

युवती यह कह कर अपना कोल्डड्रिंक प्रयोग में लाने लगी। दिनेश ने भी अपना गिलास खाली कर दिया और युवती की ओर एक दृष्टि डालता हुआ सहज स्वर में बोला—"आपने मेरी बात का गलत अर्थ लगा लिया। मैं ने तो कोई बुरी बात नहीं की थी। शायद आप अभी अविवाहित है?"

युवती फिर झल्ला गई और मुंह बिगाड़ कर बोली—"यह आप क्यों पूछ रहे है? क्या मेरे साथ आप को शादी करनी है? देखिये मिस्टर! आप का जरूर कोई खास मतलब है। तभी आप मेरे साथ छेड़-छाड़ कर रहे हैं। मैं जाती हूं।"

युवती यह कहने के साथ उठ कर खड़ी हो गई।

दिनेश ने जब उस की यह गतिविधि देखी, तो वह भी उठ कर खड़ा हो गया और बोला—"आप को कहाँ तक जाना है ? मैं गाड़ी लाया हूँ ।"

युवती फिर कुरसी पर बैठ गई और क्षोभ-भरे स्वर में बोली—"आप तो शरीफ आदमी है, मिस्टर दिनेश ! आपको ये बातें शोभा नही देतीं । मैं—।"

"आप मेरा नाम कैसे जानती है ?" दिनेश ने अनजान बनते हुए उस से प्रश्न किया । युवती धीरे-धीरे मुस्कराते हुए बोली—"बड़े आदमियों के नाम छिपे नही रहते । आप का इतना बड़ा कारोबार है । कानपुर शहर में भला आप को कौन नही जानता ?"

"अच्छा तो आप मुझे पहले से ही जानती थी और जान-बूझ कर अनजान बन रही थी । भला ऐसा क्यों ?"

युवती कुछ झेंप गई । वह कुछ क्षण चुप रहने के बाद बोली—"अब मुझे देर हो रही है ।"

दिनेश ने कहा—"तो फिर चलिए !"

युवती उठ कर खड़ी हो गई । दिनेश ने उस का भी बिल चुकाया और बाहर आ, उस से बोला—"देखिए, संकोच मत करिये । मैं आपको छोड़ दूँगा । आइये, कहाँ तक जाना है ?"

युवती पहले तो कुछ झिझकी; फिर बोली—"जाना कहाँ है । पास ही तो मेस्टन रोड है । मुझे जाने दीजिए । नाहक आप तकलीफ करेंगे ।"

"नहीं, नहीं । आप को मेरे साथ चलना होगा । आखिर सभ्यता भी तो कोई चीज है ।"

युवती दिनेश के साथ आ कर अगली सीट पर बैठ गई। उस ने अपना पर्स गोद मे रख लिया था और सामने की ओर देखने लगी थी।

दिनेश ने कार स्टार्ट कर दी। उस ने युवती से कहा—"आप ने मुझे अपना नाम नही बतलाया।"

"मुझे गौरी कहते हैं।"

युवती ने धीरे से कहा। दिनेश तेज गति से कार चला रहा था। उस ने एक बार सिर घुमा कर पीछे की ओर देखा। सड़क पर सन्नाटा था। केवल दो-एक साइकिल-रिक्शे, आ रहे थे।

अचानक कार दाहिनी ओर घूमी। यह बड़ा चौराहा था। कार की गति तेज होने के कारण एक जोर का झटका लगा। गौरी का दाहिना कन्धा दिनेश से टकरा गया। उस का पर्स उछल कर दिनेश की गोद मे जा गिरा। उस ने उसे उठा कर फौरन बाहर फेंक दिया।

गौरी ने अपनी पलकें मूँद ली थी। उस ने आँखे खोली और दिनेश से बोली—"गाड़ी रोकिये। मेरा पर्स?"

दिनेश ने आगे बढ़,एक किनारे कार रोकते हुए कहा—"पर्स उछल कर सड़क पर जा गिरा था। मैं अभी लाता हूँ।"

दिनेश को जाते देख, गौरी भी कार से उतरने लगी, लेकिन तब तक दौड़ कर वह पर्स के पास पहुँच गया और झुक कर उठाते समय उसे खोल कर उस मे से लाकेट निकाल लिया।

पर्स बन्द करके वह पीछे घूमा। तब तक गौरी वहाँ आ गई और उस के हाथ से पर्स लेती हुई बोली—"ओह इतना प्यारा पर्स! मैं तो समझी थी कि अब यह मुझे वापस नही मिलेगा।"

दिनेश ने उस से कहा—"जल्दी चलिए ! मुझे भी आफिस जाना है।"

× × × ×

आशा अभी तक उदास खिड़की के सहारे खड़ी थी । तभी उसे अपने पीछे कदमों की आहट सुनाई दी । उस ने घूम कर देखा तो दरवाजे पर खड़ी चम्पा उसे घूर रही थी । चम्पा की ओर आशा की दृष्टि टिक कर रह गई । उस ने पीले रंग का कसा कुर्ता और चूड़ीदार पजामा पहन रक्खा था । गले में थी काली चुन्नी । आज उस ने होठों पर लाल लिपस्टिक भी लगाई थी । आंखों में काजल था । पैरों में सफेद नागरे ।

आशा को एक टक अपनी ओर घूरते देख चम्पा ने शरमा कर अपना मुंह चुन्नी में छिपा लिया और दो कदम आगे बढ़ कर बोली—"बहूरानी ! मुझे घूर क्यों रही हो ? कहीं नज़र न लगा देना ! जब से तुम इस घर में बहू बन कर आयी हो, काम के पीछे मुझे सजने का मौका ही नहीं मिला । पूरे एक घण्टे से आईने के सामने बैठी हूं । मेरी तो कमर ही दुखने लगी । बताओ, मैं कैसी लगती हूं ?"

आशा उस की ओर बढ़ी और उस का हाथ पकड़ती हुई बोली—"चम्पा ! तू तो इतनी सुन्दर लग रही है कि मैं कुछ कह नहीं सकती ! लेकिन यह तो तेरा काम का समय है और तू—।"

"चिन्ता न करो, बहूरानी ! मालकिन से मैं ने छुट्टी ले ली है। अब तुम जल्दी से तैयार हो जाओ।"

"क्यों ?"

"मेरे साथ चलो !"

"कहाँ जा रही है तू ?"

आशा ने जब चकित हो कर यह पूछा,तो चम्पा मन्द-मन्द मुस्कराती हुई बोली--"बहूरानी ! पुरोहितजी ने सुबह मुझ से एक लड़के के बारे में कहा था । मैं आप के साथ वहीं जाना चाहती हूँ । अब तक तो जाने कितने लड़के मुझे बिना पसन्द किये लौट गये । इसीलिए आज मैं ने अपनी सुन्दरता चमकाने में कोई कसर नहीं रक्खी है ।"

आशा चम्पा की यह बात सुन कर मुस्करा उठी । चम्पा का क्रीम व पाउडर से सफेद किया हुआ काला चेहरा और लिपिस्टिक से रंगे होठो के बीच से झाँकते बड़े-बड़े दांत उसे हँसने के लिए मजबूर कर रहे थे । मुश्किल से उसने अपने ऊपर काबू पाया । फिर कुछ सोच कर बोली—"मेरा जाना क्या जरूरी है ? तुम खुद चली जाओ या भोला को साथ ले लो ?"

"आप ने फिर उस कलमुँहे का नाम ले दिया ।"

भोला का नाम सुनते ही चम्पा ने मुँह फुला लिया । आशा ने उस की यह गतिविधि देखी तो मुस्कराती हुई बोली—"तू ठहर, मैं माँजी से पूछ लूँ, फिर तैयार हो जाऊँ ।"

"माँजी से मैंने आप के लिए पूछ लिया है । बस तैयार हो जाइये ।"

आशा अपने कमरे में चली गई । कुछ देर बाद जब वह कपड़े बदल, चम्पा के साथ नीचे का जीना उतर कर जा रही थी, तो उसे राधा मिली और बोली—"देखो बहू ! चम्पा को नादानी न करने देना । वैसे तो मैं ही इस के साथ जाती, लेकिन यह तेरा नाम ले रही थी । जरा समझदारी से काम लेना ।"

आशा ने ड्राइवर से दूसरी गाड़ी गैरिज से लाने के लिए कहा।

रास्ते में आशा चम्पा से बोली—"तू ने पुरोहित जी से ठीक-ठीक कुछ नहीं पूछा और जाने के लिए राजी हो गई। अगर वे इन्कार कर दें, तो ?"

चम्पा ने यह सुनते ही दांये हाथ की मुट्ठी बांध ली और करीब-करीब चिल्लाते हुए बोली—"ऐसा नहीं हो सकता। पंडित जी ने अगर इन्कार कर दिया, तो मैं उन्हें परेशान कर डालूंगी।"

आशा केवल मुस्करा दी। उस ने कलाई पर दृष्टि डाली। घड़ी पाँच बजा रही थी।

कुछ ही देर में गाड़ी पहुँच गई परमट के पास बने हुए पुरोहित जी के घर के सामने।

आशा और चम्पा गाड़ी से उतरीं। जब वे भीतर पहुँचीं, तो पुरोहित जी उन्हें देख कर चौंक गये और व्यस्त स्वर में आशा से बोले—"कैसे तकलीफ की, बहूरानी ? खबर करा देतीं। मैं खुद आ जाता। आओ बैठो।"

आशा एक कुरसी पर बैठ गई और फिर धीरे से बोली—"आपने चम्पा के लिए कोई लड़का बताया था, उसे ही देखने के लिये माँ जी ने हमें यहाँ भेजा है। आप उस का पता बतला दीजिए।"

पुरोहित जी चौंक उठे। वे जल्दी-जल्दी कहने लगे—"आप लोग तो एकदम से काम शुरू कर देते हैं। लड़केवालों को पहले से खबर तो होती। इस के अलावा आप तो उस लड़की को साथ ही ले आयी जिस का ब्याह होनेवाला है।

भला लड़की को इस तरह देख कर लड़के पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?"

चम्पा पुरोहित जी के सामने आ गई और बोली—"तो आपके विचार से मुझे नहीं जाना चाहिए, लेकिन शादी तो मेरी होनी है। लड़का मैं खुद पसन्द करूँगी। यह मेरी जिन्दगी का सवाल है। समझ गये ! अब जल्दी से मेरे साथ लड़के के घर चलिए, नहीं तो मैं अभी आप को छू लूँगी और आप को नहाना पड़ेगा।"

चम्पा की यह बात सुन कर पुरोहित जी सन्नाटे में आ गये। वे कपड़े पहनने लगे।

कुछ ही देर में तीनों कार पर बैठकर बिरहाना रोड आये। सेठ जनकलाल कानोडिया की कोठी के सामने आशा ने कार रोक दी।

पुरोहित जी पहले अकेले भीतर गये। तब तक चम्पा और आशा कार में ही बैठी रहीं। कुछ देर में पुरोहित जी भीतर सब प्रबन्ध कर के लौट आये। वे अपने साथ उन दोनों को ले कर भीतर गये।

कोठी की मालकिन ने आशा का परिचय पा कर उस का स्वागत किया।

हाल के बीचोंबीच एक बड़ी सी मेज पड़ी थी। उस के चारों ओर सब लोग बैठ गये।

चम्पा ने एक सरसरी निगाह चारों ओर डाली। फिर पुरोहित जी से धीरे-धीरे कहने लगी—"लड़का कहाँ है ? मुझे तो उसी से मतलब है। मैं—।"

चम्पा की बात अधूरी रह गयी। सामने आ रहा था एक

नाटा स्थूलकाय युवक। उस की उम्र करीब तीस साल थी। उस ने धोती-कुर्ता पहन रखा था।

चम्पा और उस युवक को एक छोटी मेज के दोनों ओर बैठा दिया गया। सब ने नाश्ता करना शुरू कर दिया।

चम्पा ने आमलेट खाते-खाते सामने बैठे युवक से पूछ लिया—"क्या ये आमलेट तुम्हीं ने बनाये हैं?"

वह युवक चौंक कर बोला—"नहीं।"

"तो फिर तुम कोठी में क्या काम करते हो?"

"सफाई का।"

"इस से काम नहीं चलेगा! तुम्हें थोड़ा-बहुत तो खाना बनाना सीखना चाहिए। खैर अपना नाम बताओ!"

युवक चम्पा के प्रश्नों से घबरा रहा था। उस ने कांपते स्वर में कहा—"मुरली।"

चम्पा मुस्कराते हुए बोली—"मैं तुम्हें मुरली की ही तरह बजाऊंगी! सुनो, कपड़े धो पाते हो या नहीं? इस के अलावा तुम्हें हाथ-पैर भी दबाने पड़ेंगे।"

युवक चौंक कर रह गया। दोनों देर तक आपस में बातें करते रहे। कुछ देर बाद आशा ने नाश्ता खत्म कर के सेठानी जी से कहा—"अब दोनों को पास बुला कर उन की राय जान लीजिए।"

चम्पा और मुरली को बुलाया गया। आशा ने चम्पा से पूछा—"तुम्हें लड़का पसन्द है या नहीं?"

चम्पा ने एक बार मुरली की ओर देखा। फिर जोश-भरे स्वर में बोली—"बहूरानी! मुरली मेरे लिए खाना बनायेगा, कपड़े धोयेगा, मेरे हाथ-पैर भी दबायेगा और घर की सफाई

करेगा । फिर भला मुझे क्या इन्कार है। मुझे तो मुरली जी पसन्द है ।"

अब सेठानी जी ने मुरली की ओर देखा। फिर उससे उसकी पसन्द पूछी। वह रुँआसा हो रहा था वह सेठानी जी के घुटनो के पास बैठ कर बोला—"मालकिन ! यह मुझ से घर का सब काम करवाना चाहती है । देखने मे भी भयानक है। मैं तो इस के कन्धे के बराबर हूँ। इसे तो दूल्हा नही, नौकर चाहिए। मैं इस से शादी नही करूँगा !"

आशा यह सुन कर दग रह गयी। तभी चम्पा लपकती हुई सेठानी जी के पास आयी और पीछे से गरदन पकड कर मुरली को घसीटती हुई बोली—"तू ने सब के सामने मेरी बेइज्जती की है। बोल, शादी करेगा या मैं तेरा गला दबा दूँ ?"

मुरली का दम घुटने लगा । उस के मुँह से बोल नही निकला। सेठानी जी यह देख कर चिल्लाई। कई नौकर चम्पा के पास आ कर रुक गये । वे आगे बढ़ रहे थे। तब तक चम्पा चीख उठी—"खबरदार ! जो कोई मेरे पास आया। इस ने मेरी बेइज्जती की है।"

यह कह कर चम्पा ने मुरली का गला छोड़ दिया और दोनो हाथो से उस की मरम्मत करने लगा।

दो नौकरो ने चम्पा के दोनो हाथ पकड लिये। उस ने एक झटके से हाथ छुडा लिये और मुरली को जमीन पर गिरा दिया ।

अचानक चम्पा फर्श पर गिर पडी। उस ने तुरन्त उठने के लिये प्रयत्न किया, लेकिन चर्र की एक जोरदार आवाज हुई। चम्पा उठ नही पाई।

मुरली उठकर भाग गया था। सभी नौकरों ने मिल कर चम्पा को उठाया। जब वह उठ कर खड़ी हुई, तो उस की हालत ग़रीब थी। पसीने ने चेहरे पर का पाउडर पोंछ दिया था। बाल खुले थे और उस का पीला कसा हुआ कुर्ता फट गया था। वह जोर-जोर से हाँफ रही थी। उस ने खड़े होते ही रोना प्रारम्भ कर दिया।

आशा भी भौचक्की-सी खड़ी थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि यह क्या हो गया। तभी चम्पा तेजी से लपकती हुई बाहर चली गई।

आशा ने सेठानीजी की ओर देखा। वे बोलीं—"अँधेर है बेटी! मैंने तो ऐसी औरत आज तक नहीं देखी। क्यों पुरोहित जी? आप देखते रहे और उस ने मुरली की मरम्मत कर डाली! आपको पहले ही सोच लेना चाहिए था। उसे यहाँ न लाते।"

पुरोहितजी शर्मिन्दा हो रहे थे। उन का सिर नीचा था। वे बोले—"क्या बतलाऊँ सेठानी जी। मैं तो कुछ कह ही नहीं सकता। इस लड़की ने तो मेरी नाक कटा दी।"

आशा चुप खड़ी थी। उस ने धीरे से कहा—"सेठानी जी! मैं उस की तरफ से आप से क्षमा माँगती हूँ। आशा है, आप उसे क्षमा कर देंगी। वह नादान है। मैं जा रही हूँ।"

यह कह कर आशा चल दी। पुरोहित जी बोले—"तुम चलो बेटी! मुझे अभी सेठानी जी से काम है।"

आशा चल दी। जब वह कार में आ कर बैठी, तो चम्पा ने उसे देखते ही आँसू पोंछते हुए कहा—"मेरी कितनी बेइज्जती हुई, रानी! अगर यही मालूम होता कि झगड़ा होगा तो धोती

पहन कर आती । कुरता ही फट गया, नही तो मैं सब को दुरुस्त कर देती। और उस पुरोहित के बच्चे का भी मैं अब दिमाग ठीक कर दूँगी। वह—।"

आशा ने कार स्टार्ट कर दी और झुँझलायी हुई बोली—"अब चुप भी रह चम्पा ! तूने तो मेरी नाक कटा दी। मुझे साथ मे न लाती, तो तू सलामत घर तक भी न लौट पाती !"

यह सुनते ही चम्पा तन कर बैठ गई और जोश के साथ बोली—"यह बात नही बहूरानी ! मैं उन सब के लिए अकेली ही काफी थी, लेकिन तुम्हारी बजाए अगर माँजी आती, तो उन्हें जरूर बुरा लगता।"

आशा ने कुछ भी जवाब नही दिया।

× × × ×

डिनर टेबिल पर राधा बेटे और बहू के साथ बैठी थी। चम्पा खाना परोस रही थी। राधा ने दिनेश से कहा—"तुझे कुछ मालूम हुआ बेटा ?"

"क्या माँ ?"

दिनेश ने यह पूछा तो राधा ने उसे चम्पा की सारी कहानी सुना दी। वह हँसने लगा और हँसते-हँसते बोला—"यह तो अच्छा काम किया चम्पा ने।"

चम्पा ने अपनी बडाई सुनी तो मुस्कराने लगी। राधा ने कहा—"यह सब तो है नेग, लेकिन चम्पा की शादी भी करना है। ऐसे कब तक चलेगा !"

दिनेश ने एक बार चम्पा को ओर देखा और धीरे से बोला—"अब तो एक ही रास्ता रह गया है, माँ ! चम्पा

को कोई लड़का पसन्द नहीं आता। इस की शादी अब भोला से ही करनी पड़ेगी।"

राधा ने अपनी सहमति प्रकट की। फिर आशा की ओर देख, उस से पूछने लगी—"तेरी क्या राय है बहू ?"

"जो आप लोगों की राय है, वही मेरी। लेकिन अभी चम्पा का भोला के साथ झगड़ा हो चुका है। इस के अलावा भोला शादी के नाम से कुछ चौंकता है।"

"हाँ, यह बात तो है।"

राधा ने चिन्ता प्रगट की। तभी दिनेश बोला—"कल आशा की बर्थडे है माँ! उसी में इन दोनों की मंगाई भी कर दी जायेगी। यही ठीक रहेगा। इन दोनों से पूछना बेकार है।"

चम्पा ने यह सुना तो प्रसन्नता से खिल उठी।

आशा ने भोजन समाप्त कर लिया था। दस बजे उस ने चम्पा के हाथ से दूध का गिलास लिया और बोली—"मैं खुद ले जाऊँगी उन के लिए दूध।"

दिनेश के कमरे के किवाड़ भिड़े हुए थे। आशा ने उन्हें धीरे से खोल, भीतर प्रवेश किया। दिनेश बिस्तर पर बैठा, हाथ में कुछ लिये उसे ध्यान से देख रहा था।

आशा उसे चौंका देना चाहती थी। इसीलिए उस के पीछे जा कर खड़ी हो गई। लेकिन जब उस ने दिनेश के हाथ में अपना लाकेट देखा, तो अनेक विचार उस के मस्तिष्क में एक साथ कौंधे। उस के हाथ का गिलास छूट कर फर्श पर गिर पड़ा। काँच टुकड़े-टुकड़े हो गई। वह किंकर्तव्य-विमूढ़-सी सिर

झुकाये खड़ी रही।

दिनेश ने चौक कर उस की ओर देखा और उठ कर खड़ा हो गया। वह आशा के पास आया। उस ने उस की ठुड्डी दो उँगलियों से पकड़ कर ऊपर उठायी। आशा की पलकें मुँद रही थी। उस का चेहरा सफेद था।

दिनेश ने धीरे से कहा—"गिलास गिर गया! कोई चिन्ता की बात नहीं। चम्पा दूसरा ले आयेगी।"

यह कहते हुए दिनेश ने लाकेट आशा की गरदन मे बांध दिया। फिर उसे दांयी बाँह से घेर, बिस्तर तक ले आया।

आशा मन्त्रवत् चली आई और काठ की गुड़िया की भाँति बिस्तर पर बैठ गई।

दिनेश ने एक आरामकुरसी की शरण ली।

आधे घण्टे तक आशा उसी स्थिति में रही। उसे लग रहा था जैसे किसी ने उस का सिर काट दिया हो, या जिस कमरे मे वह बैठी थी, वह घूम रहा हो। उस ने अनेक बातें सोच डाली। कोई उस के मस्तिष्क पर हथौड़े की चोट करता हुआ कह रहा था—"दिनेश को गौरी ने जरूर सब भेद बता दिया। तभी उस के पास लाकेट आया।"

आशा को दिनेश के इस व्यवहार से जितना कष्ट पहुँचा था, उतना तो मरने पर भी न महसूस करती। उस का जी चाह रहा था कि दिनेश उसे डाँटे, चिल्लाये। लेकिन उस के मौन ने आशा को भी मूक-बधिर बना दिया था।

दीवालघड़ी ने टन-टन कर के ग्यारह चोटें की। वह चौक पड़ी। पलकें उठा कर दिनेश को देखा। वह आराम कुरसी पर ही सो चुका था।

काँपते हुए आशा उठ कर खड़ी हुई। उस का सारा बदन पत्ते की तरह थरथरा रहा था। वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर निकल आयी।

अपने कमरे में आते ही वह दरवाजा भेड, उस पर सिर टिका, फूट-फूटकर रो पड़ी।

सारी रात आशा को नींद नहीं आयी। उसे लग रहा था कि उस के हरे-भरे संसार में आग लगने वाली है। उस में उस का सुख-सौभाग्य सब जल जायेगा।

पूरी रात आशा दरवाजे से टिकी बैठी रही। जब वह भविष्य की चिन्ता करती, उसे आँखों के सामने चिन्गारियाँ सी उड़ती नज़र आती। वह सोच रही थी कि सुबह क्या होगा।

जब चार बजने की चार चोटें हुईं, तो आशा उठ कर खड़ी हुई। उस ने बीच के दरवाजे को थोड़ा-सा खोला। दिनेश उसी स्थिति में सो रहा था।

उस की दशा देख कर आशा के आँसू बह चले। वह दिनेश के अपने प्रति प्रेम के विषय में सोच कर रो पड़ी। दिनेश ने कभी उसे डाँटा तक नहीं था। उस ने उठ कर बत्ती बन्द कर दी। फिर बाथरूम की ओर चल दी। उस ने शावर की टोंटी खोल दी।

देर तक खड़ी रही आशा फुहारे के नीचे। वह मन की आग को सांसारिक जल से बुझाना चाहती थी जबकि उसे किसी के सान्त्वना-भरे शब्दों के मलहम की जरूरत थी।

× × × ×

दोपहर तक आशा अपने कमरे मे बन्द रही। उस ने चम्पा से कह दिया था कि उस के सिर मे दर्द है। दरवाजे भीतर से बन्द थे। वह बिस्तर पर पडी थी।

अधिक सोचने के कारण वास्तव मे आशा का सिर दर्द कर रहा था। वह सो जाना चाहती थी। उसे किसी भी तरह से शान्ति नही मिल रही थी। उस की आत्मा पुकार-पुकार कर कह रही थी—"तू सुबह से दिनेश से नही मिली। आखिर कब तक उस से छिपती रहेगी? कभी तो उस के सामने जाना ही पडेगा। तब क्या होगा? तू कैसे दिनेश के सामने जायेगी?"

आशा ने दोनों कानो पर हाथ रख लिये। सारी कोठी मे शोर मचा था। आज उस का जन्मदिन था। मेहमानों को निमंत्रण दिये जा चुके थे। लेकिन जिस के लिए यह सब तैयारियाँ हो रही थी,वह इस प्रकार बेसुध थी जैसे शिशु।

राधा भोला को अपने पास बुला रही थी। वह उस से बोली—"जा, चम्पा को भेज दे।"

भोला चला गया। उसे रास्ते म दिनेश मिला। वह बोला—"सब तैयारियाँ ठीक चल रही है?"

"हाँ बबुआ।"

"बहूरानी कहाँ है?"

"अपने कमरे मे। सुबह से ही उन की तबीयत ठीक नही है। मैं टेबिल सजा रहा हूँ। आप बहूरानी को लिवा कर आइये।"

भोला चला गया। उस ने जा कर चम्पा को राधा के पास भेजा।

दिनेश ने आशा के कमरे का दरवाजा दोनों ओर से बन्द पाया, तो बीच वाले दरवाजे के पास मुंह ले जा कर आशा को पुकारने लगा।

जब आशा ने उस की आवाज सुनी, तो उठ कर खड़ी हो गई। वह असमन्जस में पड़ गई कि किवाड़ खोले या न खोले।

दिनेश ने खीझ कर जोर से पुकारा—"आशा, दरवाजा खोलो। इस तरह बन्द हो कर रहने का मतलब क्या है?"

आशा ने धीरे से किवाड़ खोल दिये। दिनेश जल्दी से भीतर आया और उस के चेहरे की ओर देखते हुए बोला—यह तुम्हारे चेहरे को क्या हुआ, आशा? यह तो सफेद है। शायद तुम ने लाकेट वाली बात को बहुत महसूस किया।"

आशा ने सिर नीचा कर लिया। उस के मुंह से आवाज नहीं निकली।

दिनेश ने उसे अपनी दोनों बाहों में बांध लिया; फिर उस का चेहरा ऊँचा कर के आंखों में झांकते हुए बोला—"आशा! तुम मुझे मेरे जीवन से ज्यादा प्यारी हो। मैं तुम से उस लाकेट के के विषय में कुछ नहीं पूछूंगा। जिस बात से तुम्हें कष्ट हो, उसे मैं समाप्त कर देना ही ठीक समझता हूँ।"

आशा के आंसू बहने लगे। उस की पलकें मुंदी थी। तभी दिनेश ने उस के आंसू पोंछते हुए कहा—"आशा! अब तो हँस दो। मैं तुम्हें रोते नहीं देख सकता।"

अब आशा भरभरा कर दिनेश के कदमों पर गिर पड़ी। उस के मुंह से निकला—"आप देवता हैं।"

दिनेश ने उसे उठा लिया, फिर बोला—"अब ये सब बातें भूल जाओ। देखो, कोठी कैसी सज रही है। चलो, खाने की मेज पर चलें। सुबह तुमने नाश्ता भी नहीं किया।"

दिनेश आशा को बाहर लाया। आशा को लग रहा था कि जैसे किसी ने उस पर घड़ों पानी डाल दिया हो।

तभी चम्पा उन दोनों के पास आकर बोली—"चलिए बहूरानी! मालकिन आप का और बबुआ का इन्तजार कर रही हैं।"

— o —

इस प्रकार से दम्पति की विचार-धाराएँ अलग-अलग बह रही थी।

× × × ×

साँझ होते ही दिनेश की कोठी बिजली के छोटे-छोटे रंगीन बल्बो से जगमगा उठी। पोर्टिको मे कारो की लाइन लग रही थी। आने वाले मेहमान आ रहे थे। द्वार पर राधा खडी मेहमानो का स्वागत कर रही थी। उस ने सफेद जार्जेट की कीमती साडी पहन रक्खी थी। जो भी नया व्यक्ति आता, उस का राधा स्वागत करती।

भीतर मेहमानो की भीड थी। हाल मे हँसी, कहकहे गूँज रहे थे। दिनेश अपने दोस्तो से घिरा खडा था। आर्केस्ट्रा मन्द स्वर मे बज रहा था।

सभी की आँखो मे आशा का इन्तजार था। काफी देर बाद चम्पा के साथ वह नीचे उतरी।

सभी की निगाहे आशा पर टिक रही थी। वह मन्द गति से सीढियाँ उतर रही था। उस ने काली शिफोन की साडी पहन रक्खी थी, जिस पर सुनहली जरी का काम था। उस के हाथो व गले मे हीरो के आभूषण जगमगा रहे थे। उस के केश एक नये अन्दाज मे सँवारे गये थे। चम्पा भी बहुत खुश थी।

आशा के हाल मे आते ही युवतियो ने उस का स्वागत किया। सभी ने अपने-अपने उपहार उसे दिये। मेहमानो ने आशा को बधाई दी। वह भेटे लेते-लेते परेशान हो गई।

आशा से एक गीत गाने का सब ने अनुरोध किया। काफी कहने के बाद वह पियानो के पास जा बैठी। उस की उँगलियाँ

साज़ बजाने लगी और उस ने गीत शुरू कर दिया । आर्केस्ट्रा के स्वर साथ में गूंज रहे थे ।

आशा को देख कर दिनेश यह अनुमान नहीं लगा पा रहा था कि कल रात को यही लड़की बर्फ जैसी शान्त थी ।

गीत समाप्त होते ही आशा से केक काटने के लिये कहा जाने लगा । उस ने फूंक मार कर केक पर जल रही बीस छोटी-छोटी मोमबत्तियाँ बुझा दी और केक काटने के लिए हाथ में छुरा उठायी ।

अचानक किसी ने आशा का हाथ थाम लिया । आशा रुक गई । उस ने सिर उठाकर सामने देखा तो गौरी उस का हाथ पकड़े कह रही थी—"जरा सा रुक जाइये । मेरा उपहार भी स्वीकार कर लीजिए ।"

दिनेश की समझ में गौरी का व्यवहार नहीं आया । ,उसे यही नहीं पता था कि गौरी को किसने निमंत्रण दिया । शायद वह बिना बुलाये ही आ गई थी ।

आशा का चेहरा सफेद था । उसे लग रहा था कि कोई बहुत बड़ा अनिष्ट होने वाला है । वह ऊपर से ले कर नीचे तक कांप रही थी । वह सोच नहीं पायी कि गौरी क्यों आयी है ।

सब मेहमान भौचक्के-से गौरी, दिनेश और आशा की गतिविधियाँ देख रहे थे । उन को समझ में नहीं आया कि गौरी की भेंट से ये दम्पति इतने उद्विग्न क्यों हैं । सब ने एक साथ शोर मचाया—"जल्दी दीजिए अपनी भेंट ! आप ने तो कार्यक्रम ही ठप्प कर दिया ।"

गौरी ने यह सुना तो मुस्कराती हुई बोली—"बस एक

निन्द ! मिसेज दिनेश, मैं आप को वह तोहफा दूंगी, जिसे आप सारी ज़िन्दगी याद रक्खें।"

यह कह कर गौरी भीड़ को चीरती हुई बाहर निकल गई। कुछ देर में वह लौटी तो उस की गोद में लाल तौलिये से लिपटा हुआ लगभग एक वर्षीय शिशु था। वह उसे ले कर तेज़ी से आशा के पास आयी और जबरदस्ती उस की गोद मे थमाते हुए बोली—"कहो, कैसा रहा मेरा तोहफा ? याद रहेगा न ज़िन्दगी भर ?"

आशा के मुंह से जोर की एक चीख निकल गई। उसे सारा हाल घूमता नजर आने लगा। उसे लग रहा था कि वह अभी गिर पड़ेगी। उस का सारा बदन पत्ते की भांति थरथर कांप रहा था।

गौरी भीड को चीरती हुई बाहर की ओर चल दी। दिनेश अभी तक भौचक्का सा खड़ा था। उस ने जब गौरी को जाते देखा तो तेजी से उस के पीछे लपका और उस की बांयी बांह पकड, अपनी ओर खींच कर दांत पीसता हुआ बोला—"अब कौन सा षडयन्त्र बना कर आयी हैं आप ? यह सब क्या है ?"

दिनेश गौरी को आशा के पास खींच लाया।

राधा भी बहू के पास आ गई थी। वह सोचने लगी कि ज़िन्दा बच्चा भेंट मे दिया है इस युवती ने। न जाने इस का क्या रहस्य है।

मेहमानो मे भी खुसर-फुसर हो रही थी। कोई कुछ कहता, कोई कुछ। सब की जबानें चल रही थी। सब के सब रहस्य

का पता पाने के लिए उत्सुक थे ।

दिनेश ने आशा की गोद से शिशु को ले लिया और उसे गौरी को थमाते हुए बोला—"सुनिये श्रीमती जी ! आप इस बच्चे को ले कर चली जाइये ! मुझे ऐसी भट लेने की जरूरत नहीं ।"

गौरी ने बच्चा नही लिया । वह दो कदम पीछे हट गई और आँखों से अगारे बरसाती हुई तेज गले से कहने लगी—"आपको आशा बहुत प्यारी है । उस के लिए कोई भी कलक की बात आप सुनना पसन्द नही करेंगे, लेकिन यह सच्चाई है कि इस बच्चे की माँ आशा है । फिर भला इसे मैं क्यों ले जाऊँ ?"

यह सुन कर दिनेश डगमगाया नही । उस ने दृढ़ स्वर में कहा—"मैं जानता था कि तुम जरूर ऐसा ही कोई हंगामा पैदा कर दोगी । तुम्हारी बात पर हम यकीन नही कर सकते ।"

तब तक राधा ने आशा को टोका—"क्या बहू ! तू क्यों चुप है ? बता, यह लड़की क्या कह रही है । तू इस के आरोप का खडन क्यो नही करती ?"

लेकिन आशा मूर्तिवत् खड़ी रही । यह देख कर गौरी जोर से हँस पड़ी । वह व्यग्य-भरे स्वर में बोली—"झूठ के पैर नही होते । देख लीजिए, आशा का चेहरा सफेद है । वह क्या बोलेगी । मै समझती हूँ माता जी, आप को अपनी इज्जत बहुत प्यारी है । चलिए किसी कमरे मे । मैं आप को सारी स्थिति स्पष्ट कर दूँगी ।"

राधा ने गौरी की जब यह बात सुनी,तो उसे आशा पर क्रोध आ गया। साथ ही उस ने एक दृष्टि डाली सभी मेहमानों पर जो यह इन्तजार कर रहे थे कि देखें अब क्या होता है। उस ने आशा के दोनों कन्धे पकड़ कर जोर से हिलाये। फिर लगभग चीखती हुई बोली—'तू बोलती क्यों नहीं, कह ? कह दे कि यह सब झूठ है, फरेब है। अरे दिनेश बेटा ! तू ही समझा इसे। यह तो चुप रह कर हमारी नाक कटवा रही है।"

राधा ने आशा को छोड़ दिया और दिनेश के दाँये कन्धे पर हाथ रखती हुई बोली—"बेटा ! हमारे खानदान की बेइज्जती हो रहा है और तू भी चुप खड़ा है। मेरी तो समझ में नहीं आ रहा कि क्या होने वाला है।"

दिनेश अब भी चुप ही रहा। वह कभी आशा की ओर देखता और कभी उस की नजर गौरी पर टिक जाती।

अचानक गौरी ने राधा का हाथ पकड़ा और उसे यकीन दिलाती हुई कहने लगी—"माता जी ! आप को शायद अपनी इज्जत का जरा भी खयाल नहीं है। चलिए किसी कमरे में, मैं आप को सारा हाल बताऊँगी।"

दिनेश की समझ में भी आने लगा कि आशा चुप शायद इसलिए है कि गौरी की बात में सच्चाई है। उस ने हाथ जोड़ कर मेहमानों से क्षमा माँगनी प्रारम्भ कर दी।

जब तक दावत चलती रही, आशा उसी जगह खड़ी रही। दिनेश चला गया था ऊपर अपने कमरे में।

गौरी एक मेज पर शिशु को लिटाये दावत खा रही थी।

राधा दो-चार स्त्रियों के पास बैठी उन्हें समझा रही थी कि कोई खास बात नहीं है। आप लोग चिन्ता न करिये।

कुछ मेहमान बिना खाये, मुँह बिचकाते हुए चले गये। कुछ जा कर मेजों को घेर कर बैठ गये। जब तक दावत चलती रही, उन के बीच इस घर की चर्चा चलती रही।

राधा को चैन नहीं पड रही थी। वह चाहती थी कि जल्दी से सब मेहमान चले जाएँ,फिर उसे सच्चाई का पता लगे। वह कभी गौरी को देखती और जब उस की दृष्टि उठ जाती आशा की ओर,तो उसकी सारी देह क्रोध से काँप जाती। उसके मन में कोई कह रहा था—"जब दिनेश ने इस अज्ञात कुल वाली निर्धन आशा से ब्याह किया,मन तभी मेरा चौंक रहा था, लेकिन बेटे की खुशी के कारण मेरे वश के नाम को आज धब्बा लग गया। पता नहीं, अब क्या होने वाला है।"

किसी तरह से दावत समाप्त हुई। सभी मेहमान विदा ले कर चले गये। जो दो-चार बहुत घनिष्ठ सम्पर्की थे, वे रुक रहे।

राधा ने भोला से कहा—"जा, दिनेश बबुआ को यहाँ बुला ला। अपने कमरे में होंगे वे।"

भोला जब दिनेश के पास पहुँचा, तो वह भुँभला उठा। उस ने तेज गले से कहा—"मैं नीचे नहीं जाऊँगा। माँ को जो फैसला करना है, खुद कर लें।"

लेकिन भोला नहीं माना। वह उस की खुशामद करने लगा।

जब दिनेश नीचे आया तो उसने देखा कि आशा पूर्ववत् अपने स्थान पर खड़ी थी। उस की यह स्थिति देख, उसका मन कहने लगा—"आशा की स्थिति बता रही है कि जरूर इस में आशा की गलती है।"

आगे की बात दिनेश सोच नहीं पा रहा था। वह जब भविष्य के लिए सोचता, तो उस की आंखों के सामने अंधेरा छाने लगता कि अब क्या होगा।

वह जा कर राधा के पास खड़ा हो गया। गौरी ने उसे देखा तो बोली—"आइये दिनेश बाबू! संभालिये अपने बच्चे को।"

दिनेश ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। तभी राधा ने गौरी से पूछ लिया—"तुम आशा की कौन हो? क्या सम्बन्ध है तुम दोनों का?"

"जी! सम्बन्ध तो कुछ भी नहीं है। केवल इतना है कि आशा के बच्चे को पालने का प्रबन्ध मैं करती थी और इस के लिए मुझे आशा की ओर से रकम मिलती थी। यह बात शायद दिनेश बाबू भी जानते हैं।"

गौरी की यह बात सुन कर राधा आश्चर्य चकित हो दिनेश की ओर देखने लगी। फिर उस ने कहा—"दिनेश! तू जानता था क्या? यह सब क्या है? तेरी शादी हुए तो छ महीने भी पूरे नहीं हुए फिर यह बच्चा?"

गौरी ने राधा को फौरन जवाब दिया। वह बोली—"देखिये! इस शादी से पहले एक युवक से आशा का अनुचित सम्बन्ध था। जब तक उस के बेटे ने जन्म नहीं लिया, वह इस से शादी का वादा करता रहा। फिर न जाने कहाँ गायब हो गया? तब इस की माँ ने शिशु को अनाथालय में दे दिया और आशा की शादी दिनेश बाबू से हो गई। इसीलिए कि कहीं बदनामी न हो जाए, आशा ने अपने आप को अनाथ हो

बतलाया।"

राधा सन्नाटे में आ गई! उस ने दिनेश की ओर एक क्रोध-भरी दृष्टि डाली फिर बोली—"क्यों रे, तू तो दिन-रात आशा के गुण गाता था। अब सुन रहा है या नहीं ?"

यह कह कर राधा तेजी से आशा के पास आयी और उसे आगे को धकेल, तेज गले से बोली - "कलमंही का मिजाज तो देखो। गलती भी की और मुंह से बोलती नहीं।"

आशा मुंह के बल गिर पड़ी। उस का निचला होठ कट गया। उस के मुंह से एक चीख निकल गई और वह फूट-फूट कर रोने लगी।

राधा ने उस के दाँये हाथ को पकड़ा और घसीटती हुई दिनेश के पास ले आई, फिर हाँफती हुई कहने लगी—"दिनेश ! अब यह इस घर में नहीं रह सकती ! अब भी तुझे कुछ सन्देह रह गया है क्या ?"

दिनेश को इस समय आशा के साथ सहानुभूति नहीं हुई। वह मौन खड़ा रहा। आशा सिसकियाँ भर रही थी।

तभी गौरी ने एक बार आशा की ओर देखा, फिर राधा के पास आ, उस का हाथ पकड़ कर बोली—"माता जी ! जब तक मुझे रकम मिलती रही, मैं ने आप लोगों के कलक को छिपाये रक्खा, लेकिन मजबूर हो कर बच्चे को मुझे आप के पास लाना पड़ा। मैं तो चली। अब आप को समझ में जो आए, वह करिये।"

यह कह कर गौरी चल दी। उसे किसी ने नहीं रोका !

तभी आशा उठ कर खड़ी हुई। उस ने बच्चे को गोद में

ले लिया। फिर सिसकती हुई धीरे-धीरे कहने लगी—"हाँ, यह मेरा ही बेटा है! मुझे नहीं चाहिये आप की दौलत। मैं जा रही हूँ।"

राधा ने दिनेश की ओर देखा तो वह दोनों हाथ कानों पर रखे ऊपर की ओर जा रहा था। वह तेजी से लपक कर आशा के पास आ गई और उस की राह रोकती हुई तेज गले से बोली—"अरी कुलटा! तू बहुत चालाक है। ये कीमती जेवरात तो उतारती जा। हिम्मत तो देखो! लपकती हुई चल दी!"

राधा ने आशा के आभूषण उतार लिये। फिर उसे आगे की ओर धकेलती हुई बोली—"जा अब अपनी सूरत कभी फिर मत दिखलाना। शर्मदार हो तो जा, गंगा में डूब कर प्राण दे दे।"

राधा ने आशा को मुख्यद्वार से बाहर कर दिया। फिर भीतर से किवाड़ बन्द कर लिये। सभी नौकर-नौकरानियाँ सहमे-से इधर-उधर से झाँक रहे थे। किसी की भी हिम्मत न पड़ी जो राधा के सामने आता।

× × × ×

आशा जब कोठी से दूर आयी, तो उसे यही धुन थी कि जल्दी से जल्दी यहाँ से चली जाए। वह पोर्टिको से बाहर आयी।

वह तेजी से कदम बढ़ाती हुई एक ओर चल दी। उसे मंजिल का पता नहीं था। उस के कानों में साँय-साँय का शोर हो रहा था। उसे चक्कर-सा आ रहा था। उस की आँखों

के सामने अंधेरा था।

अचानक किसी ने पीछे से उस के कन्धे पर हाथ रख दिया लेकिन आशा रुकी नही। तब रोकने वाला उस के सामने आ गया।

आशा रुक गई। उस ने घने अधकार मे भी आगन्तुक को पहचानने की कोशिश की। उसे पहचानते ही वह रो पड़ी और उस स्त्री के गले से लगकर बोली—"तुम ने एक दिन भी सब्र नही किया गौरी बहन ! मै तो तुम्हे रुपये देती। तुम ने पाँच हजार रुपये के पीछे मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी। मैं ...।"

आगे आशा कुछ नही बोल पायी। उस का गला रुँध गया था।

गौरी ने उस की गोद से बच्चा ले लिया। फिर आशा से बोली—"पैसा न पहुँचने के कारण आज ही अनाथालय वाले बच्चा हमारे घर दे गये। माँ का स्वभाव तो तुम्हें मालूम ही है ! उन्हों ने मुझे तुम्हारे घर भेज दिया। कोई बात नही, जो होना था, हो गया। अब कहाँ जाओगी ?"

आशा ने गौरी की यह बात सुनी, तो दृढ स्वर मे बोली—"मैं माँ के पास नही जाऊँगी। पर जिन्दा रहकर क्या करूँगी। तुम मेरा बच्चा लिये जाओ। इस का ख्याल रखना ! या कहो तो इसे भी अपने साथ गंगा की गोद मे ले जा कर सुला दूँ ?"

यह कह कर आशा बिलख-बिलख कर रोने लगी। गौरी ने उस की पीठ पर हाथ रखता और बोली—"यह तुम्हारा बेटा है, लेकिन मैं भी इसे बहुत प्यार करती हूँ।"

यह कहकर गौरी ने आशा को हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा, लेकिन उस ने एक झटके से अपना हाथ छुड़ा लिया

ओर झुक कर शिशु का मुँह चूम लिया। फिर आँसू बहाती हुई सामने की ओर दौड़ने लगी।

गौरी ने एक बार घूम कर आशा की ओर देखा। वह काफी दूर जा चुकी थी। गौरी ने एक टैक्सी रोकी और दूसरी ओर उस पर बैठ कर चल दी।

आशा भागती चली गई। उसे डर था कि कहीं पीछे गौरी न आती हो। उस का दम फूल रहा था। अचानक एक पत्थर की उस के दायें पैर में ठोकर लगी। वह भरभरा कर वहीं गिर पड़ी। कुछ क्षण के लिए वह बेसुध हो गई। फिर उस ने उठने की कोशिश की लेकिन,उस की ताकत ने जवाब दे दिया।

× × × ×

आशा, बेहोश नहीं थी। वह थकावट के कारण सड़क के किनारे की उस भूमि पर पड़ी रही। उस की आँखें खुली थी और मस्तिष्क में नाच रहे थे अतीत के चलचित्र। वह अपना कष्ट भूल गई और अपने अतीत को आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी।

× × × ×

आशा ने आँखें खोली। उस ने पहचानने की कोशिश की, लेकिन उस की समझ में नहीं आया। वह उठ कर बैठ गई। उस ने देखा कि वह एक बिस्तर पर बैठी है और कमरा बहुत कीमती चीजों से सजा हुआ है।

आशा ने सिर पर हाथ रक्खा तो उस पर पट्टी बंधी थी। वह चौंक गई। उस की समझ में नहीं आ रहा था कि यह

कौन जगह है। उसे यह भी नही याद आ रहा था कि उस का नाम क्या है। उसे बड़ी कमजोरी महसूस हुई। उस ने उठने की कोशिश की, लेकिन उठ नही पायी।

वह निढाल-सी बिस्तर पर लेट गई। उसे अजीब-अजीब सा लग रहा था। आखिर वह जोर से चीखी —"कोई है? इस घर में कोई और क्यो नही सामने आता?"

आशा को लगा कि उस को बहुत सी ताकत चिल्लाने मे खर्च हो गई है। उस ने आँखें बन्द कर ली।

अचानक कमरे मे किसी के आने की आहट सुनायी दी। आशा ने आँखें खोली। आगन्तुका एक प्रौढ़ा थी। वह उस के करीब आ गई और चुपचाप खड़ी हो गई।

आशा उठ कर बैठ गई और उस वृद्धा की ओर क्रोध-पूर्वक देखती हुई बोली—"कौन हो तुम? मैं कौन हूँ? यह कौन सी जगह है? तुम बोलती क्यों नहीं? मुझे जवाब दो।"

यह कह कर आशा हाँफने लगी। वृद्धा के चिन्ताग्रस्त चेहरे पर मुस्कान दौड़ गई। उस ने उसे सान्त्वना देते हुए कहा—"शान्त हो जा बेटी! अभी तुझे सब हाल मालूम हो जायेगा। अब तेरी तबियत कैसा है?"

"लेकिन तुम कौन हो? मैं तुम्हे नही पहचानती।"

आशा ने जब चिन्ताग्रस्त हो कर यह कहा, तो वह वृद्धा वहाँ से जाती हुई बोली—"अभी बतलाती हूँ।"

यह कहकर वह वृद्धा बाहर निकल गई।

आशा किंकर्तव्यविमूढ़-सी उस दरवाजे की ओर देखती रही। उस के सिर में बड़े जोर से दर्द हो रहा था। उस ने

कुछ देर बाद किसी ने आशा के माथे पर हाथ रक्खा। वह चौक कर उसे देखने लगी। उस ने देखा कि सिर पर हाथ रखने वाली वही वृद्धा थी।

आशा ने धीरे से प्रश्न कर दिया—"आप कौन है ? यह किस का घर है ?"

वृद्धा उस के पास कुरसी खींच कर बैठ गई और मेज पर से दूध का गिलास उठा, उसे देती हुई बोली—"चल उठ ! पहले दूध पी ले। तू बहुत कमजोर हो गई है। क्या वाकई में तू मुझे नही पहचानती ?"

आशा उठ कर बैठी। उस ने 'न' सूचक सिर हिला दिया फिर कहने लगी--"मैं···।"

"मै तेरी एक भी बात सुनना पसन्द नही करूंगी। पहले दूध पी ले जिस से बदन मे कुछ ताकत आ जाये। फिर मैं तुझे समझाऊँगी। जरा सी बात को ले कर तू इतनी परेशान है।"

आशा की बात काट कर उस वृद्धा ने यह कहा और दूध का गिलास उस के मुँह मे लगा दिया।

आशा ने धीरे-धीरे वह गुनगुना दूध पी लिया। अब उस के बदन मे ताकत आयी और सिर का दर्द कुछ कम हुआ।

उस के हाथ से खाली गिलास ले कर वृद्धा ने मेज पर रख दिया। फिर उसे सहारा दे,लिटाती हुई धीरे-धीरे कहने लगी— "तेरे सर पर ये फूलदान आ गिरा था बेटी ! मै ने तुरन्त डाक्टर बुलाया। उस ने बताया कि तेरी याद चली गई है। तू अब अपनी जिन्दगी के विषय में कुछ भी नही जानती। यह क्या हो गया बेटी ! मैं तो लुट गई ! बरबाद हो गई ! हे भगवान् ! अब मेरी बच्ची का क्या होगा ?"

यह कहते-कहते वृद्धा फूट-फूट कर रो पड़ी। आशा ने उस की ओर आश्चर्य-भरी दृष्टि से देखा, फिर कहने लगी—"मेरा नाम क्या है ? मेरी याद चली गई, यह बात तो सच है। मैं कुछ भी नहीं जानती कि कौन हूँ और कहां से आई हूँ।"

"तेरा नाम आशा है और तू मेरी ही बेटी है। आशा, मैं बहुत दुखी हूँ अब तेरा क्या होगा ?"

आशा ने वृद्धा के वक्ष में सिर गड़ा दिया और फूट-फूट कर रोती हुई बोली—"मां ! मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता। कुछ देर के लिए मुझे अकेला छोड़ दीजिए। मेरा सिर दर्द कर रहा है।"

"कोई बात नहीं ! तू कुछ देर आराम करेगी तो सब ठीक हो जायेगा। अब मैं जा रही हूँ।"

यह कह कर वृद्धा चल दी। आशा उस से तमाम बातें पूछना चाहती थी, लेकिन उसे नींद-सी आ रही थी। वह सो गई।

जब आशा को दुबारा चेतना प्राप्त हुई,तो कमरे में बिजली का बल्ब जल रहा था। वह उठ कर बैठ गई। अब वह अपने को पहले से तन्दुरुस्त महसूस कर रही थी।

आशा पलंग से उतर कर खड़ी हो गई। धीरे-धीरे चलती हुई वह कमरे से बाहर निकली। उस की समझ में नहीं आया कि वह अब किधर जाए। तभी उसे वृद्धा की आवाज सुनाई दी। वह किसी से कह रही थी—"अब देखूं जा कर—लड़की का क्या हाल है ? कहीं आग तो नहीं गई।"

सामने के एक कमरे से वृद्धा बाहर आयी। उस ने जब आशा को दरवाजे पर खड़ा देखा,तो लपक कर उस के पास आ गई और बोली—"तू उठ गई, आशा ! चल ! यह भी अच्छा हुआ। तेरी तबीयत इस समय कुछ ठीक है।"

वृद्धा आशा को भीतर लिवा लायी। उस ने उसे बिस्तर पर बैठा दिया। फिर उस से कहने लगी—"तुझे अभी आराम करना चाहिए। काफी कमजोरी है तेरे शरीर में।"

आशा ने उस से यह पूछा—"माँ, क्या मेरे और कोई नहीं है ? घर सूना-सूना सा क्यों है ? अभी आप किस से बातें कर रही थी ?"

वृद्धा ने उसके माथे पर हाथ रख रख दिया। फिर चिन्तित हो कर बोली—"अरे, तुझे तो फिर बुखार हो आया। ज्यादा बातें न कर। रात भर सोयेगी। सुबह बिलकुल ठीक हो जायेगी। तभी सब बातें तुझे बतलाऊँगी।"

लेकिन आशा नहीं मानी। उसने वृद्धा का हाथ पकड़ लिया और दीन स्वर में बोली—"मुझे नींद नहीं आती, माँ ! कुछ देर मेरे पास बैठो ! फिर चली जाना।"

वृद्धा रुक गई, लेकिन उस ने कोई बात नहीं की। एक आराम कुर्सी पर वह अधलेटी हो गई।

कुछ देर बाद दवा पी कर आशा सो गई।

प्रातः काल जब आशा जागी,तो चिड़ियों का मधुर कलरव वातावरण में गूँज रहा था। उस ने एक अंगड़ाई ली और उठ कर बैठ गई। हलकी-हलकी सूर्य की किरणें खिड़की के शीशे से छन कर आ रही थी। कमरे के किवाड़ भिड़े हुए थे।

आशा उठ कर खड़ी हो गई। उस ने जा कर खिड़की के दोनों पल्ले खोल दिये। सामने सड़क थी। वह एक दो मंजिले मकान की खिड़की थी। आशा को यह नहीं पता लग रहा था कि यह कौन सी बस्ती है । वह देर तक खड़ी उस ओर देखती रही। सड़क पर रिक्शे, कारें आदि वाहन गुजर रहे थे। आशा को ऊब सी लगी। उस ने खिड़की बन्द कर दी।

अचानक उसे अपने पीछे कुछ आहट सुनाई दी । वह घूम कर देखने लगी। उस के पलंग के पास उस की समवयस्क एक युवती खड़ी थी । वह साधारण सुन्दरी थी। उस ने आशा को अपनी ओर घूरते देखा तो लपकती हुई उस के पास आ गई और उस के दोनों हाथ पकड़, अपने गले में डालती हुई बोली—"क्यों आशा! तू मुझे नहीं पहचान पाई क्या? मैं तेरी बहन हूँ—गौरी। याद आया या नहीं?"

आशा किंकर्तव्य-विमूढ सी उसे देखती रही। उस ने 'न' द्योतक सिर हिला दिया।

गौरी ने उसे आश्वासन दिया। वह उस के सिर पर बँधी पट्टी को टटोलती हुई बोली। कोई बात नहीं। तू बच गई, यही बहुत है। बहन! बड़ी गहरी चोट आई है।"

गौरी ने आशा को ला कर बिस्तर पर बैठा दिया? फिर उस के बगल में बैठती हुई बोली—"तुम कुछ बोलती क्यों नहीं?"

"क्या बोलूँ?"

"मेरी बातों का जवाब दो।"

"पूछो।"

जब आशा ने यह कहा, तो गौरी उस के कान के पास मुंह ले जा कर बोली—"तुम ने तो हम लोगों को ऐसी मुसीबत में डाल दिया है कि कुछ भी कहते नहीं बनता है।"

आशा चौंक गई। उस ने प्रश्न कर दिया। वह कहने लगी—"कैसी मुसीबत ? मैं समझी नहीं बहन ?"

"अब भला तुम क्यों समझोगी ! तुम्हारी तो याद चली गई है और तुम अपने पिछले जीवन के विषय में कुछ नहीं जानती, लेकिन मैं और माँ तो बदनामी के बोझ से दबी जा रही हैं। तुम्हें इस की फिक्र कहाँ ?"

गौरी की यह बात सुन कर आशा को बड़ा दुख हुआ। उस ने पीड़ित स्वर में पूछा—"मुझे वास्तव में कुछ भी याद नहीं आता ! कैसी बदनामी ? तुम यह क्या कह रही हो ? मेरे पिछले जीवन के विषय में बतलाओ मुझे। मैं भी देखूं कि वह कौन सी बात है जिस के कारण माँ की बदनामी हो रही है।"

गौरी ने जब उस के मुंह से यह सुना, तो उठ कर खड़ी हो गई और कमरे से जाते-जाते बोली—"अभी आती हूँ मैं ! तुम्हें सब कुछ बतला दूंगी।"

गौरी चली गई। आशा की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या है ? गौरी बाहर क्यों चली गई ?

कुछ देर बाद गौरी आयी। उस के हाथ में एक फोटो था। वह आ कर आशा के पास बैठ गई। फिर वह चित्र उस के हाथ में देती हुई बोली—"इसे ध्यान से देखो। इसे तो तुम जरूर पहचान जाओगी।"

आशा ने देखा कि उस चित्र में एक सुन्दर युवक बैठा मुस्करा रहा था। वह उसे गौर से देखने लगी। फिर अपने दिमाग पर जोर डाला कि शायद कुछ याद आ जाए। लेकिन कई मिनट तक सोचने के बाद भी वह उसे पहचान नहीं पायी, तो उस के मुँह से निकला—"गौरी बहन! तुम मेरी कुछ मदद करो। मैं इसे नहीं पहचान पायी। कौन है यह?"

गौरी ने यह सुना तो व्यंग-भरे स्वर में बोली—"गजब हो गया! जब तू अपने प्रेमी को ही नहीं पहचान पा रही है, तो फिर उस बच्चे का क्या होगा जिसे तूने जनम दिया है?"

आशा के हाथ से तस्वीर नीचे गिर गई। उस ने अपने कानों पर दोनों हाथ रख लिये। फिर पागलों की भांति चीखती हुई बोली—"नहीं! यह झूठ है बहन! कह दो कि यह सब झूठ है। मैं पागल हो जाऊँगी!"

गौरी की भौंहें कमान हो रही थीं। उस ने आशा की चोटी पकड़ ली। फिर उसे खींचती हुई क्रोध-भरे स्वर में बोली—"कैसी भोली बन रही है! मुझे सब पता है। तू हमें बेवकूफ बना रही है! याद चली जाने का तो बहाना है। तू इस तरह अपने पाप से बचना चाहती है। लेकिन यह सब नहीं चलेगा।"

आशा फूट-फूट कर रोने लगी। तभी कमरे में वृन्दा ने प्रवेश किया। उस की गोद में एक नन्हा सा शिशु था जो कपड़े में लिपटा हुआ था। वह आशा के पास आ, उस की गोद में शिशु को देती हुई बोली—"तूने क्या तय किया है, आशा? सुरेश तो अब तुझ से शादी करने आयेगा नहीं। क्या होना चाहिए?"

आशा ने एक बार बच्चे को देखा। फिर वृद्धा की ओर निरीह दृष्टि से देखने लगी। तभी गौरी ने बाँया कन्धा जोर से हिला दिया और बोली—"आखिर तुम्हारा मतलब क्या है? इस तरह चुप रहने से काम नहीं चलेगा।"

आशा फिर भी चुप रही।

तब वृद्धा पास बैठती हुई उस के सिर पर हाथ फेर कर बोली—"आशा! तुझे मैं कितना प्यार करती थी। लेकिन तूने मेरी इज्जत को बट्टा लगा दिया। तू छिप-छिप कर सुरेश से मिलने लगी। एक दिन उसे ले कर मेरे पास आयी कि आज शादी करना चाहती है। मैं ने तुम दोनों की सगाई कर दी। यह देख अपने हाथ की अगूठी। इस में किस का नाम लिखा है?"

आशा ने अपना बाँया हाथ उठा कर देखा। उस में बीच की उँगली में सोने की अंगूठी थी, जिस पर मीना किये हुए शब्दों में लिखा था—"सुरेश"।

आशा को फिर भी कुछ याद नहीं आया। वह धीरे-धीरे लज्जित स्वर में बोली—"फिर क्या हुआ माँ, मुझे आप पूरा हाल बतला दीजिए। तभी मैं कोई कदम उठा सकती हूँ। क्या मेरी शादी हुई थी?"

वृद्धा ने जब आशा के मुँह से यह सुना, तो प्यार से उस की पीठ थपथपाती हुई बोली—"बताती हूँ बेटी! सब बताती हूँ। हाय भगवान! मेरी कैसी फूल सी बच्ची थी! इस का क्या हाल हो गया? मैं…।"

यह कहते-कहते वृद्धा रोने लगी। यह देख,गौरी ने झुंझलाये हुए स्वर में कहा—"चुप रहो माँ! तुम ने सुबह-सुबह यह राग

छेड़ दिये। अभी सारे काम बाकी पड़े हैं। जल्दी से वह कहानी इसे सुना कर खत्म करो।"

यह सुन वृद्धा ने अपने आँसू पोंछ डाले। फिर धीरे-धीरे कहने लगी—"आशा! तू तो नादान थी बेटी। उस दगाबाज ने तुझे लूट लिया। मैं शादी की तारीख निकलवाती और वह देहली से पत्र लिखता कि बस आने ही वाला हूँ। जब मुझे मालूम हुआ कि तू माँ बनने वाली है, तब उस ने हमें काफी आश्वासन दिये। उसी के भरोसे मैं ने पुराना किराये का घर छोड़ दिया, जिससे बदनामी न हो। तुझे यहाँ ले आयी और इस शिशु का जन्म हो गया। तब से दो महीने हो गये और सुरेश का एक भी पत्र नहीं आया।"

आशा ने जब सारी परिस्थिति समझ ली, तो चिन्तित हो कर बोली—"लेकिन माँ! उन का पता तो तुम्हें मालूम होगा। मैं बच्चे को ले कर जाऊँगी वहाँ और उन से पूछूँगी कि उन्हें मेरी जिन्दगी बरबाद करने का क्या हक था।"

आशा आवेश में आ गई। उस ने बच्चे का मुँह चूम लिया। तभी गोरी मुलायम स्वर में कहने लगी—"अगर पता ही मालूम होता, तो मैं सुरेश को ढूँढ निकालती और उस दगाबाज की खूब बेइज्जती करती; लेकिन मजबूरी है। तीन दिन हुए, तुम्हारे सिर पर फूलदान गिर पड़ा। तुम्हारी याद चली गई। यह कोढ़ मे खाज वाली कहावत हो गई।"

वृद्धा गौरी के चुप होते ही उस का समर्थन करती हुई कहने लगी—"हाँ बेटी! हमें तो भगवान् ने ऐसा ठगा कि कुछ कह नहीं सकती। जाने अब तेरी किस्मत में क्या लिखा है!"

"माँ ! मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता। अब क्या करूँगी मैं।"

यह कहती हुई आशा फूट-फूट कर रो पड़ी। उस ने रोते-रोते वृद्धा के कन्धे पर सिर रख दिया।

वृद्धा उसे समझाती हुई धीरे-धीरे कहने लगी—"चुप हो जा बेटी ! मैं तेरी माँ हूँ। तेरे लिए मैं कुछ प्रबन्ध करूँगी ही, तेरी जिन्दगी बरबाद नहीं होने दूँगी।"

आशा चुप नहीं हुई। वह और जोर-जोर से फूट-फूट कर रोने लगी और रोते-रोते बोली —"मैं देहली जाऊँगी, माँ। उन्हें ढूँढ निकालूँगी, वे चाहे कहीं भी हों, मेरी नजरों से छिप नहीं सकते।"

वृद्धा ने अपनी साड़ी के छोर से आशा के आँसू पोंछे। फिर उसे दुलराती हुई बोली—"नहीं पगली ! जो हो गया, उसे तू भूल जा। अब तेरी जिन्दगी एक नये सिरे से चलेगी। आज भर तू बच्चे को खूब प्यार कर ले। रात को इसे मैं अनाथालय में दे आऊँगी।"

"नहीं माँ ! यह मेरे कलेजे का टुकड़ा है। मैं इसे नहीं छोड़ सकती। मैं सारी उम्र इसी तरह से रहूँगी।" आशा ने यह कहा तो गौरी ने उस की गोद में बच्चे को ले लिया और उसे प्यार करती हुई उस को समझाने लगी—"नादान मत बनो बहन ! यह सारी जिन्दगी का सवाल है। माँ ठीक कहती है। बच्चे को तुम बीच-बीच में जा कर देख भी सकती हो। क्या मुझे यह प्यारा नहीं है ! लेकिन लोक-लाज के आगे ममता को भी झुकना पड़ता है। तुम इसे भूल जाओ और अपनी जिन्दगी एक नये सिरे से शुरू करो।"

आशा ने कुछ भी जवाब नहीं दिया, वह किंकर्तव्य-विमूढ़ सी बैठी रही।

× × × ×

उसी रात को वृद्धा बच्चे को घर ले ले गई और आशा ने अपने कलेजे पर पत्थर रख लिया। उसे वैसे बच्चे से कोई खास प्रेम नहीं था। वह धीरे-धीरे उसे भूलने लगी।

कई महीने बीत गये। आशा घर से नहीं निकलती। वह दिन भर मशीन पर सिलाई करती और रात को कुछ देर के लिए छज्जे पर जा कर खड़ी हो जाती। वह अपने अतीत को याद करने की कोशिश करती।

गौरी जिन्दादिल लड़की थी। यद्यपि वह आशा के बराबर सुन्दर नहीं थी, लेकिन उस के विचार एक दम आधुनिक थे। उस ने एक होटल में कैशियर-गर्ल की नौकरी कर ली थी। वह रात के बारह बजे घर आती; फिर प्रातः चली जाती।

गौरी अक्सर आशा को समझाया करती कि कभी-कभी तो उसे घर से बाहर निकलना चाहिए। आशा धीरे से हंसकर टाल देती कि क्या जरूरत है, मैं इसी तरह ठीक हूं।

आशा अनिद्य सुन्दरी थी। उस के नाक-नक्श और चम्पई रंग काफी आकर्षक थे। जो एक बार देखता, उसे याद रखता। आशा घर का सारा काम करती थी। उसे केवल अपनी दो महीने की जिन्दगी का हाल मालूम था। पहले वह क्या थी, यह सब उसे बहुत कम पता था। जो कुछ उस ने गौरी और मां के मुँह से सुना था, वही जानती थी।

एक दिन आशा हाथ में झोला ले कर कुछ सामान लाने के लिए बाजार गई । उस का घर था मेस्टन रोड पर और वह नवीन मार्केट आयी । उस ने सामान लिया और जल्दी-जल्दी सडक पार करने लगी ।

वर्षा के दिन थे । बादल पहले से ही घिरे हुए थे । अचानक बारिश शुरू हो गई । आशा अभी सडक पार भी नही कर पायी थी कि एक कार के पास वह फिसल कर गिर पडी ।

कार मालरोड की चौडी सडक पर तीव्र गति से जा रही थी , उस के बिलकुल पास में ही आशा गिरी थी ।

कार के चालक ने दुर्घटना की आशका से एकदम ब्रेक लगा दिया । तेज आवाज करती हुई गाडी रुक गई ।

पानी की बौछार तेज हो गई थी । आशा सडक पर अस्त-व्यस्त सी पडी थी । चालक ने पानी की परवाह नही की । वह कार की अगली विन्डो खोल, नीचे उतर पडा ।

वह आशा के पास आ गया और उसे गौरपूर्वक देखने लगा । उसे वह बेहोश नजर आयी । चालक ने एक बार चारो ओर देखा । वर्षा के कारण सडक पर सवारियाँ बहुत कम चल रही थी । उस ने अपनी दोनो बाँहो पर आशा को उठा लिया । उस की साड़ी कीचड से लथपथ हो रही थी ।

चालक ने उसे पिछली बर्थ पर लिटाया और खुद अगली सीट पर आ कर बैठ गया । उसने कार स्टार्ट कर दी । तभी उसे किसी की आवाज सुनाई दी ।

उस ने पीछे घूम कर देखा, तो आशा उठ बैठी थी और उस से कुछ प्रश्न कर रही थी । उस ने कार ले जा कर एक किनारे रोक दी । फिर आशा से प्रश्न कर

दिया—"आप को कहीं चोट तो नहीं आयी ? पास ही हास्पिटल है। मैं ''

यह कहते-कहते कार चालक रुक गया। वह प्रश्न-सूचक दृष्टि से आशा को देखने लगा।

आशा ने साड़ी के आँचल मे अपना मुँह पोछा, फिर व्यस्त स्वर में चालक से कहने लगी—"आप चिन्ता मत करिये। मेरे कहीं पर भी चोट नहीं आयी। गिरते ही मेरा सिर घूमने लगा था। इसीलिए उठ नहीं पायी। आप ने नाहक तकलीफ की।"

यह कहते-कहते आशा कनखियों से चालक को देखने लगी। वह एक गौरवर्ण घुंघराले बालों वाला युवक था। उस का चेहरा अत्यन्त आकर्षक था। उस की टेरिलीन की टी-शर्ट पर कीचड़ के दाग थे।

उसे देखते-देखते आशा विचारों की दुनिया में खो गई। उसे लगा कि वह युवक उसे केवल दुर्घटना की आशंका से ही उठा कर लाया है। वरना उसे आशा जैसी गरीब लड़की में क्या रुचि हो सकती थी।

आशा को लगातार अपने चेहरे की ओर निहारते देख, वह युवक कुछ झेंपा। फिर उस ने आशा की विचार-तन्द्रा तोड़ दी। उस ने धीरे से प्रश्न कर दिया—"यह आप किस खयाल में गुम हो गईं ? शायद आप उस समय होश में नहीं थी जब मैं आप को उठाकर कार में लाया ?"

आशा यह सुन कर चौंकी। उस से एकदम कुछ जवाब नहीं देते बना। वह कहने लगी—"जी हाँ ! नहीं। जी नहीं।"

"वही तो मैं भी सोच रहा था। अगर आप होश में होती तो खुद ही उठ खड़ी होती। छोड़िये इन बातों को। आप को कहाँ जाना है ?"

'मेस्टन रोड। और आप ?"

आशा को यह बात सुन कर बालक मुस्कराते हुए बोला—"आप मेरा पूरा परिचय जरूर जानना चाहती हैं, लेकिन कहती नहीं। मेरा नाम दिनेश है। अपनी माँ का अकेला बेटा हूँ। मेरी दो मिलें हैं और मैं छावनी मे रहता हूँ ?"

आशा को हँसी आ गई। वह बोली—"अब मेरा भी फर्ज़ हो जाता है कि आप को अपना परिचय दूं। लेकिन मिस्टर! मेरा कोई परिचय नहीं। केवल अपना नाम जानती हूँ—आशा। इस के अलावा मैं कुछ नहीं जानती।"

"यह तो आप मेरे साथ अन्याय कर रही है। मुझ से तो सब कुछ पूछ लिया। लेकिन आप शायद मुझे अपना नाम भी सही नहीं बतला रही है ? क्यों, है न यही बात ?"

दिनेश ने निराश हो कर यह कहा तो आशा एक दम बोल उठी—'नहीं, यह बात नहीं है। लड़कियों को कभी अपना पूरा परिचय किसी को नहीं बतलाना चाहिए। आप का मुझ से मतलब है या मेरे खानदान से ?"

आशा ने आवेश मे आ कर यह बात कह तो दी, लेकिन फिर पछताती हुई सी सोचने लगी कि भला दिनेश क्या सोचता होगा।

दिनेश ने जब आशा की बात सुनी, तो बोला—"ठीक ही कह रही हैं आप भी। आप के विचार आधुनिक हैं। यही होना

भी चाहिए । मैं इसे बुरा नहीं मानता । चलिए, आप को घर तक छोड़ दूं।"

"नहीं, आप नाहक तकलीफ करेंगे । मुझे यहीं उतार दीजिए । मैं पानी थमते ही चली जाऊंगी। मुझे क्षमा कर दीजिए। आपके सब कपड़े खराब हो गये।"

यह कह कर आशा ने दाँये हाथ में साड़ी का आँचल लिया और दिनेश की टी-शर्ट का कीचड़ पोंछने लगी। दिनेश ने उस की कलाई पकड़ ली। फिर उस की मधुर भर्त्सना करता हुआ कहने लगा—"यह क्या करती हैं आप? मैं ने तो कुछ कहा नहीं था। चलिए, आप को मेस्टन रोड पर छोड़ दूं।"

आशा झेंप गई। उस ने हाथ छुड़ा लिया। फिर सड़क की ओर देखने लगी।

दिनेश घूम कर कार स्टार्ट करने लगा। आशा विचारों में खो गई। वह सोच रही थी कि शाम हो रही है। माँ जरूर मेरे लिए चिन्ता कर रही होंगी। मुझे जल्दी से घर पहुँचना चाहिए।

"कहाँ उतरना है आपको?"

दिनेश ने यह कहा तो आशा चौंक पड़ी। उस ने देखा गाड़ी मेस्टन रोड पर दौड़ रही थी। वह एक गली के पास दिनेश को टोकती हुई बोली—"बस, यहीं रोक दीजिए।"

दिनेश ने गाड़ी रोक दी। उस ने देखा, बादल धुल-पुंछ कर साफ हो गये थे। पानी बन्द था। आशा पिछली खिड़की खोल कर नीचे उतरी। फिर दिनेश के पास आ कर बोली—"धन्यवाद! आपने मेरी बहुत मदद की।"

यह कह कर आशा चल दी। तभी दिनेश ने उसे टोका—"सुनिये ! आप तो जा रही हैं ?"

आशा घूम कर दिनेश की ओर प्रश्न-सूचक निगाहों से देखने लगी। वह उस के पास आ गई और बोली—"कहिए !"

दिनेश असमंजस में पड़ गया। देर बाद उस के मुँह से निकला—"न जाने क्यों आप का जाना मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।"

आशा चौंक गई। वह व्यस्त स्वर में कहने लगी—"ओह ! तो यह बात है ! लेकिन इस का तो कोई उपाय नहीं। अगर हो, तो बताइये।"

दिनेश ने उस की यह बात सुनी तो उसे कुछ बल मिला। उस ने कह दिया—"क्या आप मुझे दुबारा नहीं मिल सकती हैं ?"

आशा ने कोई उत्तर नहीं दिया। तभी दिनेश फिर कहने लगा—"आप तो खुद समझदार है। अगर आप न चाहे तो कोई बात नहीं। लेकिन—"

आशा मुस्कराई। उस ने मुस्कराते हुए ही कहा—"लेकिन—।"

दिनेश ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। तब आशा यह कहती हुई चल दी—"ठीक है। कल इसी समय मैं यहाँ आपका इन्तजार करूँगी।"

दिनेश उसे तब तक देखता रहा जब तक वह उस की दृष्टि से ओझल नहीं हो गई।

आशा जब घर पहुँची, तो ऊपर पहुँचते ही वृद्धा उस के पास आ गई। वह व्यस्त स्वर में जल्दी-जल्दी कहने लगी—

"बड़ी देर लगा दी बेटी! मैं तो परेशान हो गई कि तुझे क्या हो गया?"

आशा ने झोला एक ओर रख दिया। फिर भयभीत स्वर मे कहने लगी—"माँ! मैं एक कार से टकरा कर गिर पड़ी थी। वही—।"

"कही चोट तो नही लगी? तभी मेरी बाँयी आँख फड़क रही थी। सारी साड़ी खराब हो गई। यह बरसात का मौसम तो बड़ा जान-लेवा होता है।"

वृद्धा ने जल्दी-जल्दी यह कहा। फिर आशा के सिर पर हाथ फेरने लगी। आशा ने उस का यह व्यापार देखा तो स्नेह से गद्‌गद हो उठी। उसके मुँह से सकुचित स्वर निकला—"नही माँ, चोट तो कही नही आया,लेकिन मैं पानी के कारण आ नही पायी।"

वृद्धा ने उस की यह बात सुनी तो व्यंगपूर्वक मुस्कराई और धीरे से उसके कपोल पर एक चपत जड़ती हुई बोली—"और यह लड़का कौन था। जिस को कार मे बैठ कर तू अभी-अभी आयी है?"

आशा ने यह सुना तो उस का चेहरा सफेद हो गया। उस ने यह सोचा ही नही था कि माँ ने दिनेश को देख लिया होगा। वह धीरे-धीरे झिझकती हुई कहने लगी—"उन्ही की कार से तो मेरा एक्सीडेन्ट हुआ था माँ! बेचारे बड़े शरीफ हैं। यहाँ तक छोड़ने चले आये।"

वृद्धा का चेहरा एकदम क्रोध से लाल हो गया। वह तेज गले से कहने लगी—"अभी तू यह कह रही है और कल कहेगी कि मुझे उस से प्यार हो गया है। बेवकूफ कही की!

क्या तू ने उसे अपने विषय मे बतलाया था ?"

आशा घबड़ा कर बोली—"मैंने उसे केवल अपना नाम बताया है। मैं—।"

वृद्धा ने यह सुना तो बोली—"कोई बात नही। लेकिन अब तू समझ ले। हमारे विषय म उसे कुछ भी न मालूम होने पाये। इस मे बदनामी है। तू उसे अपने आप को अनाथ बतला सकती है।"

"अच्छा।"

आशा ने जब यह स्वीकार किया, तो वृद्धा उसे फिर चेतावनी देती हुई बोली—"उस से तुम दुबारा उसी शर्त पर मिल सकती हो जबकि वह शादी का वचन दे दे, वर्ना पछताओगी।"

यह कहती हुई वृद्धा कमरे से बाहर चली गई।

आशा जा कर कपड़े बदलने लगी। कुछ देर बाद जब वह कमरे मे लौटी,तो उस के शरीर पर एक सफेद सूती साडी थी। और बालो की लटे खुली थी। वह उन्हे सुखाना चाहती थी।

आशा जा कर आदमकद आइने के सामने खडी हो गई। उस ने जब अपनी सूरत देखी, तो खुद ही शरमा गई। उस ने पलकें बन्द कर ली।

तभी उस के कानो मे दिनेश का स्वर गूँज उठा—"क्या आप मुझे दुबारा नही मिल सकती है ?"

आशा ने आँखें खोल दी। फिर प्रसन्नता से खुद ही बोल उठी—"दिनेश ! तुम अगर न भी चाहते, तो मैं खुद तुम से दुबारा मिलती !"

यह कह, आशा भविष्य के सुनहले स्वप्न देखने लगी। तभी उस के मन में कोई पुकार उठा—"सुरेश और उस बच्चे का क्या होगा ? तुम गलत कदम उठा रही हो।"

आशा ने दृढ स्वर में उसे उत्तर दिया। वह बोली—"सुरेश ने मेरी जिन्दगी बिगाड़ दी। अब मैं उसे भूल कर ही सुखी रह सकती हूँ। मैं नये सिरे से जीवन प्रारम्भ करूंगी।"

"लेकिन तुम सुरेश की अमानत हो !"

"कोई किसी की अमानत नहीं होता। जब सुरेश को मेरा खयाल नहीं। तो मैं उस के कारण अपनी जिन्दगी क्यों बर्बाद करूं।"

आशा ने यह कह कर अपने मन को समझाया। फिर उस की आंखों के सामने दिनेश की सूरत आ गई।

— ० —

दूसरे दिन शाम के छह बजते ही दिनेश की कार आ कर आशा के घर के सामने रुक गई।

वृद्धा ने ज्योंही कार का हार्न सुना, वह छज्जे पर आ कर झाँकने लगी। वह दिनेश को पहचान गई। उसने फौरन आशा को पुकारा। वह उस के सामने आ कर खड़ी हो गई।

आशा के वस्त्र देख कर वृद्धा चौंकी। फिर बोली—"अच्छा, तो तेरी पहले से ही तैयारी थी! जा, वह आ गया है।"

आशा ने सकोच के कारण सिर नीचे झुका लिया। फिर मन्द स्वर में बोली—"मैं जा रही हूँ, माँ! एक घण्टे में लौट आऊँगी। आप को शिकायत का मौका नहीं मिलेगा।"

वृद्धा ने मुँह बिचका कर उसे जाने की स्वीकृति दे दी। फिर छज्जे पर जा, दिनेश को घूरने लगी।

आशा जब दिनेश के पास पहुँची, तो वह दूसरी ओर देख रहा था। उस ने उसे एकदम से चौंका दिया। वह बोली—"इधर देखिये, साहब!"

दिनेश ने आशा को इस प्रकार बात करते देखा तो वह

भी निस्संकोच हो कर बोला—"कही चलना भी है या आप बाहर ही खड़ी रहेंगी ?"

आशा ने मुस्कराते हुए कहा—"नही। मैं भला आप के साथ क्यो जाऊँगी। आप ने मिलने के लिए कहा था, इसीलिए चली आयी। अच्छा, अब चलती हूँ।"

यह कह कर आशा पीछे घूम गई। दिनेश यह देख, घबड़ा गया। वह कार की खिड़की खोल,नीचे उतर आया। फिर आशा का हाथ पकड़, व्यस्त स्वर मे कहने लगा—"यह क्या ? आप अभी आयीं और अभी चल दी। कुछ देर तो रुकिये।"

आशा को अचानक अपनी माँ का खयाल आ गया। वह फौरन आगे बढ़, कार की अगली सीट पर बैठती हुई बोली—"अब आप ने रुकने के लिए कहा है तो रुक गई। चलिए, जहाँ चलना है आप को। आप संकोच मत करिये।"

दिनेश आ कर ड्राइविंग सीट पर बैठ गया। फिर कार स्टार्ट करता हुआ कहने लगा—"ओह ! तो यह बात थी।"

"हाँ।"

"पहले क्यो नही बता दिया कि आप हर काम में कहने का रास्ता देखा करती है !"

आशा ने यह सुना तो मुस्कराते हुए बोली—"अगर यह भी न करती तो आप कहते कि मैं बहुत बेशर्म हूँ, कहिए। पसन्द आयी आप को मेरी बात ?"

"क्यो नही। संकोच और लज्जा तो लड़कियो की अमानत है।"

"अच्छा, यह तो बतलाइये कि कहाँ चल रहे है। मैं तो आप की बातो म ही खो गई।"

दिनेश ने जब आशा के मुंह से यह सुना तो प्रसन्न हो कर बोला—"क्या वाकई में आप को मेरी बातें इतनी पसन्द आयी ?"

आशा ने कुछ जवाब नही दिया तो दिनेश कहने लगा—"जरा मोती भील तक चल रहा हूं। वहां कुछ देर बैठेंगे।"

"ठीक है, लेकिन—।"

"लेकिन क्या ?"

"कुछ नही।"

यह कह कर आशा चुप हो गई। दिनेश ने उस की ओर देखा। फिर बोला "आप चुप क्यों है ? अगर न चाहती हो, तो रहने दूं।"

यह कहते-कहते दिनेश ने कार की गति धीमी कर दी।

आशा ने यह देखा तो उस की गम्भीरता न जाने कहां चली गई। वह जल्दी-जल्दी कहने लगी—"बड़ी परवाह है आप को मेरी ! मोती भील चलिए। मैं ने मना कब किया है।"

दिनेश मुस्करा दिया। मोतीभील पहुंच कर दिनेश ने कार एक ओर खड़ी कर दी। फिर आशा का हाथ पकड़, हरी-हरी दूब पर जा बैठा।

वातावरण में हलका अंधेरा फैल रहा था। लेकिन फिर भी इस स्थान पर काफी चहल-पहल थी। आशा और दिनेश एक ओर भीड़ से दूर बैठे थे।

आशा ने चारों ओर देखते हुए कहा—"बड़ा सुन्दर स्थान है यह। आप चुप क्यों है ?"

दिनेश ने उस की ओर देखते हुए कहा—"मैं आप के बारे में सोच रहा था।"

"क्या ?"

"यही कि आप कितनी सरल हैं। क्या अकेली रहती है ?"

"हाँ।"

"और घर वाले—।"

अभी दिनेश की बात पूरी भी नही हो पायी थी कि आशा बीच मे बोल उठी—"फिर आप ने वही सवाल कर दिया। मैं अनाथ हूँ। अब अगर कभी आप मुझ से घर वालो के विषय मे पूछेंगे, तो मैं आप से नही मिलूँगी।"

दिनेश को बड़ा दुख हुआ। वह आशा की आँखों मे झाँकता हुआ बोला—"मुझे नही पता था कि आप बुरा मान जायेंगी। कोई बात नही। मैं उस के लिए आप से क्षमा माँगता हूँ।"

आशा को अपनी बात पर अफसोस हुआ। वह पश्चाताप भरे स्वर में जल्दी-जल्दी कहने लगी—"ओह ! मेरा यह मतलब नहीं था। मैं भी आप से आप के घर वालों के विषय में कुछ भी नही पूछती, लेकिन आप ने खुद कुछ नहीं छिपाया।"

दिनेश गम्भीर हो गया। उस के मुँह से उदासी में डूबा स्वर निकला—"मैं तो इस प्रकार आप से घनिष्ट सम्पर्क स्थापित करना चाहता था। अच्छा, एक बात का जवाब दीजिए।"

"क्या ?"

"शायद आप चाहती है कि हमारी दोस्ती बस यही तक सीमित रहे। क्या मेरा अनुमान सच है, आशा ?"

आशा भौचक्की-सी रह गई। उसे नहीं मालूम था कि छोटी-सी बात यहाँ तक पहुँच जायेगी। वह दिनेश के प्रश्न का उत्तर अपने मस्तिष्क में खोजने लगी।

दिनेश गम्भीरता की मूर्ति बना, एकटक आशा की ओर देख रहा था। धीरे-धीरे आशा के गुलाबी और पतले होठ हिले। उस की दृष्टि नीची थी और वह धीरे से कह रही थी—"दिनेश बाबू! आप मुझे समझ नहीं पाये! आप जितनी भी जल्दी हो सके, मुझ से शादी कर लीजिए। समाज की दृष्टि में यही उचित रहेगा।"

दिनेश को लगा कि आशा के मुंह से फूल झर रहे हैं। उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। वह दाहिने हाथ से आशा की ठुड्डी ऊपर उठाता हुआ बोला—"एक बार फिर कहो, आशा! मुझे लग रहा है कि मैं खुशी से पागल हो जाऊँगा।"

लेकिन आशा ने पलकें नहीं खोलीं।

दिनेश ने बाँये हाथ से उस की आँखें खोलनी चाहीं तो आशा ने अपना सिर दिनेश के कन्धे पर टिका दिया। कुछ देर तक वह उसी तरह बेसुध रही। फिर एक दम से उठ कर खड़ी हो गई।

दिनेश ने उस की ओर आश्चर्य से देखा। फिर व्यस्त स्वर में कहने लगा—"बैठो भी। इतनी जल्दी क्या है?"

लेकिन आशा रुकी नहीं तो दिनेश भी उस के पीछे लपका। आशा दौड़ती हुई कार के पास आयी और उस के भीतर बैठ, हाँफने लगी।

दिनेश ने ड्राईविंग सीट पर बैठते हुए कहा—"बहुत शर्मीली हो तुम !"

× × × ×

आज इतवार का दिन था। आशा ने जल्दी-जल्दी घर का सारा काम निबटाया। फिर दस बजे के पहले ही कपड़े बदलने लगी।

कुछ देर बाद वह अपनी माँ के पास पहुँची और धीरे से बोली—

"माँ ! मैं जा रही हूँ दिनेश के घर।"

वृद्धा चौंक गई। उस के मुँह से निकला—"घर ! तू पागल तो नहीं हो गई है ?"

"नहीं माँ ! आज मैं फैसला कर के लौटूँगी।"

आशा ने दृढ़ स्वर में यह कहा तो वृद्धा उस के पास मुँह ले जाकर धीरे से बोली—"यह आखिरी मौका है। इस के बाद मैं तुझे दिनेश से नहीं मिलने दूँगी। मेरी बात का ध्यान रखना कि तुम अपने को अनाथ बताओगी।"

आशा ने 'हाँ' द्योतक सिर हिलाया। फिर सीढ़ियाँ उतरती हुई सड़क पर आ कर खड़ी हो गई। वह कुछ परेशान-सी थी। उस ने कलाई पर बँधी घड़ी देखी तो दस बजे थे।

"ओह ! बहुत देर हो गई।"

आशा ने ऊब कर यह कहा। तभी दूर से उस ने दिनेश की कार आते देखी। वह प्रसन्नता से उछल पड़ी।

दिनेश ने उस के पास आ, गाड़ी रोक दी, फिर खिड़की

से गिर निकाल कर बोला—"देर से आने के लिए माफी चाहता हूँ मेमसाहब ! गाडी के अन्दर आ जाइये ।"

आशा ने कुछ भी जवाब नही दिया। वह गुमसुम-सी जा कर कार मे बैठ गई।

दिनेश ने कार स्टार्ट की । उसे आशा की चुप्पी अच्छी नहीं लगी।

"अगर चुप ही रहना था, तो फिर—"

"कौन चुप है ? तुम कुछ बोलो तो उसका जवाब दूँ। कैसी हैं आप की माता जी ? मेरे ऊपर नाराज तो नहीं होवेंगी कि—।"

आशा ने तेजी मे बोलना प्रारम्भ किया था, लेकिन फिर उस ने अपनी बात अधूरी छोड दी।

दिनेश ने उसे प्रोत्साहन दिया—"चुप क्यों हो गई ? बात पूरी करो ?"

आशा ने एक बार उस की ओर देखा । फिर धीरे से बोली—"कि मैं ने उन का पुत्र उन से छीन लिया ?"

यह सुन कर दिनेश जोर से हँस पड़ा और हँसते-हँसते बोला—"तुमने मुझे नही छीना, मैं तुम्हे चुरा लाया हूँ और डरता हूँ कि तुम्हें किसी की नजर न लग जाये।"

आशा ने यह सुना तो मुस्करा दी। कुछ ही देर मे कार छावनी पहुँच गई ।

दिनेश जब आशा को ले कर कार से उतरा, तो नौकरों-नौकरानियो की एक भारी भीड ने आ कर उन दोनों को घेर लिया।

राधा हाल में खड़ी थी। उस ने जब दिनेश के साथ आशा को देखा, तो आश्चर्य में पड़ गई।

दिनेश आशा को राधा के पास ले आया। जब आशा ने झुक कर उस के चरण स्पर्श किये, तो वह हर्ष से गद्गद् हो उठी। उस का अंतःकरण कह रहा था –"भगवान ने अपने आप चाँद-सी बहू भेज दी। इसे स्वीकार कर लो।"

राधा ने आशा को उठा कर वक्ष से लगा लिया। फिर उसे ले जा कर सोफे पर बैठती हुई दिनेश से बोली—'क्यों रे दिनेश! तू ने चोरी-चोरी इतनी सुन्दर बहू पसन्द कर ली।"

यह कह कर उस ने आशा का माथा चूम लिया। फिर चम्पा से बोली—"जा, डिनर टेबिल सजा दे। आज मेरे घर ऐसी मेहमान आयी है कि मैं बहुत खुश हूँ। यह दिनेश तो कभी शादी के लिए राजी हो नहीं होता था। आज इसे जाने क्या हो गया है?"

चम्पा जाते-जाते बोली—"बहूरानी की सूरत ही ऐसी है, मालकिन! बबुआ ने उन्हें देखा और फौरन लट्टू हो गये।"

डिनर टेबिल पर आशा को राधा ने अपनी बगल में बैठाया। आशा को सकोच ने घेर रक्खा था। उसे लग रहा था कि वह स्वर्ग में आ गई है। राधा उसे देवी-तुल्य प्रतीत हो रही थी और दिनेश देवता-तुल्य।

आशा ने सकोच के कारण ठीक से खाना नहीं खाया।

डिनर के बाद राधा ने आशा के गले में हीरों का एक जड़ाऊ हार पहना दिया। फिर दिनेश से बोली—"इसे आँखों के सामने से दूर करने की इच्छा नहीं होती।"

दिनेश ने माँ को कुछ भी जवाब नहीं दिया।

कुछ देर बाद दिनेश आशा को ले कर चल दिया। आशा ने उस से कहा—"आज मैं बहुत खुश हूँ।"

दिनेश ने कार की गति तेज करते हुए कहा—"तो फिर तुम अभी घर न जाओ। या फिर मैं भी तुम्हारे घर चलूँगा।"

दिनेश की यह बात सुन कर आशा के चेहरे पर चिन्ता के बादल छा गये। वह धीरे से बोली—"घर चल कर क्या करोगे। मुझे फिर मैं देखने का बहुत शौक है। मैं ।"

आशा ने यह बात इसलिए कही थी कि जिस से दिनेश उस के घर न जाए। वह अपनी बात अधूरी छोड़, दिनेश की ओर देखने लगी।

दिनेश ने उस की बात सिर आँखों पर ली। वे रीगल सिनेमा के सामने जा कर रुके। फिल्म थी 'वार एण्ड पीस'।

× × × ×

आशा जब घर पहुँची, तो उस के बायें हाथ की एक उँगली में दिनेश की दी हुई अँगूठी थी। वह मन में सोच रही थी कि कितने सरल हैं ये दोनों माँ-बेटे। कीमती आभूषण मुझे पहना दिये और मेरे आने तक उफ तक न की। कितना विशाल हृदय है दिनेश और उस की माँ का।

तभी आशा के मन में एक विचार कौंधा। वह घर की सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। उस ने गले के हार को उतार कर पर्स में रख लिया। फिर अँगूठी को भी उतारने लगी।

लेकिन तभी उसे ऊपर कुछ आहट सुनाई दी। उस ने अँगूठी नहीं उतारी और ऊपर आ पहुँची।

गौरी उस के सामने खड़ी थी। उसे देखते ही भौहों में बल डाल कर उस से कहने लगी—"तुम ने आज-कल फिर आवारागर्दी शुरू कर दी है। माँ ने मुझे बताया था। अपने आप को सँभालो।"

आशा रोज तो गौरी की बातें चुपचाप सुन लेती थी, लेकिन आज वे उसे बुरी लगीं। उस ने धीरे से कह डाला—"तुम चिन्ता क्यों करती हो, गौरी बहन! माँ इस बारे में सब कुछ जानती हैं। उन्हीं की राय के मुताबिक मैं चल रही हूँ।"

गौरी को यह जवाब बहुत बुरा लगा। वह तेज गले से बोली—"यह तुम्हारी बहुत खराब आदत है, आशा। एक तो गलत काम करती हो और ऊपर से आँखें दिखाती हो। मैं—"

यह कहते-कहते गौरी की दृष्टि आशा की अँगूठी पर पड़ गई, जिसे वह दूसरे हाथ की उँगलियों से ढके थी, लेकिन हीरा दमदमा रहा था। उस से तेज प्रकाश की किरणें निकल रही थीं। गौरी का मुँह खुला का खुला रह गया। वह कुछ क्षण तक आश्चर्य-चकित सी अँगूठी को ओर देखती रही।

फिर वह आशा के पास आ गई और उस का बाँया हाथ उठा, आँखों के पास ला, देखती हुई बोली—"ओ माँ! हीरा है शायद! माँ! ओ माँ! जल्दी आओ।"

गौरी ने शोर मचा दिया। आशा की स्थिति उस चोर की भाँति थी जिसे रंगे हाथों पकड़ा गया हो।

"क्या है री? क्यों शोर मचा रक्खा है?"

यह कहती हुई वृद्धा वहाँ आ गई! उस ने जब यह परि-स्थिति देखी, तो तेज गले से बोली—"गौरी! तुझे तो जरा

भी बुद्धि नहीं है। ऐसी बातें कहा बाहर खड़े हो कर की जाती है। भीतर आ।"

वृद्धा उन दोनों को कमरे में लिवा ले गई। फिर एक कुरसी पर बैठ,गौरी की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगी।

गौरी ने एक झटके के साथ आशा की उँगली से अँगूठी निकाल ली। फिर उसे वृद्धा की ओर बढ़ाते हुए उस ने प्रश्न-सूचक दृष्टि से आशा को देखा।

वृद्धा अँगूठी को देर तक देखती रही। फिर बोली—"असली हीरा है इस पर।"

यह कह, वृद्धा ने अँगूठी अपनी टेंट में रख ली। फिर आशा का हाथ पकड़, उसे अपनी ओर खींचती हुई बोली—"क्या हुआ,आशा बेटी ? मुझे सारा हाल जल्दी से बता डालो।"

आशा को वृद्धा और गौरी के व्यवहार ने बहुत चौंका दिया था। उस का दिल तेजी से धड़क रहा था कि जाने इन दोनों के मन में क्या है।"

जब वृद्धा ने प्यार से उसे मेज पर बैठा दिया, तो वह धीरे-धीरे कहने लगी—'मैं दिनेश बाबू के घर गई थी,माँ! शादी करने के लिए राजी हैं। यह अँगूठा उन्हों ने मुझे पहनाई थी।"

वृद्धा ने यह सुना तो शान्त स्वर में बोली—"ठीक है! वे लोग तो तेरी गोरी चमड़ी देख कर ब्याह के लिए राजी हैं। उन्हें क्या मालूम कि तेरे भीतर अन्य क्या गुण है।"

आशा ने यह सुना तो उसे जमीन-आसमान नज़र आ गया।

वृद्धा गौरी के साथ उस कमरे से चली गई। आशा के सामने एक प्रश्न उत्पन्न हो गया कि क्या अब उसे अँगूठी वापस नहीं मिलेगी ? यदि ऐसा हुआ, तो वह दिनेश को क्या जवाब देगी कि वह उस की पहली भेंट को ही सुरक्षित नहीं रख पायी।

आशा के दिमाग में जैसे ही यह बात आयी, उस ने पर्स को अपने आँचल में छिपा लिया। उस के मन में किसी ने कहा—"अगर तू वह हार पर्स में न रख लेती, तो वह भी माँ अपने कब्जे में कर लेती।"

आशा ने ईश्वर को लाख-लाख धन्यवाद दिये। फिर अपने कपड़ों के बाच जा कर वह हार रख दिया।

शाम को जब आशा, गौरी और माँ के साथ नाश्ते को मेज पर बैठी, तो गौरी ने उस से पूछ लिया—"कब कर रही हो शादी, आशा ?"

आशा ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। गौरी ने ही फिर पूछा—"रही शादी के बाद अपने बच्चे को तो नहीं भूल जाओगी ?"

गौरी ने आशा के मर्म पर चोट की थी। उस की आँखों से आँसू बहने लगे। वृद्धा ने यह देखा तो गौरी को डाँटने लगी—"तू बहुत बोलती है, गौरी ! कुछ तो लिहाज किया कर !"

आशा ने माँ का रुख अपनी ओर मुलायम देखा तो धीरे से डरते से पूछ लिया—"माँ ! वह अँगूठी—।"

"कैसी अगूठी ?"

"जो मुझे—।"

वृद्धा ने आशा की बात पूरी नहीं होने दी और जल्दी-जल्दी उस के सामने अपना मत प्रस्तुत करने लगी। वह बोली—"वह अँगूठी कीमती हीरे की है, यह तो तुम भी जानती होगी। अब सवाल यह है कि उस का किया क्या जाए। गौरी तो मुझे हर माह साढ़े चार सौ रुपये तनख्वाह के ला कर देती है, लेकिन तू ने मुझे कभी कुछ नहीं दिया। क्या मैं झूठ कह रही हूँ ?

यह कह कर वृद्धा ने एक प्रश्न-सूचक दृष्टि आशा पर डाली।

आशा ने धीरे से जवाब दिया—"आप ठीक कहती हैं।"

"तो फिर मान ले कि तेरा मेरे प्रति क्या कर्तव्य है। तुझे अपनी बहन गौरी के लिए कुछ करना चाहिए। आखिर उस की भी शादी करनी है। और तेरे बच्चे के ऊपर भी तो मैं खर्च कर रही हूँ।"

वृद्धा की यह बात सुन कर आशा को यकीन हो गया कि उसे अँगूठी वापस नहीं मिलेगी। उस ने मुर्दा स्वर में कहा—"लेकिन दिनेश बाबू इस के विषय में पूछेंगे तो—"

आगे आशा कुछ नहीं बोली। तभी वृद्धा उसकी ओर प्यार-भरी दृष्टि से देखते हुए कहने लगी—"मैं भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हूँ बेटी! तेरा हमारे ऊपर ऐहसान भी हो जाए और तेरा काम भी बन जाए, मैं ऐसा रास्ता ढूंढ रही हूँ। मैं 'लिली ज्यूलरी' से बिलकुल इसी तरह की अँगूठी ला कर तुझे दूंगी। कोई भी शक नहीं कर पायेगा।"

अपनी बात कह कर वृद्धा ने उस का प्रभाव आशा पर देखा। वह किंकर्तव्यविमूढ़-सी बैठी थी। वृद्धा फिर बोली—

"कहीं तू बुरा तो नहीं मान गई बेटी ? तू तो अब जा कर सोने और चाँदी से खेलेगी। आखिर हम लोगों के लिए भी तो तुझे कुछ करना चाहिए।"

गोरी अब तक चुप थी। अब उसने अपनी बात कही—"जब आशा का मन नहीं है माँ ! तो अँगूठी उसे वापस क्यों नहीं कर देती हो ?"

आशा को लगा, गोरी उस पर व्यंग्य कर रही है। वह धीरे से बोली—"मैं बुरा नहीं मानती बहन ! यह अँगूठी तो अब तुम्हारे लिए है। हाँ, खूबसूरती बनी रहे, बस—।"

"इस के लिए तू चिन्ता न कर बेटी। हाँ, एक बात और रह गई है ?

"क्या माँ ?"

आशा ने उत्सुक हो कर पूछा। उसे लगा कि उस के ऊपर कोई नई बिजली गिरने वाली है।

वृद्धा धीरे से बोली—"बच्चे के प्रबन्ध के लिए तुझे शादी के बाद हमें रुपये देने होंगे; नहीं तो तुम्हारा बच्चा है, तुम्हारी जिम्मेदारी।"

आशा ने यह सुना तो वह सन्नाटे में आ गई। उस के मुँह से निकला—"यह भी ठीक है, माँ।"

वृद्धा ने प्रसन्न हो कर आशा को गले से लगा लिया।

× × × ×

राधा ने जब दिनेश से आशा के घर वालों के लिए पूछा, तो उस ने उसे अनाथ बतलाया और कहा कि वह बहुत

गरीब लडकी है। खुद नौकरी कर के अपना पेट पालती है।

राधा ने प्रारम्भ मे विरोध किया। उस का दिनेश से कहना था—"तू सुन्दरता के ऊपर न जा, बेटा! मैं तेरे लिए एक से एक सुन्दर लडकी लाऊँगी। तू आशा का ख्याल छोड दे। उस के कुल का पता नहीं।"

लेकिन दिनेश ने माँ को एक ही जवाब दिया—"माँ! मैं शादी करूँगा तो आशा से ही, वर्ना आजीवन कुँवारा रहूँगा।"

अन्त मे राधा मजबूर हो गई और दिनेश का आशा से ब्याह हो गया। वह उसे दुलहिन बना कर घर से आया।

आशा की शादी एक धर्मशाला से हुई। वर तथा कन्या दोनो पक्षों की ओर राधा का प्रबन्ध था। आशा को राधा ने घर आते ही गहनों से लाद दिया। वह उस का बहुत खयाल रखती। कभी कोई भी काम नही करने देती।

आशा ने भी सास की खूब सेवा की। उस ने राधा क मन जीत लिया।

लेकिन ब्याह के कुछ ही दिनों बाद से गौरी तथा उस की माँ ने आशा से रकम ऐंठना शुरू कर दिया। जब कभी वह इन्कार करती, तो उसे धमकी मिलती कि उस का बच्चे वाला भेद खोल दिया जायेगा।

ब्याह के बाद आशा को सब तरह के सुख थे, लेकिन गौरी की चिन्ता उसे लगी रहती, क्योंकि उसे अब यह लगने लगा था कि रुपया न मिलने पर वह उस का भेद खोल दे सकती है। आशा को यह पता था कि बच्चे को पालने मे ज्यादा से

ज्यादा पाँच सौ रुपये महीना खर्च होता होगा, लेकिन गौरी उस से एक ही महीने में पाँच हजार रुपये ले जाती।

कभी-कभी उससे अधिक रुपयों की माँग होती। वह झुँझला उठती, लेकिन भविष्य की बदनामी से डर कर वह अपना घर बर्बाद कर रही थी।

आखिर आशा की आशंका एक दिन सच हो गई।

जिस दिन गौरी तीसरे पहर आशा से उस का लाकेट ले गई, तो आशा ने उस से रात को होटल में मिलने के लिए कहा। उस ने सोच लिया था कि चाहे उसे चोरी करनी पड़े, वह गौरी को पाँच हजार रुपये देगी; क्योंकि नगद रुपये के बजाय आभूषणों के विषय में राधा उस से पूछ सकती थी।

आशा की योजना थी कि दिनेश के सोने के बाद वह तिजोरी से रुपये निकालेगी।

लेकिन दिनेश ने उसे वही लाकेट पहना दिया, जिसे उस के हाथों से गौरी ले गई थी। उसे जमीन-आसमान नजर आ गया। वह घबड़ा गई। उस का कार्य-क्रम ही बिगड़ गया।

गौरी ने सब्र नहीं किया और दूसरे ही दिन भरी पार्टी में उस की इज्जत पर कीचड़ उछाल दिया। उस की बेइज्जती हुई और वह घर से निकाली गई।

× × × ×

आशा उठ कर बैठ गई। उस ने सुना—दूर कहीं मुर्गा बोल रहा था; लेकिन उस के शरीर में जैसे जान ही नहीं रही थी वह निढाल थी।

आशा को दिनेश का ख्याल आ रहा था कि वह मुझे कितना प्यार करता था, लेकिन अब बदल गया। माँजी ने कोठी से निकाल दिया और वह पास भी नहीं आया।

इस समय आशा को सबसे घृणा हो गई। वह सोचने लगी कि दिनेश के घर के द्वार अब उस के लिए बन्द हो चुके हैं। उस घर में अब उस के लिए कोई गुंजायश नहीं रही है।

तभी उसे ख्याल आ गया गौरी और माँ का। वह उन दोनों के लिए क्रोध से पागल हो उठी। उसे लगा कि उन का प्रेम केवल एक दिखावा है। उस के भीतर स्वार्थ छिपा है। क्या वे लोग एक दिन भी सब्र नहीं कर सकती थीं।

प्राची में अब हलकी-सी लालिमा दिखलाई दे रही थी। सड़क पर यातायात चल रहा था। आशा ने जब वातावरण का यह रूप देखा, तो उठ कर खड़ी हुई।

लेकिन उस के कदम लड़खड़ाये। उसने दीवाल की टेक ले ली। फिर जब कुछ सयत हुई, तो एक अनिश्चित दिशा की ओर चल दी।

आशा को इस समय यही धुन थी कि वह जल्दी से जल्दी कहीं दूर चली जाए। वह लपकती चली जा रही थी।

काफी दूर चली जाने के बाद अचानक उस के मस्तिष्क में कोई जोर से पुकार उठा—"आशा! तू कहाँ जा रही है?"

"मुझे नहीं मालूम!"

"तू जिस अज्ञात मंजिल की ओर चल पड़ी है, उस पर दिनेश और गौरी तुझे फिर मिल सकते हैं।"

"नहीं, मैं बहुत दूर चली जाऊँगी। उन लोगों से दूर।"

"लेकिन अब तू जी कर क्या करेगी? अब क्या रह गया है तेरे जीवन में?"

अब आशा सोच में पड़ गई। कुछ देर बाद उस ने मन को जवाब दिया—"मेरा बेटा जो है। मैं उसे देख कर ही जीवन गुजारूँगी। कभी-कभी उसे देख आऊँगी।"

"लेकिन अब तो वह गोरी के पास है। वही उस के भविष्य का निर्माण करेगी क्योंकि वह उसे बहुत स्नेह करती है। तेरा जीवन अब व्यर्थ है।"

आशा को इस के उत्तर में कोई तर्क नहीं सूझा। वह देर तक चलती रही। फिर धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगी—"आत्म-हत्या करना पाप है।"

फौरन उस के मन ने उत्तर दिया—"पाप किसे कहते हैं, यह तू नहीं जानती। जीवन से दुखी, मुसीबत के मारे लोगों का सहारा आत्म-हत्या ही है।"

आशा ने अपने मन को कुछ भी जवाब नहीं दिया। अचानक उस के पैर में एक ठोकर लगी। वह मुँह के बल गिर पड़ी।

कुछ देर बाद उठी तो उस के दाहिने पैर के अँगूठे से खून बह रहा था। उस ने एक सिसकी ली; फिर उठ कर खड़ी हो गई।

सामने गंगा का विशाल पुल था। कई कारें उस पर से गुजर रही थीं। सूर्य का प्रकाश अब खुल कर फैल चुका था।

आशा पुल के एक ओर जा कर खड़ी हो गई।

देर तक वहीं खड़ी रही आशा। फिर उस ने अपने विचारों को दृढ़ किया और धीरे-धीरे बुदबुदाने लगी—"हे गंगा माँ! मेरे बेटे का जीवन सुखी रखना। दिनेश की उम्र लम्बी करो। मुझे अपनी शरण में ले लो।"

आशा ने एक बार चारों ओर दृष्टि फिराई। उसे पैदल कोई भी व्यक्ति आता दिखलाई नहीं दिया। उस ने एक नज़र से गंगा के जल को देखा। फिर आँख बन्द कर के पुल से नीचे कूद पड़ी।

पुल पर जा रही एक कार के चालक ने यह दृश्य देखा। उस ने गाड़ी रोक दी और नीचे झाँकने लगा। उस ने देखा कि वह जल में डुबकियाँ ले रही थी। देर तक वह खड़ा रहा। फिर चल दिया।

× × ×

दिनेश ऊपर चला गया और अपने कमरे में जा कर उस ने किवाड़ बन्द कर लिये। उसे आशा पर अत्यधिक क्रोध था कि उस ने उस से बच्चे वाला भेद क्यों छिपाया। उस का चरित्र गिरा हुआ था, तभी मेरे साथ विवाह किया और मेरे घर की दौलत को बर्बाद करती रही।

काफी देर तक वह आराम कुरसी पर लेटा रहा। तभी उस के मन में एक खयाल आया कि आशा ने जो कुछ भी किया, अपनी पिछली उम्र में। अब वह केवल मेरी है।

यह सोचते ही दिनेश उठ कर बैठ गया। उस ने अपने मन को समझाया—"आशा कितनी भी खराब हो, आखिर वह

मेरी पत्नी है और मैं उसे अब भी प्यार करता हूँ। घर के बाहर निकलने पर बेचारी क्या करेगी। इस का केवल एक ही उपाय है कि मैं गोरी को ज्यादा से ज्यादा रुपये दे कर उस का मुँह बन्द कर दूँ। मैं आशा को खोना नहीं चाहता, किसी भी कीमत पर।"

यह बात मन में आते ही दिनेश उठ कर खड़ा हो गया। उस ने किवाड़ खोले और तेजी से लपकता हुआ नीचे हाल में पहुँचा।

वहाँ सन्नाटा साँय-साँय कर रहा था। वह बौखला उठा। तभी उसे जीने के ऊपर राधा खड़ी नज़र आयी। वह उस की ओर बढ़ा और व्यस्त गले से पूछने लगा—"आशा कहाँ चली गई, माँ?"

राधा सीढ़ियाँ उतरती हुई कहने लगी—"मैं नहीं जानती कि वह कहाँ गई। गलती की थी उस ने। उस का मुँह काला था। इसीलिए हमारा सामना नहीं कर पायी। वह खुद ही बच्चे को लेकर चली गई। तू उस के लिए क्यों सोच करता है, बेटा? वह घर का कलंक थी। चली गई, यह अच्छा ही हुआ।"

दिनेश ने यह सुना तो उसे बहुत बुरा लगा। वह जोर से चीख उठा—"हाँ, हाँ, वह घर का कलक थी। चली गई, यह अच्छा ही हुआ। वर्ना मैं उसे···।"

दिनेश ने अपनी बात पूरी नहीं की। वह लपकता हुआ बाहर की ओर चल दिया। राधा उस के पीछे भागी। वह कह रही थी—"तू कहाँ जा रहा है, दिनेश! आशा के पीछे मत जा। उसे जाने दे। दिनेश! रुक जा।"

लेकिन दिनेश ने जैसे राधा की बात सुनी ही नही। वह पोर्टिको मे खड़ी कार के पास आ गया और उसे स्टार्ट करने लगा।

राधा उस के पीछे दौडी। वह उसे पुकार रही थी—"रुक जा, दिनेश! रुक जा!"

लेकिन दिनेश नही रुका। वह गाडी ले कर पोर्टिको से बाहर निकल आया। राधा पुकारती ही रही।

सब से पहले दिनेश मेस्टन रोड गया। उस का ख्याल था कि आशा जहाँ शादी से पहले रहती थी, वही गई होगी। वह सड़क पर गाडी को धीरे-धीरे चला रहा था। उस की दृष्टि दोनो ओर की पटरियों पर थी।

लेकिन उसे रास्ते भर मे कही भी आशा नही दिखलाई दी। वह परेशान हो गया। वह लौट पड़ा। उस ने एक घण्टे के भीतर हर तरफ की खाक छान डाली, लेकिन जब उसे कही पर भी आशा नही मिली, तो परेशान हो गया। उस की समझ मे नही आ रहा था कि आशा कहाँ चली गई।

तभी दिनेश के मन मे एक नये विचार ने जन्म लिया। वह सोचने लगा कि कही आशा ने आत्महत्या न कर ली हो।

यह सोचते ही दिनेश पागल-सा हो गया। आशा की हर खराबी उसे स्वीकार थी, लेकिन वह उस की मौत बर्दाश्त नही कर सकता था।

कुछ देर और कोशिश की दिनेश ने। वह गंगा के पुल पर भी गया। अत में सड़को की खाक छान कर घर पर लौट आया।

राधा नौकरों सहित बड़ी परेशानी से उस की प्रतीक्षा कर रही थी। उसे देखते ही बोली—"कहाँ चला गया था ? कमान से निकला हुआ तीर फिर उस में वापस नहीं आता। तू आशा को ढूंढने गया था, लेकिन अब उस के लिए इस घर में कोई स्थान नहीं है।"

दिनेश ने राधा की बात को अनसुनी कर दी और तेजी के साथ अपने कमरे में चला गया। उस ने भीतर से किवाड़ बन्द कर लिये। बाहर राधा उसे पुकारती ही रह गई।

परेशान हो कर राधा चली गई। दिनेश ने आशा के चित्र को उठा लिया। फिर उस से क्षमा माँगता हुआ धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगा—"मुझे माफ कर दो, आशा ! मैं तुम्हें ढूंढ नहीं पाया। तुम वापस आ जाओ।"

देर तक दिनेश उस चित्र से बातें करता रहा। फिर थक कर आराम कुरसी पर लेट गया।

सुबह भी जब दिनेश ने दरवाजा नहीं खोला, तो राधा परेशान हो गई। वह आ कर किवाड़ पीटने लगी। देर बाद दिनेश उस के सामने आया और बोला—"मुझे परेशान मत करो, माँ।"

यह कह कर वह फिर भीतर जाने लगा। राधा ने उस की बाँह पकड़ ली और तनिक खीझे हुए स्वर में बोली—"तू क्या चाहता है, दिनेश ! आशा के पीछे तू दुख मना रहा है। यह तो बेवकूफी है। जो बात हो गई, अब उस का सोच करने से क्या फायदा ?"

दिनेश ने अपनी बाँह छुड़ा ली; फिर झुंझला उठा—

"मुझे आशा चाहिए माँ,आशा ! नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगा। मैं उस के बिना नहीं रह सकता।"

यह कह कर दिनेश ने भीतर से दरवाजा बन्द कर लिया।

× × × ×

तीन दिन तक दिनेश अपने कमरे में बन्द रहा। उस ने कुछ भी नहीं खाया। चौथे दिन उस के मन ने कहा—'आखिर इस तरह से कब तक चलेगा। हर वस्तु की एक सीमा होती है। इस तरह से घर में बन्द रहने से तो आशा मिल नहीं जायेगी।"

दिनेश को यह बात उचित प्रतीत हुई। उस ने तीसरे पहर नहाया। फिर भोजन किया।

राधा को भी खुशी हुई। उसे समझाती हुई वह कहने लगी—"अब जा कर तुझे बुद्धि आया। मैं पहले ही समझाती थी। यह सब बेकार है कि तू आशा जैसी के लिए दुख करे और अपनी तन्दुरुस्ती खराब करे। जाने क्या हो गया था तुझे ?"

दिनेश को राधा की बातें अच्छी नहीं लगी। वह धीरे से बोला—"आशा का नाम न लो, माँ ! मैं उस के लिए कुछ भी नहीं सुनना चाहता। जो होना था, हो गया।"

राधा ने पुत्र की यह बात सुनी तो उसे प्रसन्नता हुई। वह तो यही चाहती थी कि दिनेश किसी तरह आशा को भूल जाए। वह धीरे-धीरे कहने लगी—"तेरा जी ऊब गया होगा। जा, घूम आ जा कर।"

दिनेश ने माँ को कुछ जवाब नहीं दिया। वह कुछ सोचता रहा। तभी उस ने सामने से चम्पा को जाते देखा। उस ने उसे टोक दिया—"कहाँ जा रही है, चम्पा ?"

चम्पा रुक गई। वह दिनेश के पास आ कर बोली—"कहीं नहीं बबुआ ! मुझ को तमाम काम करने हैं।"

दिनेश ने उस से कहा—"जरा देर रुक जा। मुझे तुझ से कुछ बात करनी है।"

चम्पा की समझ में नहीं आया कि दिनेश उस से क्या बात करेगा। वह किंकर्तव्यविमूढ़-सी वहीं फर्श पर बिछे कालीन पर बैठ गई, फिर धीरे-धीरे कहने लगी—"क्या बात है, बबुआ ? क्या कहना है मुझ से ?"

दिनेश मुस्कराया। उस ने एक बार राधा की ओर देखा; फिर चम्पा से बोला—"क्यों री चम्पा ! तू उस दिन अपने लिए लड़का पसन्द करने गई थी। वह तुझे पसन्द तो था। फिर शादी क्यों नहीं की ?"

चम्पा यह सुनते ही उदास हो गई। वह धीरे-धीरे कहने लगी—"बबुआ ! वह लड़का बेवकूफ था। वह मुझ से डर गया। उसने शादी से इन्कार कर दिया। तब जानते हो बबुआ, मैं ने क्या किया ?"

"क्या ?"

"मैं ने उस की खूब पिटाई की। वह भी मुझे याद रक्खेगा। मैं ने उस की हालत बिगाड़ दी। एक बात है, बबुआ !"

दिनेश को चम्पा की बात सुन कर हँसी आ गई। उसने देखा कि आखिरी बात कहते-कहते चम्पा कुछ उदास हो गई। वह

उसे प्रोत्साहन देता हुआ बोला—"बोलो चम्पा ! रुक क्यों गई ?"

"बहुआ ! मालकिन ने मुझ से कहा था कि भोला के साथ वे मेरी शादी करेंगी, लेकिन—।"

"लेकिन क्या चम्पा ?"

राधा ने चम्पा से प्रश्न कर दिया। यह सुन, चम्पा धीरे-धीरे कहने लगी—"बहूरानी चली गईं। इसीलिए मुझे दुख हो गया है। वे—।"

"हाँ मालकिन ! बहूरानी के चले जाने से घर सूना-सूना हो गया है। वे न जातीं, तो कितना अच्छा होता !"

यह कहता हुआ भोला राधा के पास आ कर खड़ा हो गया।

राधा ने जब चम्पा और भोला की बातें सुनी, तो उसे क्रोध आ गया। वह तनिक झुंझला कर बोली—"चुप रहो। बहूरानी-बहूरानी लगा रखा है। खबरदार ! जो उस का नाम लिया। भोला ! तू अब तैयार हो जा ! मैं तेरा ब्याह चम्पा के साथ कर रही हूँ।"

भोला ने जब ब्याह का नाम सुना, तो सकपका गया। उस ने कुछ भी जवाब नहीं दिया और उठ कर चल दिया।

चम्पा ने उस की यह हरकत देखी तो जल्दी-जल्दी कहने लगी—"देखा मालकिन ! यह मुआ मेरे साथ शादी नहीं करेगा। इसीलिए जा रहा है।"

राधा मुस्कराई। उस के मुँह से निकला—"तू फिक्र क्यों करती है ? मैं तो करवाऊँगी तेरा ब्याह भोला के साथ।

तू उस मे बिलकुल न डर।

"मालकिन ! मैं नही डरती भोला से।"

दिनेश ने भी अपना योग दिया—"तू भला क्यों डरेगी उस से ! तू उस से शरीर मे दुगुनी नही है ?"

"कहाँ बबुआ ! आज-कल चिन्ता के कारण मेरा शरीर सूखता जा रहा है।"

राधा और दिनेश दोनो चम्पा की यह बात सुन कर हँस पड़े। राधा हँसते-हँसते बोली—"शरीर सूख रहा है ! झूठ क्यों बोलती है ? क्या मै अंधी हूँ ?"

चम्पा यह सुन कर झेंप गई। दिनेश उठ कर खड़ा हो गया। उस ने चम्पा से कहा—"जा, अपना काम कर ! और माँ, मैं जा रहा हूँ।"

दिनेश कोठी से बाहर आया। फिर कार में बैठ कर सोचने लगा कि उसे किधर जाना चाहिए।

देर बाद उस को समझ मे आया कि इस समय तो चार बजे हैं। कही पर भी रौनक नही होगी। फिर भी वह चल दिया। उस की कार तेज गति से दौड़ने लगी।

वह शहर से कई मील दूर निकल आया। फिर जब उस के मन ने टोका कि कहाँ जा रहे हो, तो उस ने गाड़ी रोक दी और सोचने लगा।

बहुत देर तक वहीं खड़ा रहा दिनेश। फिर वह शहर की ओर लौट पड़ा।

वह मेस्टन रोड के होटल काश्मीर के सामने जा कर रुका। उस ने कार किनारे खड़ी कर के लॉक कर दी और होटल के

भीतर प्रवेश किया।

हाल मे हलकी भीड थी। लोग आ रहे थे। वे अपनी पहले से रिजर्व कराई सीटो पर बैठ रहे थे। दिनेश जा कर बैठ गया। उस ने जब बैरे को पास आते देखा, तो जल्दी-जल्दी उस से कहने लगा—"कोल्ड ड्रिंक लाओ।"

दिनेश अपने आस-पास बैठे लोगो की ओर देखने लगा।

अचानक उस के कानो मे एक मधुर स्वर गूँजा—"हलो मिस्टर दिनेश ! हाऊ आर यू ? (आप कैसे हैं ?)।"

दिनेश ने पीछे घूम कर देखा तो गौरी खडी मुस्करा रही थी। दिनेश चौंक गया। उस के मुँह से आश्चर्य में डूबा स्वर निकला—"आप यहाँ ! आइये।"

गौरी आ कर दिनेश के सामने बैठ गई। फिर एक मधुर मुस्कान के साथ बोली—"यह प्रश्न तो मुझे करना चाहिए था। आप ही यहाँ मुझे पहली बार दिखलाई दिये है।"

दिनेश को गौरी की बाते अजीब लगी। उस के मुँह से निकला—"आप ने तो अजीब बात कही है। क्या आप यहाँ रोज आती है ?"

गौरी हँसी और कहने लगी—"मैं यहाँ पर कैशियर हूँ। अभी आप को देखा तो चली आयी। अपनी असिस्टेन्ट पर काम छोड़ कर आयी हूँ।"

दिनेश के मन मे गौरी के लिए बहुत क्रोध था। वह व्यस्त स्वर मे बोला—"ओह ! तो आप यहाँ सर्विस करती हैं। आशा आप के घर में है क्या ?"

गौरी आशा का नाम सुनते ही चौंक गई। उस के मुँह से

निकला—"वह तो आप के घर गई थी। क्या वहीं चली गई ? हे भगवान् ! जाने कहाँ गई होगी वह !"

दिनेश ने उस की यह बात सुनी तो घबड़ा गया। उस के मुँह से आवाज नहीं निकली। यह देख, गौरी अफसोस प्रगट करते हुए बोली—"आप फिक्र न करिये, दिनेश बाबू ! आशा का प्रेमी इसी शहर में है। वह उसी के पास गई होगी। जब उस ने आप की फिक्र नहीं की, तो आप क्यों उस के लिए परेशान है ?"

यह सुनते ही दिनेश को आशा पर क्रोध आ गया। वह मुँह बिगाड़ कर गौरी से कहने लगा—"क्या तुम जानती हो उस का घर ? मै वहाँ जाऊँगा।"

गौरी ने यह सुना तो व्यंगपूर्वक बोली—"आप भी विचित्र इन्सान हैं। अब कोई आप की परवाह नहीं करता, तो आप क्यों परेशान है ?"

गौरी की यह बात सुन कर दिनेश ने कुछ भी जवाब नही दिया।

तभी वेटर दिनश के लिए कोल्ड ड्रिंक ले कर आया। गौरी ने उसे देखा तो व्यगपूर्वक बोली—"वाह दिनश बाबू ! क्या आप बच्चे है जो कोल्डड्रिंक मँगवाया है। ऐ वेटर ! जा, व्हिस्की ले कर आ।"

दिनेश ने गौरा का आर्डर सुना। पहले तो वह कुछ चौंका, लेकिन उस न परिस्थिति पर विचार किया और चुप ही रहा।

जरा देर में वेटर व्हिस्की ले आया। गौरी ने दोनों गिलासों को उठा लिया। फिर दिनेश से बोली—"दिनेश बाबू ! संकोच

मन करिये। मैं कोई ग़ैर नहीं हूँ।

दिनेश ने यह सुना तो धीरे से बोला—"तुम ठीक कहती हो, गौरी! मुझे आशा का दुख भूलना है, लाओ!"

गौरी के हाथ से गिलास ले कर दिनेश ने उसे खाली कर दिया। फिर धीरे से बोला—"मैं आज इतनी पी लेना चाहता हूँ कि मुझे आशा की याद न आए।"

गौरी ने दूसरा पैग भी उस की ओर बढ़ा दिया। फिर मुस्कराती हुई बोली—"लीजिए दिनेश बाबू! इस के साथ ही आप की सारी परेशानियाँ दूर हो जायेंगी।"

होटल के हाल में अब एक भी सीट खाली नहीं थी। आर्केस्ट्रा का स्वर कानों को मोह रहा था। चारों ओर हँसी और कहकहे गूँज रहे थे।

अचानक स्टेज पर हरे रंग का प्रकाश छा गया और एक नर्तकी ने अपना प्रोग्राम पेश किया। वह बल खाती हुई झूम रही थी। उस के होठों पर एक लुभावना गीत था।

गौरी ने दिनेश की ओर देखा। वह धीरे-धीरे झूम रहा था। उस की आँखों में गुलाबी डोरे पड़ रहे थे। वह लड़खड़ाते शब्दों में बोला—"गौरी! और—।"

नशे ने दिनेश के ऊपर पूरी तरह से काबू कर लिया था। उस की स्थिति देख कर गौरी मुस्करा रही थी। वह धीरे से बोली—"थोड़ी सी और लीजिए।"

गौरी ने जब दिनेश के हाथ में तीसरा पैग दिया, तो उस ने उसे मेज पर रख दिया। फिर नृत्य देखने लगा। वह गौरी की ओर देखता और कभी उस की दृष्टि सारे हाल में घूम

जाती। वह धीरे से बोला—"मैं जाना चाहता हूँ, गौरी !"

गौरी ने यह सुना तो घबड़ा गई। उसने जाम उठा कर दिनेश के होठों से लगा दिया। फिर उसे रोकती हुई बोली—"इसे पीजिए ! जाने का नाम मत लो।"

दिनेश ने जाम खाली कर दिया। फिर नर्तकी की ओर देखने लगा। उसे वह अप्सरा के समान लग रही थी। उसे सारा हाल घूमता हुआ नजर आ रहा था। उस की पलकें मुंद रही थीं। जब वह गौरी की ओर देखता, तो कभी वह उसे आशा मालूम देती और कभी गौरी।

"दिनेश बाबू !"

गौरी ने दिनेश का कन्धा पकड़ कर हिलाया।

लेकिन उसने जवाब नहीं दिया। वह देर तक उस की ओर देखता रहा। फिर धीरे से बोला—"तुम गौरी नहीं, आशा हो। तुम—।"

दिनेश आगे कुछ नहीं बोल पाया। गौरी ने उसकी यह स्थिति देखी तो धीरे से बोली—"दिनेश बाबू ! चलिए, आप को घर छोड़ दूँ।"

"नहीं, मैं घर नहीं जाऊँगा।"

किसी तरह दिनेश ने यह कहा। लेकिन गौरी उठ कर खड़ी हो गई। वह दिनेश के पास आ गई। वह उस के साथ चल दिया।

—:०:—

आशा को जब होश आया, तो वह चारो ओर आंख फाड़-फाड़कर देखने लगी । उस ने मस्तिष्क पर जोर डाला तो उसे वह घटना याद आयी,जब वह पुल पर से गगा मे कूद पडी थी। कूदते ही उस की आंखो के आगे अंधेरा छा गया था। फिर उस के बाद उसे पता ही नही चला कि वह कहां थी।

आशा ने उठने की कोशिश की, लेकिन उसे कमजोरी महसूस हुई । वह लेटी रही। अचानक उसके सामने से एक व्यक्ति गुजरा । उस ने उसे क्षीण कण्ठ से पुकारा—"ऐ भैया ! इधर आओ।"

वह आदमी उस के पास आ कर खडा हो गया। उस ने सफेद कुर्ता और चूडीदार पाजामा पहन रखा था। वह आशा के पास बैठ गया। फिर उस ने उसे सहारा दे कर उठाया।

आशा उठ कर बैठ गई । उस के मुँह से निकला—"यह कौन सी जगह है,भाई ?"

यह कह कर आशा ने उस स्थान का निरीक्षण किया। वह एक कमरा था, जिस की दीवालें तथा फर्श लकडी के बने थे। एक अजीव-सा शोर उस के कानो से टकरा रहा था ।

आशा को विचार-मग्न देख कर वह आदमी उठ कर चल दिया। अभी वह कुछ ही दूर गया था कि आशा ने उसे पुकारा—"ऐ भाई! मेरी बात सुनो। यह कौन सी जगह है?"

लेकिन वह आदमी चला गया। उस ने कुछ भी जवाब नही दिया।

उसके इस व्यवहार से आशा घबड़ा गई। उस के मुंह से उदासी में डूबा स्वर निकला—"हे भगवान्! न जाने यह कौन सी जगह है? अभागो को भगवान् मरने भी नही देता। सोचा था कि अब सांसारिक बधनों से मुक्ति मिल गई। लेकिन यहां तो वही मसल हुई—'आसमान से गिरी खजूर में आ अटकी'। अब जाने क्या होगा?"

आशा उठ कर खड़ी हुई। उस ने चारो ओर निरीक्षण किया। फिर दरवाजे की ओर बढ़ी, लेकिन जब तक वह निकले,उसे किसी ने बाहर से बन्द कर दिया।

कमरे में अधेरा छा गया। आशा ने अपने दोनों हाथ किवाड़ों पर द मारे और जोर से चिल्लाई—"कौन है बाहर? दरवाजा खोलो। वर्ना मैं उधम मचा दूंगी।"

"खूब शोर मचाओ, लेकिन इस से कोई भी फायदा नही होगा।"

उसे किसी पुरुष की आवाज सुनाई दी, जो अपनी बात कहने के बाद जोर-जोर से हंसने लगा।

आशा ने जब यह सुना,तो जोर से रो पड़ी। उस ने अपना माथा पीट लिया। फिर रोती हुई भीतर चली आई। उसे लग रहा था कि वह किसी बहुत बुरी मुसीबत में फंस गई है और उस का बचना मुश्किल है।

देर तक आशा जमीन पर बैठी रोती रही। इस के बाद वह उठी । उस ने दीवार में टटोला। एक तरफ बिजली का स्विच था। उस ने बत्ती जलाई और प्रकाश होते ही कमरे को ध्यान पूर्वक देखने लगी। लकड़ी की दीवार हरे रंग से पेण्ट की हुई थी । उन पर दो-तीन कैलेण्डर थे। एक ओर चारपाई पड़ी थी।

और कमरे में कोई भी सामान नहीं था। एक ओर दीवाल में छोटी-सी खिड़की थी, जिस की सिटकिनी बन्द थी। आशा जल्दी से उस की ओर लपकी और उसे खोलने लगी।

खिड़की खोलते ही आशा आश्चर्य में डूब गई। उस ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

उस ने देखा कि सामने जल-ही-जल है और उस का कमरा जो कि एक बजरा है, तेजी से आगे बढ़ रहा है। देर तक खड़ी देखती रही आशा, लेकिन उस की समझ में यह नहीं आया कि नाव किस तरफ जा रही है।

आशा बिस्तर पर आ कर बैठ गई। उस का मन कह रहा था—"जब तू पुल पर से कूदी, तो बहती हुई चली गई होगी। वहीं कहीं पर इस बजरे के लोगों ने तुझे निकाला।"

आशा को यह बात सही मालूम हुई। उस ने अपने मन से प्रश्न किया—"लेकिन यह नाव कहाँ जा रही है ? कानपुर या उस के विपरीत दिशा में ?"

लेकिन इस सवाल का आशा के मन के पास कोई भी जवाब नहीं था। वह परेशान हो गई। फिर थक कर सो गई।

× × × ×

जब आशा सो कर उठी, तो आश्चर्य से चौंक कर रह गई। वह एक सजे-सजाये कमरे मे बिस्तर पर लेटी थी।

वह उठ कर बैठ गई और आँखे फाड़-फाड़ कर चारों ओर देखने लगी। कमरे के किवाड़ बाहर से बन्द थे। एक ओर दीवाल पर आदमकद आईना लगा था। उस के बगल मे थी एक अलमारी।

कमरा आधुनिक प्रसाधनो से पूर्ण था। दीवालें प्लास्टिक से पेण्ट की हुई थी। वे चमचमा रही थी। ऐसा लगता था क वह किसी आधुनिक होटल का कमरा है, जो ऊँचे किस्म का है।

आशा की समझ में नही आ रहा था कि वह बजरे से किस जगह आ गई है। वह आँखे फाड़े,कमरे को देख रही थी। उसे लग रहा था कि वह किसी बहुत बड़े जाल मे फँस गई है, जिस से निकलना उस के लिये आसान नही है।

वह दरवाजे के पास गई तो वे बाहर से बन्द था। उस ने कमरे की हर चीज को देखा, लेकिन कुछ समझ नही पायी। वह अलमारी के पास गई, लेकिन उस मे ताला बन्द था।

अब आशा हारी-थकी-सी आदमकद आईने के सामने आ कर खड़ी हो गई। उस ने देखा कि उस की सूरत पूरी तौर से बदल चुकी है। काले रंग की साड़ी धूल से भरी थी और उस में कहीं-कहीं पर कीचड़ लगा था। वह कट भी गई थी कई जगह पर।

जब आशा ने अपनी सूरत देखी, तो चौंक कर रह गई। उस का चेहरा पीला था और आँखों के नीचे स्याह गड्ढे थे।

ऐसा लगता था, मानो किसी ने उस की देह से खून निचोड़ लिया हो ।

आशा ने कई दिन से खाना नहीं खाया था, इस लिए वह कमजोरी महसूस कर रही थी। उसे चक्कर-सा आ रहा था। वह थकी-सी आ कर पलंग पर बैठ गई ।

अचानक आशा की दृष्टि सामने दीवाल पर लगे एक चित्र पर पड़ी । वह उसे देखती ही रह गई। उसे लग रहा था कि कमरा घूम रहा है और वह अभी बेहोश हो कर गिर पड़ेगी।

उसने अपनी आंखों पर हाथ रख लिये। फिर कुछ देर बाद उस चित्र को देखा। इस बार वह लगातार उसे देखती रही ।

जो चित्र वह देख रही थी, वह उस के प्रेमी सुरेश का था, जिस के कारण उस की जिन्दगी बर्बाद हुई ।

आशा ने अपने अन्तःकरण से प्रश्न किया—"यह चित्र तो सुरेश का है। इसका मतलब यह हुआ कि यह सुरेश का ही घर है और मुझे बचाया भी उसी ने ।"

अन्तःकरण ने जवाब दिया—"निश्चय ही यह सुरेश का घर है और इस में भी कोई सन्देह नहीं कि उसी ने तुम्हारी जान बचाई।"

आशा ने यह सुना तो पागलों की भांति बड़बड़ाने लगी—"ओह! भगवान् ने मेरी जिन्दगी के साथ कितना बड़ा खिलवाड़ किया है। सुरेश,जब मेरे सामने आयेगा, तो मैं उस से किस तरह बात कर पाऊंगी । क्या मैं उस के साथ जीवन बिता सकती हूँ ? वह दिनेश के बारे में जानेगा तो क्या कहेगा ? शायद वह अपने बच्चे के विषय में पूछे ।"

आशा भविष्य के कल्पना-सागर में डूबने-उतराने लगी। उसे लग रहा था कि कोई बड़ी अनहोनी होने वाली है, जो उस के जीवन में उथल-पुथल मचा देगी।

काफी देर तक सोचती रही आशा। अंत में उस ने एक बार सुरेश के चित्र को देखा। फिर धीरे-धीरे बुदबुदाने लगी। वह कह रही थी—"सुरेश का हक मेरे ऊपर ज्यादा है। मैं गौरी के पास जा कर अपना बच्चा वापस ले आऊंगी। सुरेश से अपने कार्यों के लिए क्षमा मांग लूंगी और उस के चरणों में ही सारा जीवन गुजार दूंगी।"

यह कह कर आशा उस समय की कल्पना करने लगी जब सुरेश उस के सामने होगा।

× × × ×

दिनेश की जब नींद खुली तो वह बिस्तर पर उठ कर बैठ गया। उस का सिर तेजी से दर्द कर रहा था। रात के नशे का खुमार अब भी बाकी था। उस ने एक अंगड़ाई ली।

अचानक वह चौंका। उस ने एक बार सरसरी दृष्टि से उस कमरे को देखा। उसे वह नया-सा मालूम हुआ। वह कोठी का उस का अपना कमरा नहीं था।

उस ने दिमाग पर जोर डाला और रात की घटना को याद करने लगा। उसे केवल इतना याद आया कि वह गौरी के साथ होटल काश्मीर में बैठा था। उस ने शराब पी थी। उस के बाद लाख कोशिश करने पर भी वह कुछ नहीं जान पाया।

उसने देखा कि कमरे के एक कोने मे बाथरूम था। वह उठ कर उस की ओर चला। लेकिन वह भीतर से बन्द था। वह चौंक गया।

उस ने कमरे का दरवाजा खोला। बाहर निकलते ही उसे यह जानने मे देर नही लगी कि वह होटल काश्मीर मे है।

वह भीतर लौट आया। उस ने देखा, उस का कोट और कमीज एक ओर हैंगर पर टँगे थे। वह सोफे पर बैठ कर चिन्ता में डूब गया। उस की समझ में कुछ भी नही आया।

अचानक दरवाजा खुलने की आवाज हुई और साथ ही एक स्वर सुनाई दिया—"आप उठ गये। इतने सुस्त क्यो है ?"

दिनेश बौखला गया। उस ने पीछे घूम कर देखा। बाथरूम से गौरी चली आ रही थी। उस ने एक बडा सा सफेद रंग का तौलिया पहन रक्खा था। वह स्नान कर के आयी थी।

वह आ कर दिनेश के पास खडी हो गई और उसे एक टक अपनी ओर घूरते देख कर धीरे-धीरे कहने लगी—"शायद आप मेरे ऊपर नाराज हैं। लेकिन देखिये, इस मे बुरा मानने की कोई बात नही।

दिनेश झुँझलाया हुआ था। उस के मुँह से निकला—"क्यो ?"

गौरी ने शान्त स्वर में उत्तर दिया—"इसलिए कि तुम रात को घर जाने की स्थिति मे नही थे।"

दिनेश उठ कर खडा हो गया। उस के मुँह से क्रोध-भरा स्वर निकला—"तुम्हारा चरित्र इतना गिरा हुआ है,गौरी! यह मुझे नही मालूम था। घर में माँ न जाने क्या सोचती

होंगे ?"

यह सुन कर गौरी जोर से हँस पड़ी । वह हँसते-हँसते बोली—"दिनेश बाबू ! आप तो नाराज होते हैं । आप इतनी छोटी-सी बात के लिए बुरा मान जायेंगे, यह मैं ने नहीं सोचा था । मौजी भला क्या कहेगी । तमाम बहाने हैं । आप कुछ भी बतला सकते हैं ।"

दिनेश ने यह सुना तो झुँझला उठा । वह सोफे पर बैठता हुआ बोला—"तुम से मैं हार गया, गौरी ! तुम ने तो मुझे एक नई मुसीबत में डाल दिया है । अच्छा, अब मैं घर जा रहा हूँ । जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ । होटल का बिल मैं चुका दूँगा ।"

यह कह कर दिनेश ने कमीज उठा ली और पहनने लगा । तभी गौरी ने आ कर उस के कन्धे पर सिर रख दिया । वह कह रही थी—"अभी मत जाओ, दिनेश ! नाश्ता कर के जाना ।"

दिनेश ने गौरी को एक झटका दिया और दूर हट कर खड़ा होता हुआ बोला—"दूर से बात करो, गौरी ! मुझे घर जाने दो । मेरे रुकने से बात बिगड़ जायेगी ।"

गौरी ने यह सुना तो झुँझला गई । वह तेज स्वर से कहने लगी—"वाह ! तुम तो ऐसे बात कर रहे हो, जैसे मैं तुम्हारी कुछ हूँ ही नहीं ।"

दिनेश ने जब गौरी की यह बात सुनी, तो सन्न रह गया । उस के मुँह से आश्चर्य में डूबा स्वर निकला—"मैं तुम्हारी बात समझा नहीं, गौरी !"

गौरी व्यंग्य-भरे स्वर में बोली—"तुम भला क्यों समझोगे! बेवक़ूफ़ तो मैं हूँ।"

दिनेश किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया। उस के मस्तिष्क में अनेक विचार एक साथ आ कर रेंगने लगे। वह कुछ देर तक खड़ा सोचता रहा। फिर उस के मुंह से गम्भीर स्वर निकला—"गौरी! मैं ने यह तो दिया कि जो कुछ हो गया, उस के विषय में सोचना भी बेवक़ूफ़ी है और तुम वही बातें कर रही हो?"

गौरी चुपचाप खड़ी रही। उस की मुख-मुद्रा गम्भीर थी। यह देख, दिनेश मन्द स्वर में बोला—"इस बात को भूल जाना ही ठीक है। समझ लो—।"

अभी दिनेश की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि गौरी एकदम से झुंझला कर बोल उठी—"बस-बस, अब चुप भी रहिए। मैं ने एक बार कह दिया कि ऐसी बातें भूली नहीं, ज़िन्दगी भर याद रखी जाती है।"

यह कहती हुई गौरी तेजी से बाथरूम में चली गई।

दिनेश कुछ देर तक खड़ा रहा। फिर उस ने कोट उठा कर कन्धे पर डाला और कमरे से बाहर निकल आया। उस ने काउण्टर पर जा कर बिल चुकाया। वह होटल से बाहर निकल आया।

दिनेश ने कार स्टार्ट की और कोठी की ओर चल दिया। उस ने पोर्टिको में जा कर गाड़ी खड़ा कर दी और हाल में प्रवेश किया।

उसे देखते ही कोठी में हलचल मच गई। सब नौकरों ने

आ कर उसे घेर लिया। सब की जबान पर एक ही सवाल था कि रात को कहाँ रहे बबुआ।

चम्पा राधा को खबर देने के लिए दौड़ी। वह लपकती हुई सीढ़ियाँ चढ़ने लगी। वह कह रही थी—"मालकिन! बबुआ आ गये।"

चम्पा सीढ़ियाँ चढ़ गई। अचानक वह सामने से आ रहे भोला से टकरा गई। दोनों औंधे मुँह गिर पड़े। भोला जोर-जोर से चीखने लगा। चम्पा भी उसे गालियाँ दे रही थी।

शोर-गुल सुन कर राधा अपने कमरे से निकली। वह सुबह-सुबह जा कर राधाकृष्ण के चरणों पर माथा टेक कर लेट गई थी। उस के मन में उलझन थी। वह बहुत परेशान थी।

बाहर आते ही राधा ने देखा, भोला एक ओर खड़ा काँख रहा था और चम्पा फर्श पर पड़ी उठने की कोशिश कर रही थी।

राधा जब उन दोनों के पास आयी, तो चम्पा उस से अपनी शिकायत करने लगी—"मालकिन! यह भोला—।"

चम्पा कहती ही रह गई और राधा सीढ़ियाँ उतरने लगी। वह कह रही थी—"तू आ गया, दिनेश! रात को कहाँ था? तेरा रास्ता देखते-देखते मेरी आँखें पथरा गईं।"

दिनेश एक सोफे पर बैठा था। माँ को आते देख कर वह उठ खड़ा हुआ। वह धीरे-धीरे कहने लगा"एक दोस्त मिल गया था, माँ। उस के यहाँ पार्टी थी। मैं रात को वहीं रुक गया था। पहले सोचा, फोन कर दूँ, लेकिन—"

राधा ने पुत्र के बालों पर हाथ फेरते हुए कहा—"लेकिन क्या ! तुझे खबर तो देनी थी। मेरा चिन्ता के कारण बुरा हाल हो गया। मैं ईश्वर से रात-भर तेरी खैर मनाती रही कि तू कहीं किसी मुसीबत में न पड़ गया हो।"

राधा यह कहते-कहते सोफे पर बैठ गई। फिर दिनेश से बोली—"दिनेश ! तू ने तो एक नई समस्या खड़ी कर दी थी। खैर, अब तू घर आ गया है। जा, नहा-धो ले।"

दिनेश अपने कमरे की ओर चल दिया।

चम्पा राधा के पास जा कर खड़ी हो गई। वह कह रही थी—"मालकिन ! बबुआ का आना मेरे लिए बहुत ही ज्यादा महँगा पड़ा।"

"क्यों ?"

राधा ने चौंक कर प्रश्न कर दिया। चम्पा मुस्कराती हुई कहने लगी—"मैं आप को खबर देने जा रही थी; तभी यह भोला आ कर मुझ से टकरा गया। मालकिन ! मेरा तो जोड़-जोड़ दर्द कर रहा है।"

राधा को वह घटना याद कर के हँसी आ गई जब उस ने चम्पा को गिरे हुए देखा था। वह हँसते-हँसते बोली—"अच्छा-अच्छा। अरे भोला ! इधर आ।"

भोला पास आ कर खड़ा हो गया। उस ने एक बार चम्पा को क्रोध-भरी दृष्टि से देखा फिर राधा से बोला—"क्या बात है, मालकिन ?"

"तू ने चम्पा को क्यों गिराया था ?"

राधा का प्रश्न सुन कर भोला कुछ सिटपिटाया। फिर

धीरे से बोला—"मालकिन मैं ने इसे नहीं गिराया था, बल्कि यह खुद आ कर मेरे ऊपर गिर पड़ी। मेरी कमर बहुत दर्द कर रही है।"

राधा ने जब भोला की बात सुनी, तो उसे जोर की हँसी आ गई। वह भोला का कान उमेठती हुई बोली—'तू झूठ बोल रहा है रे! चम्पा हमेशा सच बोलती है। तू ने ही उसे गिराया था। मैं तुझे सजा दूँगी।"

भोला सन्नाटे में आ गया। वह राधा का मुँह देखने लगा। तभी चम्पा बोल उठी—'हाँ मालकिन! इसे सजा जरूर दीजिये।"

राधा ने चम्पा की बात सुनी तो बोली—"तू क्या समझती है, चम्पा! मैं तुझे भी नहीं छोड़ूँगी। दोनों को सजा मिलेगी।"

चम्पा भी उदास हो गई। तब तक राधा बोल उठी—"मैं तुम दोनों की शादी कर दूँगी। आज ही पुरोहित जी को बुलवाती हूँ।"

चम्पा यह सुन कर प्रसन्न हो गई। वह वहाँ से चल दी और जाते-जाते बोली—"मैं नाश्ते की तैयारी करती हूँ, मालकिन।"

राधा उठ कर खड़ी हो गई। उस के जाते ही भोला अपना दुख साथियों को बतलाने लगा।

× × × ×

राधा कमरे में बैठी-बैठी ऊब गई। अचानक बाहर से किसी ने दरवाजा खोला। वह चौंकी और उठ कर खड़ी हो

गई ! वह आने वाले का इन्तजार करने लगी। उस का दिल तेजी से धड़क रहा था। उस ने सिर नीचे झुका रक्खा था।

आगन्तुक धीरे-धीरे चलता हुआ उस के पास आ गया।

"बहुत खूबसूरत हो !"

आशा ने जब उस व्यक्ति के मुँह से यह शब्द सुने, तो वह चौंकी। उस के कदम पीछे हट गये। उस ने धीरे से दृष्टि सामने की ओर उस व्यक्ति को देखने लगी।

आगन्तुक के चेहरे और सुरेश की तसवीर में बहुत थोड़ा-सा अन्तर था। आशा पहचान गई कि वह सुरेश ही है। उस ने टेरिलीन की पैण्ट और कमीज पहन रक्खी थी। स्वस्थ, साँवले बदन का युवक था।

आशा ने एक बार ध्यान से उसे देखा। फिर दूसरी ओर देखने लगी।

सुरेश उस के पास आ गया। वह कहने लगा—"खड़ी क्यों है ? बैठ जाइये।"

यह कह कर वह पलंग पर बैठ गया। लेकिन आशा खड़ी रही। वह उस की गतिविधि देख रही थी। देर बाद उस के मुँह से निकला—"यह कौन सी जगह है ? आप मुझे यहाँ से लाये हैं ?"

सुरेश ने उस का प्रश्न सुना तो जोर से हँसा। वह कह रहा था—"यह सवाल तो सभी करते हैं। पहले तुम बैठ जाओ तो मैं जवाब दूँगा।"

आशा ने जब यह सुना, तो वह पलंग के पाँयताने जा कर बैठ गई। सुरेश धीरे-से कहने लगा—"मैं कन्नौज से बजरे पर

कानपुर आ रहा था तो मुझे गंगा में बहती हुई तुम दिखलाई दी। दो मल्लाह भेज कर मैं ने तुम को बजरे में उठवा मंगाया। तुम्हारे पेट का पानी निकाला गया। तुम बेहोश थी। फिर आगे का हाल तो तुम जानती हो।"

आशा का अनुमान सत्य निकला। वह धीरे से बोली—"लेकिन आप ने यह तो बतलाया ही नहीं कि यहां मुझे कैसे लाया गया है?"

सुरेश जोर से हंसा और हंसते-हंसते बोला—"तुम भी उसी तरह से बेहोश करके यहां लायी गई हो, जैसे दूसरी लड़कियां लाई जाती है।"

आशा चौंक गई। उस की समझ में सुरेश की बात नहीं आयी। वह धीरे से बोली—"यह कौन सी जगह है?"

"शहर कानपुर का यह कलक्टर गंज का इलाका है। और कुछ पूछना है? आप कहां की रहने वाली है?'

कानपुर का नाम सुन कर आशा की जान में जान आयी। वह धीरे से सुरेश की ओर देखती हुई बोली—"आप यहां मुझे क्यों ले आये? मैं जाना चाहती हूँ।"

सुरेश मुस्कराते हुए बोला—"यहां आ कर कोई वापस नहीं जा पाता।"

"मैं आप का मतलब नहीं समझी?"

सुरेश उठ कर खड़ा हो गया। उस ने आशा को अपनी बांहों में बांध लिया; फिर बोला—"अब तुम यहां से कहीं नहीं जा सकती।"

आशा ने सुरेश के बधन से अपने आप को मुक्त किया। फिर धीरे-से हँसती हुई बोली—"आप बहुत विचित्र आदमी हैं, सुरेशबाबू! शायद आप ने मुझे पहचाना नही है?"

सुरेश ने जब आशा की व्यग्य-पूर्ण बात सुनी, तो वह आश्चर्य-चकित हो कर बोला—'यह तुम क्या कह रही हो? मैं तुम्हे नही जानता!"

आशा को क्रोध आ गया। वह गुस्से से काँपने लगी। वह तेज गले से बोली—"मैं जानती थी कि तुम यही कहोगे। अगर तुम्हारे मन मे दगा न होती, तो तुम देहली न चले जाते। तुम्हारी नीयत पहले से ही खराब थी। तुम ने मेरी जिन्दगी बरबाद कर दी। मैं—।"

"चुप रहो!"

सुरेश जोर से चिल्लाया। उस की आवाज सुन कर आशा डरी नही। वह अपनी बात कहती रही—"मैं चुप नही रहूँगी। तुम ने मुझे धोखा दिया। मैं तुम्हें माफ नही करूँगी। अब तुम्हारे सामने एक ही रास्ता है कि मुझ से शादी कर लो, नही तो—।"

सुरेश ने आशा के गाल पर जोर का एक थप्पड मारा। फिर तेज गले से बोला—"मैं ने तो तुम्हे सीधा समझा था। लेकिन तुम बहुत खतरनाक लडकी हो। जाने कैसे तुम ने मेरा नाम जान लिया? मैं तुम्हे नही जानता और तुम दुनिया-भर की बातें कर रही हो!"

आशा फूट-फूट कर रोने लगी और रोते हुए बोली—"मेरी तो किस्मत ही खराब है। तुम ने तो पहले ही धोखा दे

दिया था जब मुझे छोड़ कर देहली चले गये। अब मैं तुम्हें नही छोड़ूँगी। चाहे मेरी जान चली जाए। तुम क्या जानो कि मैं ने कितने कष्ट उठाये है। मैं वदनाम हो गई—।"

सुरेश उठ कर खड़ा हो गया। वह कमर पर दोनों हाथ बाँध कर टहलने लगा। फिर धीरे-से बोला—"क्या नाम है तुम्हारा ?"

"नाम भी भूल गये ! मेरा नाम आशा है।"

यह कहती हुई आशा उठ कर खड़ी हो गई। सुरेश उस की ओर देखता हुआ बोला—"मैं ने तुम्हे धोखा दिया है ?"

"हाँ।"

आशा ने उत्तर दिया।

"मैं तुम्हे छोड़ कर देहली चला गया था ?"

"हाँ।"

"तुम मुझ से शादी करोगी ?"

"हाँ।"

"तुम मेरे पीछे वदनाम हुई हो ?"

"हाँ, हाँ। और क्या-क्या पूछोगे ? क्या तुम्हे यकीन नही होता ?"

"यक़ीन—।"

यह कह कर सुरेश जोर से हँस पड़ा। वह हंसते-हँसते बोला—"यक़ीन कौन करेगा तुम्हारी बातों पर ? तुम पागल हो, एकदम पागल !"

आशा सुरेश की बातें सुनकर बौखला उठी। उसे उस पर बहुत क्रोध आ रहा था। कुछ क्षण तक तो वह सोचती रही।

फिर उस का आवेश आँसुओं में वह निकला। वह रोने लगी और रोते-रोते बोली—'सुरेश! तुम दगाबाज हो। मैं तो चिल्ला-चिल्ला कर कहूँगी कि मेरे बच्चे के तुम बाप हो। तुम ने मेरा जीवन नष्ट किया है। तुम बहुत बड़े पापी हो। तुम्हें ईश्वर कभी माफ नहीं करेगा।"

सुरेश पलग पर बैठ गया। फिर जग से एक गिलास में मे डाल कर पानी पीने लगा। फिर गिलास रखकर बोला—"तुम कुछ भी कहो, तुम्हारी बातों पर कोई भी यकीन नहीं करेगा। मुझे खुद नहीं समझ में आता कि तुम क्या कह रही हो।"

आशा रोती रही। उस ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। देर बाद उस के मुँह से निकला—"तो तुम मुझे पहचानने से इन्कार करते हो?"

"हाँ।"

सुरेश ने *उत्तर दिया और आशा की गतिविधि देखने* लगा।

आशा धीरे-धीरे यह कहती हुई दरवाजे की ओर बढ़ी—"जब आप मुझे ठुकरा रहे हैं, तो फिर मैं जी कर क्या करूँगी। मैं जा रही हूँ।"

आशा दरवाजे तक पहुँच गई। तभी सुरेश उठ कर उस की ओर लपका और उस का हाथ पकड़ कर उसे भीतर खींच लाया। फिर उसे जबरदस्ती बिस्तर पर बैठाता हुआ बोला—"चल कहाँ दी? तुम अगर मरना भी चाहोगी, तो मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा। यह शेर की माँद है। यहाँ लोग आते हैं, लौट कर नहीं जाते।"

आशा ने उठने का प्रयत्न किया; वह बोली—"आखिर तुम्हारा मतलब क्या है, सुरेश ? मुझे जाने दो।"

लेकिन सुरेश ने उसे उठने नहीं दिया। वह मुस्कराता हुआ बोला—"तुम्हारा जीवन इतना सस्ता नहीं है। मैं तुम्हें रानी बना कर रक्खूँगा। मैं—।"

आशा को लगा कि सुरेश अब तक केवल मजाक कर रहा था। वह बोली—"तो तुम मुझ से शादी करोगे। मुझे मालूम था कि—।"

आशा की बात के बीच में ही सुरेश हँसने लगा। उस ने गर्व-पूर्वक कहा—"मैं शादी नहीं करूँगा।

"तो फिर ?"

आशा ने प्रश्न कर दिया।

सुरेश ने उसे अपनी बाँहों में जकड़ लिया और कोई जवाब नहीं दिया। आशा ने अपने को छुड़ाने की भरपूर कोशिश की। उस के मुँह से जोर की एक चीख निकल गई।

तभी किसी ने दरवाजा खोल कर कमरे के भीतर प्रवेश किया; लेकिन सुरेश के ऊपर इस का कोई असर नहीं पड़ा। उस ने आशा को छोड़ा नहीं; बल्कि बंधन और भी दृढ़ कर दिया।

आशा जोर से चिल्लाई—"बचाओ ! मैं—।"

सुरेश ने मुँह पर हाथ रख,आशा की आवाज बन्द कर दी।

आगन्तुक सुरेश के पास आ कर बोला—"इस लड़की को छोड़ दो, सुरेश ! आखिर तुम अपनी हरकत से बाज नहीं आये।"

लेकिन सुरेश पर कुछ भी असर नहीं हुआ तो आने वाले ने उस पर शक्ति का प्रयोग किया और उसे आशा से अलग कर दिया।

आशा उठ कर खड़ी हो गई। वह अस्त-व्यस्त-सी हो गई थी। उस का सांस तेज थी।

सुरेश ने एक बार आशा की ओर देखा, फिर आगन्तुक से बोला—"आप ने अच्छा नहीं किया, मोहन भाई! मुझे इस लड़की का दिमाग ठीक करना है।"

मोहन एक कुर्सी पर बैठ गया। फिर सुरेश को समझाते हुए बोला—"तुम किसी की इज्जत की परवाह क्यों नहीं करते, सुरेश! अब तक तुम ने खूब खेल खेले। अब तुम्हें शादी कर लेनी चाहिए।"

सुरेश ने मोहन की बात का कुछ भी जवाब नहीं दिया।

मोहन ने आशा से प्रश्न कर दिया। वह उसे सांत्वना देने लगा—"कहां रहती हो बहन? नदी में गिर गई थी या आत्महत्या करने के इरादे से कूदी थी?"

आशा मोहन के पास आ गई। उस ने अपने रक्षक को मन-ही-मन धन्यवाद दिया। फिर धीरे-धीरे कहने लगी—"मैं कानपुर में ही रहती हूँ। आप बहुत शरीफ इन्सान हैं। मैं आप का एहसान नहीं चुका सकती। मेरी नाव दुर्घटना-ग्रस्त हो गई थी।"

मोहन से आशा ने झूठ बोला। वह कहने लगा—"मैं तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दूंगा। तुम मेरी छोटी बहन की तरह हो। सुरेश की बातों का तुम बुरा मत मानना। मैं—।"

सुरेश मोहन की बात काट कर बोल उठा—"नही मोहन ! यह नही हो सकता। यह लड़की मेरे घर से कही नहीं जा सकती।"

"चुप रहो, सुरेश !"

मोहन ने उसे मीठी डाँट बतलाई। उस के मुँह से एक आदेश-भरा स्वर निकला—"मै ने उसे अपनी बहन कहा है। तुम मेरे दोस्त हो, इसीलिए यह तुम्हारी भी बहन—।"

सुरेश ने मुस्करा कर मोहन की बात काट दी—"लेकिन यह तो कुछ और ही कहती है।"

मोहन चौंक गया। वह प्रश्न सूचक दृष्टि से आशा को देखता हुआ बोला—"क्या मतलब ? मै समझा नही !"

"इस से ही पूछ लीजिए।"

सुरेश ने आशा की ओर इशारा कर दिया और आशा ने अब संकोच नही किया। उस ने धीरे-धीरे अपनी सारी कहानी मोहन से कह सुनाई। फिर आँसू बहाती हुई दीन स्वर मे कहने लगी—"भैया ! आप सुरेश को समझाइये। ये मेरी बात मानने से साफ इन्कार कर रहे है।"

आशा की कहानी सुन कर मोहन चक्कर मे पड़ गया। वह कुछ देर तक सोचता रहा। फिर सुरेश से बोला—"आशा की बात में कहाँ तक सच्चाई है ?"

सुरेश ने दृढ़ स्वर मे जवाब दिया—"मै ने इसे पहले कभी नहीं देखा। जितनी भी बाते इसने बतलाईं,सब झूठ है ?"

मोहन सुरेश की बात सुन कर कुछ चिन्ता-ग्रस्त हो कर बोला—"आशा ! तुम क्या चाहती हो ?"

आशा ने शीघ्रता से उत्तर दिया। वह गम्भीर स्वर में बोली—"मैं चाहती हूँ कि सुरेश बाबू मुझ से शादी कर लें। अगर वे इन्कार करते हैं, तो मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

सुरेश से मोहन ने प्रश्न कर दिया—"तुम आशा से व्याह क्यों नहीं कर लेते ?"

सुरेश जल्दी-जल्दी अपनी बात कहने लगा—"मैं आशा से कभी शादी नहीं कर सकता। मेरा और इस का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। आप की और सब बात मैं ने मान ली, लेकिन इस से इन्कार करता हूँ। आशा चाहे तो यहाँ से जा सकती है।"

मोहन ने सुरेश को बहुत समझाया, लेकिन वह अपनी बात पर दृढ़ रहा। अन्त में उस ने आशा से कहा—सुरेश जब राजी नहीं है, तो क्या किया जा सकता है ? इस से तुम कोई उम्मीद मत रखो।"

"तो मैं यहाँ से चली जाऊँगी।"

आशा ने धीरे से यह कहा तो मोहन सहानुभूति-भरे स्वर में बोला—"लेकिन तुम जाओगी कहाँ ?"

आशा कुछ देर सोचती रही। फिर धीरे से बोली—"मैं अपनी माँ के पास जाऊँगी।"

मोहन आशा की बात सुन कर कुछ सोचने लगा। सुरेश कमरे से बाहर जा चुका था।

× × × ×

आज दिनेश को प्रसन्नता थी। उस के उलझे हुए दिमाग को मनोरंजन की जरूरत थी और आज भोला और चम्पा की शादी थी।

कोठी में तैयारियाँ हो रही थीं। अभी पाँच ही बजे थे कि दिनेश आफिस से उठ कर बाहर आ गया। वह कार में बैठ गया और कोठी की ओर चल दिया।

मालरोड पर तेजी से दौड़ती हुई उस की कार जब बड़े चौराहे पर आयी तो सिग्नल न मिलने के कारण उस ने गाड़ी रोक दी और प्रतीक्षा करने लगा। कार के आगे और पीछे सवारियों की कतार लग रही थी।

अचानक किसी ने दूसरी ओर से कार की अगली खिड़की खोल दी।

दिनेश ने चौंक कर देखा तो वह गौरी थी। वह भौचक्का-सा रह गया और घूर-घूर कर उस की ओर देखने लगा।

गौरी भीतर आ कर बैठ गई। फिर मुस्कराती हुई धीरे-धीरे कहने लगी—"मैं बहुत परेशान हूँ, दिनेश ! मुझे कोई रास्ता सुझाओ, वर्ना—।"

दिनेश घबड़ा गया। वह जल्दी-जल्दी कहने लगा—"तुम परेशान हो तो मुझ से क्या मतलब ? मुझे जल्दी है। मेरा वक्त बरबाद न करो।"

गौरी के तेवर चढ़ गये। वह धीरे-धीरे कहने लगी—"दिनेश मेरी तुम से शादी कब होगी ? मेरी यही परेशानी है।"

दिनेश को जमीन-आसमान नजर आ गया। वह व्यस्त स्वर में बोला—शादी ! यह तुम क्या कह रही हो ?"

गौरी ने जब दिनेश की यह स्थिति देखी तो धीरे से बोली—"तुम घबड़ा गये। चलो, किसी और जगह पर चल कर बातें करेंगे।"

लेकिन दिनेश का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। वह तेज गले से बोला—"गाड़ी से इसी समय उतर जाओ, गौरी! मैं तुम्हारी एक भी बात नहीं सुनना चाहता।"

पीछे खड़ी कार हॉर्न दे रही थी। हरा सिग्नल हो चुका था। दिनेश ने कार स्टार्ट कर दी। फिर सड़क के एक किनारे जा कर उसे रोकता हुआ गौरी से बोला—"चली जाओ, गौरी! तुम ने सुना नहीं क्या? कार से उतर जाओ।"

गौरी जोर से हँसी। फिर हँसते-हँसते कहने लगी—"दिनेश बाबू! शायद आप ने मुझे बेवकूफ समझा। लेकिन ऐसी बात नहीं है! मैं ने भी कच्ची गोलियाँ नहीं खेली हैं। यह देखिये!"

यह कह कर गौरी अपने पर्स से कुछ निकालने लगी।

दिनेश उत्सुक हो कर उस की गति-विधि देख रहा था।

गौरी ने पर्स से कुछ चित्र निकाल कर दिनेश को दिखलाये। वह उन्हें देखते ही चौंकता गया। उस ने उन को लेने के लिए हाथ आगे बढ़ा दिया। उस का मस्तिष्क उत्तेजना के कारण सनसना रहा था।

लेकिन गौरी ने अपना हाथ पीछे खींच लिया। वह व्यंग्य-पूर्वक मुस्कराती हुई बोली—"नहीं-नहीं! दूर से ही देखिये। मैं कोई बेवकूफ नहीं हूँ, जो ये फोटो तुम्हें दे दूँ।

दिनेश आँखें फाड़-फाड़ कर उन चित्रों को देखने लगा। गौरी उन्हें एक-एक कर के दिखलाती जा रही थी।

उन चित्रों में गौरी के साथ दिनेश था। दोनों के विभिन्न मुद्राओं में चित्र खींचे गये थे।

दिनेश को गौरी पर अत्यधिक क्रोध आ रहा था। उस ने चित्र छीनने की एक असफल कोशिश की।

लेकिन गौरी ने जल्दी से उन्हें पर्स में डाल लिया। फिर व्यंग्य करती हुई बोली—"तुम्हें परेशानी तो बहुत हुई होगी, लेकिन मैं मजबूर हूँ। ये चित्र इस बात के गवाह रहेंगे कि तुम्हें मुझ से शादी करनी चाहिए।"

दिनेश ने खीच कर एक थप्पड़ गौरी के गाल पर जड़ दिया। फिर तेज गले से बोला—"मैं तुम से ये चित्र छीन लूँगा।"

गौरी ने जब यह स्थिति देखी, तो पहले तो कुछ रूआपयाई; फिर कार को खिड़की खोल कर नीचे उतर गई और क्रोध में फुफकारती हुई बोली—"तुम मेरा कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते। चाहो तो कोशिश कर के देख लो।"

"कोशिश कर के तो देख चुका! लेकिन मैं तुम से शादी नहीं कर सकता। बताओ, क्या होना चाहिए। भीतर आ कर बैठो।"

गौरी व्यंग्य-पूर्वक मुस्कराते हुए बोली—"आखिर नरम पड़ गये ना। मैं ऐसी गलती नहीं करूँगी जो अन्दर आ कर बैठूँ। जिस तरह से तुम मेरे पर्स से आशा का लाकेट निकाल ले गये थे, शायद फिर वैसा ही करने की सोच रहे हो?"

गौरी का अनुमान सत्य था। उस की बात सुन कर दिनेश शर्मिन्दा हो गया। वह धीरे से बोला—ऐसी कोई बात मेरे

मन में नहीं है। मैं तुम से मनस्या का हल पूछ रहा था कि अब क्या होना चाहिए।"

"चिन्ता क्यों करते हो? मैं ये चित्र निगेटिव सहित तुम को दे दूँगी। हाँ,—।"

गौरी ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी। दिनेश ने उसे टोक दिया—"हाँ-हाँ, कहती जाओ। रुक क्यों गई?"

गौरी ने एक बार चारों ओर देखा। फिर धीरे से बोली—"केवल आप को थोड़ा-सा कष्ट करना पड़ेगा?"

"मैं समझा नहीं।"

दिनेश ने जब यह कहा, तो गौरी बोली—"ज्यादा नहीं, केवल पचीस हजार से मेरा काम चल जायेगा।"

दिनेश के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई। उस ने एक बार आस-पास देखा कि कोई सुन तो नहीं रहा है। फिर परेशान हुआ-सा बोला—"यह तुम क्या कह रही हो, गौरी?

"मैं कीमत माँग रही हूँ इन चित्रों की।"

"लेकिन मैं इतने रुपये नहीं दे सकता।"

गौरी के चेहरे पर फिर मुस्कान छा गई। वह धीरे से बोली—"मैं जानती थी कि आप इतना रुपया नहीं देना चाहेंगे। इस लिए आप के सामने दूसरी बात भी रख दी।"

दिनेश चुपचाप सुनता रहा। उस के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। गौरी कहती चली गई—"मुझ से शादी कर लीजिए। आशा तो आप के पास अब लौट कर आने से रही। मैं आप को उचित सलाह दे रही हूँ।

"तुम्हारी दोनों शर्तें मुझे नामंजूर है।"

दिनेश ने उद्विग्न होकर यह कहा तो गोरी धीरे से हँसी और कहने लगी "तो मैं कुछ नहीं मानती हूँ। आप एक भी शर्त न मानिये। मैं सब से पहले आप की माताजी को जा कर ये चित्र दिखाऊँगी। फिर दो-चार और प्रतिष्ठित लोगों के सामने बात रक्खूँगी। यह समाज खुद ही हम शादी के बंधन में बांध देगा।"

गोरी की बात सुन कर दिनेश विचार मग्न हो गया। उसे गोरी की सूरत से भी घृणा हो गई थी। काफी देर तक मनन करता रहा वह। फिर धीरे से बोला 'कुछ समझ में नहीं आता कि क्या करूँ? तुम ने तो मुझे अजीब उलझन में डाल दिया है।"

गोरी ने शान्त स्वर से उत्तर दिया। वह बोली—मैं आप को समय देती हूँ। आप विचार कर लीजिए।"

"अच्छा।"

दिनेश ने यह कहा। फिर कुछ सोचने लगा और कुछ देर बाद बोला—"मैं विचार कर लूँगा।"

"ठीक है, लेकिन एक बात समझ लीजिए।"

"क्या?"

दिनेश चाह रहा था कि वह जल्दी से जल्दी गोरी से दूर चला जाए। गोरी कहने लगी—'रात को दस बजे मैं होटल काश्मीर में इन्तजार करूँगी। अगर आप को मुझ से शादी करनी है, तो बता दीजिए आ कर, और यदि इन्कार है, तो पच्चीस हजार रुपये ले कर आइये। मैं आप को उसी

समय चित्र दे दूंगी। हाँ, एक बात और समझ लीजिए।"

"क्या ?"

"अगर आप ने चालाकी दिखाने की कोशिश की और ठीक दस बजे मेरे पास नहीं आये तो मैं सवेरा होते ही आप की कोठी पर आ कर आप की माताजी को सब बतला दूंगी।"

दिनेश ने जब गौरी की अंतिम बात सुनी, तो सन्नाटे में आ गया। वह धीरे से बोला—"तुम ने बहुत कम समय दिया है, गौरी! मैं कुछ और मौका सोचने के लिए चाहता हूँ।"

"मैं मजबूर हूँ।"

गौरी की बात सुन कर दिनेश ने उस की ओर देखा। उस के होंठों पर कुटिल मुस्कान थी। उसे गौरी पर बहुत क्रोध आ रहा था। वह अपना क्रोध दबा कर बोला—"मैं ने निर्णय कर लिया है कि मैं तुम से इस जिन्दगी में कभी शादी नहीं कर सकता।"

"तो कोई बात नहीं। आप रुपये ले कर आइयेगा। मुझे भी आप से ब्याह करने की कोई जिद नहीं है।"

गौरी उठ कर खड़ी हो गई थी। उस ने जाने का आयोजन किया। तभी दिनेश ने उसे टोका— सुनो, गौरी!

गौरी रुक गई।

"रुपये कुछ कम करो। मैं इतने अधिक नहीं दे सकता क्योंकि मेरी भी कुछ मजबूरियाँ हैं।"

गौरी कुटिलता पूर्वक बोली—"तो फिर मुझ से शादी कर लीजिए।"

"नहीं।"

दनेश की यह बात सुन कर गौरी झुंझला कर बोली—"बस, बहुत हो चुका । मैं पच्चीस हजार रुपये में एक भी नया पैसा कम नहीं करूंगी ।"

दिनेश का मन हुआ कि वह दोनों हाथों से आगे बढ़ कर गौरी का गला दबा दे । वह क्रोध में कांपता हुआ बोला—"तुम मुझे ब्लैक-मेल कर रही हो । शायद तुम्हारा रोजगार ही यही है कि नगर के युवक और युवतियों को अपने चक्कर में फंसा कर उन की जिन्दगी बरबाद कर दी ।"

गौरी मुस्कराती रही । उसे क्रोध नहीं आया । वह धीरे से बोली—"आप यही समझ लीजिए कि मैं गरीब हूं; इस लिये यह धंधा कर रखा है ।"

दिनेश को और भी क्रोध आ गया । वह तेज गले से बोला—"तुम ने आशा को भी खूब बेवकूफ बनाया । उस से काफी रकम ऐंठी । इस तरह से तुम्ही ने उस की जिन्दगी बिगाड़ी । पहले तो उसे आश्वासन दे कर उस का भेद छिपाया । फिर जैसे ही रकम मिलने में कमी हुई, उस को बदनाम कर दिया ।"

दिनेश की यह बात सुन कर गौरी हंस पड़ी और हंसते-हंसते बोली—"पति हो तो आपके जैसा । आशा बड़ी भाग्यवान थी । उस की इतनी बड़ी गलती होने पर भी आप को उस से घृणा नहीं हुई । धन्य है आप !"

"हां हां, मुझे आशा से घृणा नहीं हुई । मैं तुम से नफरत करता हूं । गौरी ! तुम बहुत नीच हो ।"

"कोई बात नहीं । क्रोध में मुंह से अपशब्द निकल ही

जाते हैं। समय का ध्यान रखना।'

यह कह कर गौरी चल दी।

दिनेश कुछ देर तक घृणा से गौरी को जाते देखता रहा। फिर जब वह उस को दृष्टि से ओझल हो गयी, तब उस ने कार स्टार्ट की और घर की ओर चल दिया।

जब दिनेश कोठी पहुँचा, तो वहाँ धूम मची हुई थी। राधा उस का इन्तजार कर रही थी।

कोठी सजी हुई थी। बाहर शहनाई बज रही थी। खूब चहल-पहल थी कोठियों में।

दिनेश जब हाल में पहुँचा तो राधा उस के पास आ गई। वह कह रही थी—"बड़ी देर कर दी बेटा! सब तैयारियाँ पूरी हैं।"

दिनेश को यह भीड़-भाड़ अच्छी नहीं लगी। उस का मस्तिष्क उलझा हुआ था। वह एकान्त चाहता था, जिस से बैठ कर कुछ देर गौरी वाली समस्या पर विचार कर सके।

तभी उसे सामने से भोला आता दिखाई दिया। वह बहुत प्रसन्न था। वह बोला—"बबुआ! बड़ी देर कर दी आप ने!"

दिनेश ने उसे कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह भीड़ को चीरता हुआ अपने कमरे की ओर चल दिया।

उस दिन रात को आशा सुरेश के ही घर में रही। वह उस जगह से चली जाना चाहती थी, लेकिन मोहन की ज़िद के आगे वह कुछ भी कह नहीं पाई।

सुबह जब वह सो कर उठी, तो उस का जी कुछ ठीक था। उस ने रात को कुछ खाया-पिया था और अब पूरी नींद मिलने से उस में कुछ प्रसन्नता आ गई थी।

आशा ने रात को सोचा था कि प्रातः शीघ्र ही वह वहां से चली जायेगी, जबकि मोहन और सुरेश उस समय सोते ही रहेंगे। लेकिन जागने में उसे देर हो गई। मोहन उस से पहले ही उठ चुका था।

सुरेन देहली में नौकरी करता था। यहीं उस का खुद का घर था। तभी वह अपने साथ मोहन को ले कर कानपुर छुट्टियां बिताने आया था।

नहा-धो कर सब ने नाश्ता किया। फिर मोहन ने आशा से प्रश्न कर दिया—"क्या मैं तुम्हें ले कर दिनेश के पास चलूं?"

आशा चौंक गई। वह बोली—"नहीं। अब मैं वहां कौन सा मुंह ले कर जाऊंगी।"

सुरेश को आशा की सूरत तक अच्छी नहीं लग रही थी। वह धीरे से बोला—'लेकिन जब हम लोग देहली चले जायगे, तो मोहन भाई, तुम्हारी यह बहन कहाँ रहेगी ?'

मोहन ने इस विषय में सोचा नहीं था। वह विचार-मग्न हो गया। कुछ देर बाद वह बोला—'जब तक हम यहाँ है, तब तक तो ठीक है। फिर मैं कोई रास्ता निकाल लूगा।

तीसरे पहर मोहन ने सुरेश को अपने साथ लिया और आशा से बोला- "चलो, थोडा घूम आएँ।"

तीनो टैक्सी में बैठ कर होटल काश्मीर आये। वे जा कर एक मेज पर बैठ गये। मोहन ने आर्डर दिया।

आशा को मालूम था कि गोरी इसी होटल में वेटर है। उस ने एक बार मोहन को वहां जाने के लिए मना भी किया, लेकिन उस ने इस से यही समझा कि आशा सकोच कर रही है। भीतर आते समय आशा ने अपनी साडी सिर से ओढ ली थी।

लेकिन गोरी की आंख इतनी तेज थी कि उस ने आशा को फौरन पहचान लिया और उस के साथ सुरेश को देखते ही उस के मुंह से चीख निकलते-निकलते रह गई।

बैरे ने आ कर मेज पर डबल रोटी लगा दी। आशा का जी घबड़ा रहा था कि गोरी उसे सुरेश के साथ देख कर क्या सोचेगी। कहीं वह पास आ कर उसे टोक न दे।

सुरेश और मोहन नाश्ता कर रहे थे, लेकिन आशा गुमसुम बैठी थी। उसे मोहन ने टोका—"उदास क्यों हो आशा, खाओ!"

"रहा तो रही हूँ ।"

यह कह कर आशा ने चाप का एक पीस उठा कर मुँह में डाल लिया ।

अभी आस्वादन समाप्त भी नहीं हो पाया था कि आशा के मस्तिष्क में एक विचार बिजली की भाँति कौंधा । वह उठ कर खड़ी हो गई; फिर धीरे से मोहन की ओर उन्मुख हो, कहने लगी—"मैं जरा यूरिनल तक जा रही हूँ ।"

मोहन पहले तो कुछ चौंका, लेकिन फिर कुछ नहीं बोला ।

आशा ने एक दृष्टि गोरी पर डाली । दोनों की आँखें चार हो गईं । आशा काँप गई । वह तेजी से मोहन की ओर मुड़ी, लेकिन उस के कदम अपने आप बाहर की ओर चल दिये । वह होटल से बाहर आ, सोचने लगी कि अब उसे किधर जाना चाहिए ।

कुछ सोच कर वह जल्दी-जल्दी सड़क पार करने लगी । वह डर रही थी कि कहीं मोहन आ कर उसे रोक न दे ।

अचानक सामने से एक साइकिल उस को छूती हुई निकल गई । आशा घबड़ा कर पीछे हटी । बाँयी ओर से एक कार आ रही थी । उस के चालक ने ब्रेक लगाया; लेकिन लाख कोशिश करने पर भी आशा कार के नीचे आ गई । वह एक चीख मार कर गिर पड़ी ।

सड़क पर शोर मच गया । चारों ओर भीड़ लग गई । कोई कुछ कहता, कोई कुछ ।

कार का चालक बुरी तरह घबड़ा गया था । उस की समझ

मे नहीं आ रहा था कि क्या करे। भीड़ के लोग उत्तेजित हो रहे थे।

आखिर वह नीचे उतरा। वह एक सम्भ्रान्त व्यक्ति था। उस ने धीरे से कहा—"मैं इसे अस्पताल ले जाऊँगा।"

भीड़ मे से कुछ लोग उसे बुरा-भला कहने लगे।

आशा का सिर फट गया था। उस से खून बह कर सड़क को गीला कर रहा था। ऐसा लगता था कि जैसे वह जीवित ही न हो।

चालक ने अन्य व्यक्तियों की सहायता से आशा को उठा कर कार की पिछली सीट पर लिटाया। फिर उसे ले कर अस्पताल की ओर चल दिया।

× × × ×

जब काफी देर हो गई और आशा लौट कर नहीं आयी, तो मोहन का माथा ठनका। वह सुरेश से बोला—"मेरा खयाल है कि आशा अब लौटकर नहीं आयेगी।"

सुरेश ने यह सुना तो शान्त स्वर मे कहने लगा—"मुझे तो बिलकुल आश्चर्य नहीं हुआ। जब वह गई, तभी मेरा मन कह रहा था कि वह लौट कर नहीं आयेगी।"

मोहन को सुरेश की बात अच्छी नही लगी। वह धीरे से चिन्ता प्रकट करता हुआ कहने लगा—"तो फिर तुम ने मुझे बताया क्यों नहीं? न जाने कहाँ गई होगी बेचारी! मुझे तो उस की हालत पर रोना आता है।"

सुरेश धीरे से हँसा और कहने लगा—"तुम किस की चिन्ता में पड़ गये हो, यार! जैसे आयी थी वह, वैसे ही चली गई।"

मोहन को सुरेश की बात सुन कर बहुत दुःख हुआ। वह सोच में पड़ गया। उस ने फिर सुरेश से कुछ नहीं कहा और उठ कर खड़ा हो गया।

गोरी ने आशा को बाहर जाते देखा था, लेकिन उस ने उसे टोका नहीं। बल्कि उसे प्रसन्नता हुई कि चलो यह बला तो टली।

गोरी ने जब मोहन और सुरेश को उठते देखा, तो काउण्टर से हट गई।

सुरेश और मोहन बिल चुका कर बाहर आये। मोहन ने आशा को ढूंढने का प्रस्ताव रखा तो वह बड़बड़ाने लगा—"कहाँ भटकोगे? वह अब मिलेगी नहीं। सीधे घर चलो।"

मोहन ने एक टैक्सी रोकी। दोनों उस पर बैठ कर चल दिये।

उन दोनों के पीछे ही गोरी तेजी के साथ होटल से बाहर आयी। उस ने भी टैक्सी रोकी और उस में बैठ, उन दोनों मित्रों का पीछा करने लगा।

मोहन की टैक्सी से कुछ ही दूरी पर गोरी उतर पड़ी। उस ने देखा कि मोहन और सुरेश उतर कर घर की सीढ़ियाँ चढ़ रहे हैं।

देर तक वह खड़ी देखती रही, फिर लौट आई होटल में। उस के मस्तिष्क में नये विचार जन्म ले रहे थे। उसे लगा कि सुरेश के आ जाने से अब कहानी एक नया मोड़ लेगी।

नये-नये विचारों से परेशान हुई-सी गौरी किसी तरह से पुनः जा कर दिनेश से मिली। फिर दस बजने की प्रतीक्षा करने लगी।

काउण्टर पर बैठे-बैठे गौरी ने रिस्टवाच पर दृष्टि डाली। दस बज कर दस मिनट हो रहे थे। उस के मन में एक शंका ने जन्म ले लिया कि शायद दिनेश अब नहीं आयेगा।

तभी अचानक गौरी की दृष्टि दिनेश पर पड़ी। वह होटल में प्रवेश कर रहा था। गौरी का चेहरा खिल उठा। वह तेजी के साथ उस की ओर चल दी।

दिनेश के चेहरे पर गम्भीरता थी। वह गौरी को देखते ही बोला—"कहिए।"

गौरी धीरे से बोली—"चलो, किसी केबिन में चल कर बैठें।"

दिनेश ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह चुपचाप उस के साथ चल दिया। उस के दाहिने हाथ में एक बैग था।

दोनों जा कर एक केबिन में बैठ गये। गौरी ने परदा खींच दिया। फिर बोली—"पूरे रुपये लाये हैं या नहीं?"

"मैं बीस हजार रुपये लाया हूँ।"

गौरी उठ कर खड़ी हो गई और चेहरा बिगाड़ कर बोली—"तो फिर क्यों आये हो यहाँ? मैं इतने में सौदा नहीं कर सकती।"

दिनेश ने जब यह स्थिति देखी, तो धीरे से बोला—"मेरे पास पूरे रुपये हैं।"

गौरी आ कर बैठ गई। फिर धीरे से बोली—"लाइये, मैं रुपये गिन लूँ।"

"लेकिन पहले मुझे वे फोटो चाहिए।"

"ओह! यह लीजिए।"

यह कह कर गौरी ने अपने पर्स से कागज का एक लिफाफा निकाल कर दिनेश की ओर बढ़ा दिया। उस ने एक हाथ से वह लिफाफा लिया और दूसरे से रुपयों का बैग ले लिया।

"गिन लीजिए, गौरी देवी! आज से मेरा और आप का कोई सम्बन्ध नहीं रहा।"

दिनेश ने जब यह कहा, तो गौरी ने बैग खोला। दिनेश ने भी लिफाफे से चित्र निकाल-निकाल कर अलग-अलग रख दिये और फिर उन में निगेटिव देखने लगा।

गौरी ने नोट गिने और बैग बन्द करती हुई बोली—"मेरे साथ आप कोई चालाकी तो नहीं खेल रहे हैं?"

दिनेश चौंका। उस ने चित्र लिफाफे में रख दिये। फिर वह धीरे से हँस कर कहने लगा—"अगर यही सवाल मैं तुम से करूँ, तो?"

गौरी ने सहज स्वर में जवाब दिया—"मेरी ओर से निश्चिन्त रहिये। लेकिन मुझे ताज्जुब हो रहा है कि आप सीधी तरह बात तो करते नहीं थे, फिर पूरे रुपये कैसे ले आये?"

यह कहते-कहते गौरी ने दिनेश पर एक शंका-पूर्ण दृष्टि डाली। फिर धीरे से कहने लगी—"आइये, नाश्ता तो कर लें।"

दिनेश ने उसे मना किया, लेकिन उस ने बैरे को आर्डर दे दिया।

दिनेश ने उस से व्यंग्यपूर्वक कहा—"कहीं फिर उस दिन वाली घटना न दोहरा देना।"

गौरी यह सुन कर हँसने लगी। वह प्रसन्नता से खिल रही थी। उस ने कहा—"आप तो मजाक करते है। मैं आप को एक मजेदार बात सुनाना चाहती हूँ।"

"क्या ?"

"आज आशा मेरे होटल मे आई थी।"

उस की यह बात सुन कर दिनेश को कुछ क्रोध आ गया। वह बोला—"तुम इस तरह की बातें मुझ से मत किया करो, गौरी!"

"क्यो ? उस के साथ उन का प्रेमी भी था। मैं ने उसे—।"

गौरी की बात सुन कर दिनेश उठ कर खड़ा हो गया। वह क्रोधपूर्ण स्वर मे बोला—"तुम मुझे आशा के खिलाफ भड़काना चाहती हो, लेकिन कान खोल कर सुन लो। वह तुम से कई गुना अच्छी है। तुम उस के पैरो की धूल भी नही हो।"

गौरी को यह उम्मीद नही थी कि दिनेश इतना बिगड़ जायेगा। वह उठ कर खड़ी हो गई और दिनेश का हाथ पकड़ उस को समझाने लगी—'तुम तो बुरा मान गये, दिनेश! मेरा कोई गलत मतलब नही था। मैं—।"

"चुप रहो! मैं तुम्हारी एक भी बात नही सुनना चाहता। तुम बहुत नीच हो।"

यह कह कर दिनेश ने एक झटका दे कर अपना हाथ छुड़ा लिया और लपकता हुआ केबिन से बाहर निकल गया। गौरी उसे रोकती ही रह गई।

× × × ×

आशा को जब होश आया, तो उस के नथुनों में डेटाल की गन्ध भर गई। वह उठने का प्रयत्न करने लगी।

एक नर्स दौड़ कर उस के पास आ गई और उसे रोकती हुई बोली—"उठिये मत! आप के शरीर से बहुत काफी खून निकल गया है।"

आशा लेटी रही। उसे कमजोरी महसूस हो रही थी। उस ने धीमे स्वर में पूछ लिया—"मैं कहाँ हूँ, नर्स! मुझे क्या हो गया था?"

"आप हास्पिटल में हैं। आप का एक कार से एक्सीडेण्ट हो गया था। चिन्ता करने की कोई बात नहीं। केवल सिर में चोट आई है।"

"ओह!"

आशा चिन्ता में डूब गई। उस ने कहा—"यह कौन-सा शहर है?"

"कानपुर।"

आशा बड़ी बेचैनी महसूस कर रही थी। उस के मुँह से परेशानी में डूबा स्वर निकला—"सिस्टर! मेरा सिर दर्द कर रहा है। मैं न जाने कैसा-कैसा महसूस कर रही हूँ। पानी तो देना।"

नर्स ने जब आशा को पानी माँगते देखा, तो वह बोली—"पानी आप को नुकसान करेगा।"

यह कह कर नर्स ने दूध मँगवाया। उस के साथ उसने उसे गोलियाँ खिलायीं। फिर एक इंजेक्शन लगा कर वह उस से बोली—"अब आप आराम करिये।"

आशा ने सोने की बहुत कोशिश की, लेकिन उसे नींद नहीं आयी। अंत मे सोचते-सोचते उस की आँख लग गई।

प्रातः जब वह सो कर उठी, तो खुद को काफी स्वस्थ अनुभव कर रही थी। वह नित्य-कर्म से निवृत हुई और फिर बिस्तर पर आ कर बैठ गई। नर्स ने आ कर उस के सिर की पट्टी बदली। फिर बोली—

"अब आप को तबियत कैसी है ?"

"पहले से काफी चुस्त हूँ। जी भी नहीं घबड़ाता है। सिस्टर ! मेरा एक काम कर दीजिए।"

"बोलिए-बोलिए !"

नर्स ने आशा को प्रोत्साहन दिया तो वह कहने लगी—"मेरे घर वालो को खबर कर दीजिए कि मैं हास्पिटल मे हूँ।"

यह कह कर आशा ने नर्स को अपना फोन नम्बर बतलाया। नर्स ने पूछा—"आप अपना और अपने पिता का नाम बताइये, तभी उन को मैं सारी बात समझा सकूँगी।"

आशा कुछ सोच मे पड गई। देर बाद उस के मुँह से निकला—"मेरा नाम सुमन है। मेरे पिता सेठ सीताराम हैं। घर गुवर्डी नम्बर पाँच पर है। आप जल्दी खबर कर दीजिए।"

नर्स चली गई। उस ने जा कर फोन कर दिया।

डाक्टर ने आ कर आशा का निरीक्षण किया। फिर उस की ओर घूरता हुआ बोला—"आप कैसा महसूस कर रही हैं ?"

"पहले से तबीयत ठीक है।" आशा ने जवाब दिया।

डाक्टर ने कहा—"मेरा मतलब यह नहीं था—।"

"ओह ! मुझे लग रहा है कि मैं सो कर उठी हूँ । मुझे यह नहीं मालूम कि कितने समय के बाद होश में आयी हूँ ।"

डाक्टर मुस्कराया और आशा की पीठ ठोक कर वहाँ से चला गया ।

कुछ देर बाद आशा के पास मिलनेवालों की भीड़ लग गई । उन में सेठ सोनाराम थे, उन की पत्नी थी और साथ में था उन का दस वर्षीय पुत्र ।

सेठ सोनाराम को देखते ही आशा रोने लगी । वह उठ कर बैठ गई । सोनाराम ने उसे गले से लगा लिया फिर रुंधे गले से बोले—"सुमन ! तू कहाँ चली गई थी बेटी ? हम ने तो तेरे आने की उम्मीद ही छोड़ दी थी । कहाँ रही तू इतने दिनों तक ?"

जब सेठजी ने आशा को छोड़ा, तो उन की पत्नी ने उसे गले से लगा लिया । आशा "माँ !" कह कर रो पड़ी ।

सेठजी का दस वर्षीय पुत्र भी पलंग पर बैठ गया । वह कह रहा था—"दीदी ! तुम कहाँ चली गई थी ? मुझे छोड़ कर क्यों गई थी ?"

आशा ने उसे गले से लगा लिया । फिर रोती हुई बोली—"क्या बताऊँ पप्पू ? मैं अब तुझे छोड़ कर कभी नहीं जाऊँगी ।"

यह कहते-कहते आशा रोने लगी ।

सेठ सोनाराम दूर खड़े, पुत्री का यह व्यापार देख रहे थे । उन्हें डाक्टर ने अपने पास बुलाया । फिर अलग ले जा

कर बोला—'यह आप की बेटी है न ? इस के बारे में मुझे बतलाइये।"

सेठ सीताराम ने एक लम्बी साँस ली और धीरे-धीरे कहने लगे—'मेरी सुमन ने एम ए प्रीवियस की परीक्षा दी थी। एक साल पहले वह अचानक एक दिन गृह घर से निकली। फिर लौट कर नहीं आयी। मैं ने अखबारों में विज्ञापन नहीं दिये, लेकिन उस की खोज जारी रखी। मेरा ख्याल था कि वह जिस छोटी-सी बात पर नाराज हो गई थी, उसे भूल कर घर चली आयेगी।"

"वह फिर लौटी आप के घर क्या ?"

डाक्टर के इस प्रश्न पर सीताराम कहने लगे—"नहीं! आज अचानक मुझे फोन मिला कि वह हास्पिटल में है। मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ। लेकिन जब यहाँ आ कर देखा, तो यह मौजूद थी।"

डाक्टर ने अब धीरे-धीरे कहना शुरू किया—' इस लड़की की याद चली गई थी और अब यह अपनी पुरानी दुनिया में लौट आयी है। लेकिन बीच में एक साल यह कहाँ रही, क्या करती रही, यह सब आप को नहीं बतला सकती।"

"हाँ डाक्टर साहब! मैं ने भी बहुत पूछा, लेकिन वह चुप रही। आइये! एक कठिनाई और कर।"

सेठ जी ने यह कहा और डाक्टर के साथ आशा के पास आये। वे उस से पूछने लगे—"बेटी सुमन! तुम अब तक कहाँ रही ?"

आशा ने अपने माथे पर हाथ रख लिया। फिर परेशान-सी हो कर बोली - 'मुझे कुछ भी याद नहीं आता, डैडी! ऐसा लगता है कि मैं सो कर उठी हूँ। ज्यादा सोचने की कोशिश करती हूँ, तो सिर में दर्द होने लगता है।"

आशा की बात सुन कर उस की माँ सन्नाटे में आ गई। वह करुण स्वर में कहने लगी—"इसे क्या हो गया था, डाक्टर?"

डाक्टर ने धीरे से उसे सारी परिस्थिति समझा दी। सुन कर वह विस्मित स्वर में कहने लगी—"जाने कहाँ रही इतने दिन? और इस की बात तो यह है कि कुछ बतला भी नहीं सकती।"

"सुमन को दोष मत दीजिए। वह निर्दोष है।"

डाक्टर ने जब यह कहा, तो आशा बोल उठी "मेरे लिए माँ क्या बातें कर रही है, मुझे भी तो बतलाइये डाक्टर साहब!'

अब डाक्टर आशा के पास आ गया। वह कह रहा था—"तुम्हारे पिता का कहना है कि तुम एक वर्ष के बाद उन से मिल रही हो। क्या यह सच है?"

आशा भौचक्की-सी हो कर बोली—'मैं कुछ भी नहीं जानती, डाक्टर साहब! मुझे नहीं लगता है कि एक साल के बाद मैं इन लोगों से मिली हूँ।"

सेठ सीताराम पुत्री के पास आ गये। वे धीरे-धीरे कहने लगे—"डाक्टर साहब! क्या हम सुमन को घर ले जा सकते हैं?"

डाक्टर ने स्वीकृति दे दी। फिर बोला—"आप इसे ले

जाइये। मैं आप की कोठी पर कर शाम को इसे देख जाऊंगा।"

सेठ सीताराम पुत्री को घर ले आये।

जब सध्या समय डाक्टर सेठ सीताराम की कोठी पर गया, तो उसे आशा पहले से स्वस्थ मिली। वह उस से कहने लगी—"आइये, डाक्टर साहब! अब तो मैं बिलकुल ठीक हूँ। यह सिर का जख्म बस—।"

"यह भी ठीक हो जायेगा, बेटी! तुम फिक्र क्या करती हो?"

तभी वहाँ सेठ सीताराम आ गये। वे बोले—"डाक्टर साहब! अब यह तो चल फिर भी सकती है न?"

"क्यों नहीं, लेकिन अभी इस के बदन में कमजोरी है।"

डाक्टर चला गया। सेठजी पुत्री के सिर पर हाथ फेरते हुए बोले—"बेटी! याद करने क कोशिश करो। धीरे-धीरे तुम्हें सब कुछ याद आ जायेगा।"

आशा ने उठने की कोशिश करते हुए कहा—"डैडी! मैं जब घर से चली, तो आप पर नाराज थी। मेस्टन रोड पर मेरी एक सहेली रहती है गौरी। मैं उसी के घर गई थी। फिर उस के बाद मुझे जब होश आया, तो अभी अस्पताल में थी।"

सेठ सीताराम पुत्री की बात सुन कर कुछ देर तक सोचने के बाद बोले—'मैं यही समझता हूँ बेटी कि तेरी उसी सहेली के घर चलने से पता लग सकता है कि असलियत क्या है।"

आशा ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह गहरे सोच में डूब गई।

× × × ×

चम्पा को राधा ने कई दिन की छुट्टी दे दी थी। वह शादी के दूसरे ही दिन भोला को अपने पास बुला कर बोली—"भोला! कुछ दिनों के लिए मैं तुझे भी छुट्टी देती हूँ। जा, खूब घूम-फिर आ इसे साथ ले जा कर।"

यह कह कर राधा ने भोला को रुपये दिये। फिर चम्पा से बोली—"चम्पा! मैं ने तेरे मन की कर दी! अब तू भोला को परेशान मत करना।"

चम्पा ने एक बार भोला की ओर देखा। फिर राधा से बोली—"इस को मैं तकलीफ देती ही कहाँ थी, जो यह मुझ से परेशान होगा।"

चम्पा और भोला स्टेशन आये। टिकट ले कर दोनों लखनऊ जाने वाली गाड़ी तलाश करने लगे। टिकट-घर के क्लर्क ने भोला से कहा था कि एक नम्बर प्लेटफार्म पर गाड़ी आयेगी।

लेकिन भोला को याद नहीं रहा। वह तीन नम्बर प्लेटफार्म पर चम्पा के साथ चला गया। देहली जाने वाला आगाम-मेल खड़ा था। वे दोनों जा कर उस में बैठ गये।

जब गाड़ी चल दी, तो चम्पा भोला से बोली—"देख! जरा तमीज से रहना! तू कभी-कभी बड़ी बेवकूफी का काम कर बैठता है।"

भोला अब चम्पा से डरता नहीं था। वह जोर से अकड़ता हुआ बोला—'चम्पा! तू बहुत बदतमीज है। यह भी नहीं देखती कि आस-पास शरीफ आदमी बैठे हैं। बस, लगी अपनी हाँकने।"

चम्पा को एकदम क्रोध आ गया। वह भोला की पीठ पर एक घूंसा जमाती हुई बोली—"आस-पास वाले शरीफ हैं तो क्या मैं बदमाश हूँ। मैं तेरी चटनी बना दूंगी अगर मुझे अलिफ से ये कहा।"

यह तीसरे दर्जे का डिब्बा था। इस में मध्यम श्रेणी के लोग बैठे थे। वे जब से चम्पा उस डिब्बे में चढ़ी थी, उसे देख-देख कर मुस्करा रहे थे क्यों कि उस का स्थूल और काला शरीर सौन्दर्य प्रसाधनों से सज रहा था।

जब चम्पा ने भोला की पीठ पर घूंसा मारा, तो वे सब लोग खिलखिला कर हँस पड़े। कुछ लोग मुँह छिपा कर हँस रहे थे।

चम्पा ने एक बार घूर कर चारों ओर देखा। उस का चेहरा क्रोध से लाल हो रहा था। सब लोगों की हँसी रुक गई। लेकिन एक बूढ़े ने चम्पा का रोब नहीं माना। वह हो-हो करता हुआ हँसता ही रहा।

चम्पा उठ कर खड़ी हो गई और उस ने बूढ़े के पास जा, उस की गरदन पकड़, उसे उठा कर खड़ा कर दिया। फिर उस के गाल पर एक थप्पड़ मारती हुई बोली—"अरे बूढ़े! मेरा मजाक उड़ाता है।"

बूढ़े की बोलती बन्द हो गई। वह सन्नाटे में आ गया।

तभी उस का जवान लड़का भोला के पास आ कर खड़ा हो गया। वह कह रहा था—"ऐ मिस्टर! अपनी बीवी को रोको। मैं औरत समझ कर कुछ नहीं बोला, वर्ना—।"

भोला उठ कर खड़ा हो गया। अभी उस बूढ़े के लड़के की बात पूरी भी नहीं हो पायी थी कि चम्पा ने बूढ़े को छोड़ दिया

सारे डिब्बे मे शोर मच रहा था। चार-पांच दल बन गये थे । उन म आपस मे सघर्ष हो रहा था। चम्पा का बुरा हाल था। वह जिधर जाती, लोग उसे वहाँ नही रुकने देते ।

तभी किसी ने जजीर खीच दी। गाडी रुक गई।

लेकिन झगडे मे कोई अन्तर नही पडा। वह पूर्ववत् जारी रहा ।

डिब्बे मे गार्ड, टी टी आई. तथा कुछ कानिस्टेबिलो ने प्रवेश किया। उन्हो ने भीड पर डण्डे चलाना शुरु कर दिया।

कुछ ही देर मे झगडा समाप्त हो गया। पुलिस ने काबू पा लिया।

चम्पा का सारा शरीर दर्द कर रहा था।

तभी गार्ड ने टी टी. आई. से सब के टिकट देखने के लिए कहा।

हैड कानिस्टेबिल ने पूछा—"झगडा किस ने शुरु किया था?"

सभी यात्रियो ने चम्पा और भोला की ओर उँगली उठा दी।

चीफ ने उन दोनो को अलग बुलाया। फिर भोला से बोला—"जानते हो, तुम न कितना बडा अपराध किया है? इस जुर्म मे तुम जेल भी जा सकते हो।"

भोला से पहले चम्पा बोली—"उस से क्या पूछते हो, साहब! यह तो वास्तव मे भोला है। इन सब लोगो ने मिल कर हम दोनो की खूब पिटाई की है।"

"तुम चुप रहो।'

चीफ ने चम्पा को डाँट दिया। तभी टी. टी. आई. ने उस से टिकट माँगा। वह टिकट देती हुई बोली —'लो टिकट ! हमें चोर-उचक्का समझते हो क्या ? मैं हमेशा टिकट ले कर चलती हूँ।"

टी. टी. ने जब उन टिकटों को देखा तो बोला—"कहाँ जा रही हो तुम ?"

"लखनऊ।"

'लेकिन लखनऊ इधर कहाँ है। यह गाड़ी तो देहली जा रही है।"

चम्पा तेज गती से बोली—जाओ-जाओ ! मुझे बेवकूफ न बनाओ। झगड़ा हो गया है, इसीलिए हमें गाड़ी से उतार देना चाहते हो ?"

टी. टी. ने कानिस्टेब्रिलों से कहा—"इस के साथ के आदमी पर नजर रखना। बिना टिकट चलने के जुर्म में दोनों जेल जायेंगे।"

चम्पा के होश उड़ गये। देर बाद उस के मुँह से निकला—"भोला ! अब क्या होगा ?"

गाड़ी चल रही थी। जब अगले स्टेशन पर रुकी, तो चम्पा चीफ से बोली—"मैं बहुत बड़े घर की नौकरानी हूँ। आप खबर भेज दीजिए ! वे हमारी जमानत कर लेंगे।"

यह सुन कर भोला की जान में जान आयी।

× × × ×

दिनेश से रुपये ले जा कर गोरी ने माँ को दिये। फिर उस से कहने लगी—"माँ ! सुरेश इसी शहर में है। अपने घर में।"

"क्या कहा ?"

वृद्धा चौंक गई। तभी गौरी फिर कहने लगी —"माँ ! बच्चे के लिए खर्च तो करना ही पड़ता है। मैं सोचती हूँ कि सुरेश से शादी कर लूं।"

"हाँ बेटी ! तू कल उस के पास जाना। यदि वह न माने, तो फिर मैं पुलिस ले कर जाऊँगी उस के पास। उसे तुझ से शादी करनी ही पड़ेगी।"

गौरी जब दूसरे दिन सुरेश के घर पहुँची, तो दरवाजे में ताला बन्द था। वह चौंक गई और सोचने लगी कि शायद सुरेश देहली चला गया।

वृद्धा को जब इस बात का पता चला, तो वह हाथ मल कर रह गई।

रात को फिर गौरी ने सुरेश के घर का चक्कर लगाया। बिजली की रोशनी देख कर गौरी को प्रसन्नता हुई। उस ने घर जा कर माँ से कहा—"सुरेश कहीं गया नहीं है, माँ ! मैं सुबह उस को बुलाने जाऊँगी।"

प्रातःकाल जब गौरी सुरेश के घर पहुँची, तो मोहन ने आ कर दरवाजा खोला। गौरी से उस ने प्रश्न किया— "किसे पूछ रही हैं आप ?"

"सुरेशबाबू हैं ?"

"हाँ, अन्दर आ जाइये।"

गौरी को भीतर आ कर बैठने में झिझक हुई। वह सोच रही थी कि आशा उसे देख कर क्या सोचेगी। लेकिन जब देर तक उस के सामने आशा नहीं आई तो उसे कुछ निश्चिन्तता हुई।

गौरी को देखते ही सुरेश चौंक गया। वह पीछे घूम कर बाहर जाने लगा।

गौरी कमरे में एक सोफे पर बैठी थी। उस ने जब सुरेश को बाहर जाते देखा, तो लपक कर उस का हाथ पकड़ती हुई बोली—"अब कहाँ छिपे ? बड़े दगाबाज हो तुम! मुझे छोड़ कर चले गये थे और अब फिर मेरी नजरों से बचना चाहते हो।"

सुरेश के मुँह से एक भी शब्द नहीं निकला। गौरी धीरे-धीरे रोने लगी। वह कह रही थी—"मैं अब तुम्हें यहाँ से जाने नहीं दूँगी। चलो, घर चलो। माँ ने बुलाया है तुम्हें। मेरे साथ शादी करोगे या नहीं ?"

मोहन ने जब यह स्थिति देखी, तो सन्नाटे में आ गया। वह चुपचाप खड़ा रहा, दोनों की गति-विधि निहारता रहा।

सुरेश के मुँह से धीरे-धीरे शब्द निकले—"जो बात गुजर गई, गौरी! उस के लिए सोच मत करो। मैं तुम्हें रुपये दे सकता हूँ। मैं—।"

"तो तुम मुझ से शादी नहीं करना चाहते हो ?"

गौरी ने तेज स्वर में यह कहा तो सुरेश बोला—"शादी में क्या रक्खा है। जो सुन—।"

गौरी की माँ ने किसी तरह सेठजी से बैठने के लिए कहा। आशा भी आ कर एक सोफे पर बैठ गई। गौरी की माँ के सारे बदन से पसीना छूट रहा था।

सेठजी ने उस से सवाल कर दिया—"एक साल पहले मेरी बेटी तुम्हारे घर आयी थी। कल वह मेरे पास पहुँची। इस बीच में वह कहाँ रही ?"

गौरी की माँ ने जवाब दिया—"मैं नहीं जानती तुम्हारी बेटी को। क्या कह रहे हैं आप ?"

"मैं सच कह रहा हूँ।"

सेठजी ने जोर से यह कहा तो सुरेश धीरे से उन्हें समझाता हुआ बोला—"सेठजी ! मेरी भी बात सुन लीजिए। इस लड़की को मैं ने गंगा में बहती हुई पाया था। दो दिन तक मेरे घर में रही यह। फिर एक दिन तीसरे पहर कहीं चली गई।"

सेठजी चौंक कर सुरेश की ओर देखने लगे। तब तक मोहन ने जितनी भी बात आशा के मुँह से सुनी थी, वे सब बता दी। फिर बोला—"आप की बेटी सुरेश से कह रही थी कि वह उस से शादी कर ले। वह उस के बच्चे की माँ है। इस लड़की का ब्याह भी हो चुका है। मैं इस के पति का पता आप को बतलाता हूँ।"

सेठजी ने गौरी की माँ की ओर देखा। फिर धमकी-भरे स्वर में बोले—"मुझे सारी बातों का पता चल गया। तुम अगर अपनी खैर चाहती हो, तो मुझे सारा हाल बतला दो

और क्षमा माँग लो, वर्ना मैं तुम्हारे खिलाफ पुलिस में धोखा-दिही की रिपोर्ट लिखवाऊँगा।"

गौरी की माँ पसीने-पसीने हो रही थी। गौरी भी शोर-गुल सुन कर वहाँ आ गई। आशा ने जब उसे देखा, तो दौड़ कर उस को गले से लगाती हुई बोली—"गौरी! बता दे कि साल भर से कहाँ रही और—?"

गौरी की समझ में आशा का व्यवहार और बात-चीत नहीं आयी। वह भौचक्की-सी खड़ी रही।

तभी दिनेश ने परदा उठा कर उस कमरे में प्रवेश किया। वह देर से परदे के पीछे खड़ा, सब की बातें सुन रहा था। वह भीतर आते ही गौरी से कहने लगा—"गौरी! यह सब क्या चक्कर है? आशा को तुम ने किस मुसीबत में डाल रखा है? मैं तुम से कुछ बातें करना चाहता हूँ।"

गौरी ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। मोहन दिनेश की ओर इंगित कर के सेठजी से कहने लगा—"यही इस लड़की का पति है।"

तब दिनेश गौरी से कह रहा था—"परसों रात को जो तुम मुझ से पचीस हजार रुपये लाया हो, वे मुझे वापस कर दो। वर्ना मेरे पास उन नोटों के नम्बर नोट हैं। मैं तुम्हारे खिलाफ पुलिस-थाने में रिपोर्ट लिखवाऊँगा कि तुम ने चोरी की है। मैं ने सोचा कि तुमसे पहले पूछ लूँ; फिर रिपोर्ट लिखवाने के लिए थाने जाऊँ।"

गौरी के सारे बदन में बुखार-सा चढ़ आया। वह धीरे-

धीरे मरी हुई आवाज मे बोली—"मैं आप के रुपये वापस कर दूंगी, दिनेश बाबू ! आशा को देखिये—क्या हो गया है ?"

दिनेश को गोरी की बात सुन कर आशा का खयाल आया। तभी सेठजी ने उसे टोक दिया—"दिनेश बाबू ! क्या आप ने इस लड़की से शादी की है ? मैं इस का बाप हूँ।"

दिनेश की समझ में सेठजी की बातें नहीं आयीं। एक बार उस ने आशा की ओर देखा। फिर जल्दी-जल्दी कहने लगा—"जब आशा ने मुझ से शादी की थी, तब वह शायद यहीं रहती थी। लेकिन उसने मुझ से बताया था कि वह अनाथ है। फिर आप—।"

"यह मेरी बेटी है। एक साल पहले गोरी के घर आयी थी। फिर उस के बाद परसों मुझे अस्पताल से फोन मिला कि सुमन यहाँ है। डाक्टर ने बतलाया कि परसों ही इस को याद वापस आयी है। यह खुद नहीं जानती कि—।"

सेठजी ने बात पूरी नहीं की। दिनेश ने आशा के दोनों कन्धे पकड़ कर हिलाये और उस से पूछने लगा—"मुझे पहचानती हो, आशा ?"

लेकिन आशा एकटक उस की ओर देख रही थी। उस ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। दिनेश अब सेठजी की ओर उन्मुख हुआ। वह गोरी से बोला—"आशा का बच्चा कहाँ है ? उसे यह जरूर पहचानेगी ?"

"क्या इस के बच्चा भी है ?"

मोहन भी गौरी के ही पक्ष में बोल रहा रहा था। सुरेश ने अन्त में हार मान ली। उस ने धीरे-धीरे कहना प्रारम्भ किया—"माँजी ! मैं ने गलती की थी। मैं गौरी को धोखा देना चाहता था, लेकिन अब मैं उसे स्वीकार कर लूँगा।"

सभी के चेहरे खिल उठे। गौरी ने दीवाल-घड़ी की ओर दृष्टि डाली। सात बज रहे थे। वह जा कर नाश्ते की तयारी करने लगी।

अचानक प्रवेश-द्वार पर पड़ा हुआ परदा उठा कर सेठ सीताराम ने आशा के साथ वहाँ प्रवेश किया।

गौरी की माँ सेठजी को नहीं पहचानती थी। लेकिन आशा के साथ उन्हें देख कर उस की रूह काँप गई। उस ने अनिष्ट की आशंका से दोनों नेत्र बन्द कर लिये।

सुरेश ने जब आशा को देखा, तो चौंक कर उस से प्रश्न कर दिया—"आशा ! तुम कहाँ चली गई थी ? मोहन ने तुम्हें बहुत ढूंढा, लेकिन तुम्हारा पता ही नहीं चला। मैं—।"

आशा के सिर पर पट्टी बँधी थी। वह बाप के कन्धे का सहारा लिए खड़ी थी। उसने सुरेश की बात सुनी तो सरल स्वर में कहने लगी—"मेरा नाम आशा नहीं, सुमन है। मैं आप को नहीं पहचानती ! क्या कह रहे हैं आप ?"

सुरेश और मोहन दोनों सन्नाटे में आ गये। उन को समझ में कुछ भी नहीं आया। तब तक आशा गौरी की माँ से कहने लगी—"चाची जी ! गौरी कहाँ है ? बहुत दिनों से उस से मिली नहीं हूँ। मेरे डैडी आप से कुछ बात करने आये हैं।"

रही थी—"दिनेश!"

फिर वह उस से अलग हो गई और सेठजी के पास जा कर सकोच भरे स्वर मे बोली—"डैडी! ये मेरे पति हैं।"

सेठजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। तभी गौरी की माँ फिर कहने लगी—"जब आशा होश मे आयी, तो इस ने किसी को नही पहचाना। डाक्टर ने बताया कि इस की याद चली गई है। मेरी गौरी से शादी का वादा कर के वही सुरेश देहली चला गया था। वह माँ बन चुकी थी। मैंने सुमन से कहा कि तुम मेरी बेटी आशा हो और सुरेश के पुत्र की तुम माँ हो।"

गौरी ने धीरे से कहा—"हमारी जीवन नगरी हो गई थी, सुमन! माफ कर दो!"

आशा ने गौरी को गले लगा लिया। फिर सेठजी से बोली—"डैडी! अब मुझे सब याद आ गया! गौरी के बच्चे के कारण मैं ने कितनी जलालत बर्दाश्त की!"

"हाँ बेटी! तुझे बहुत कष्ट मिला। जब तू ने शादी की, तो गौरी ने खूब राग ली तुझ मे बच्चे को पालने के लिए। बच्चे के ही कारण दिनेश की माँ ने तुझे घर से निकाला। मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ, बेटी! मुझे माफ कर दे।"

गौरी की माँ ने जब यह कहा, तभी गौरी पचीस हजार के नोटों का बंडल ला कर दिनेश को देती हुई बोली—"यह लीजिए अपनी अमानत! बहुत कष्ट मिला आप को भी। मुझे माफ कर दीजिए!"

आशा ने आगे बढ कर बैग ले लिया। फिर उसे गौरी की माँ को देती हुई बोली—"पहले चाहे जो किया हो गौरी ने, आखिर वह मेरी सहेली है। ये रुपये उस की शादी की भेंट के रूप में मैं आप को देती हूँ।"

गौरी आशा के गले से लग गई। उस की आँखों से पश्चाताप के आँसू बह रहे थे। सेठजी पुत्री की पीठ ठोकने लगे और दिनेश को भी आशा पर गर्व हो आया।